ग्रामीण पाठकों के लिए

कल भी सूरज नहीं चढ़ेगा

सुरजीत सिंह सेठी

संक्षिप्तीकरण

कुलवीर सिंह कांग

अनुवाद

जसवंत सिंह विरदी

चित्रांकन

इमरोज़

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-3445-X

पहला संस्करण : 2001 (*शक 1922*)

Kal Ve Suraj Nahin Charega (*Hindi*)
रु. 17.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क,
नयी दिल्ली - 110016 द्वारा प्रकाशित ।

समर्पण

पंडित जवाहरलाल नेहरू को, जिन्होंने 13 अप्रैल, 1919 को हुए जलियाँवाला बाग की ख़ूनी घटना में अंग्रेजी हुकूमत का तख्ता पलटने के लिए उकसाया और देश की तकदीर बदलने के लिए हर कुर्बानी देने के लिए प्रेरित किया।

धन्यवाद

उन बुजुर्गों का मैं किस तरह धन्यवाद करूं जिनकी यादों का सहारा लेकर मैंने 13 अप्रैल, 1919 के अमृतसर की सिर्फ दो घंटों की ज़िंदगी को फिर से पुनर्जीवित किया है।

सुरजीत सिंह सेठी

राम बाग, अमृतसर। नया मिलिटरी हेडक्वार्टर। बहुत बड़ा कैंप। कैंप में केवल मैं और जनरल डायर। शाम चार बजे का समय। डायर कुछ सोच रहा है। और मैं... मैं भी सोच रहा हूँ। डायर थका हुआ है। सुबह से उसने एक पल भी आराम नहीं किया है। और मैं... मैं भी थक चुका हूँ। जहाँ-जहाँ डायर गया है, वहाँ-वहाँ मैं भी उसके साथ ही था, साये की तरह। नहीं, साये से भी बढ़कर। साया भी कभी-कभी साथ छोड़ जाता है, परंतु मैं तो एक क्षण के लिए भी उससे अलग नहीं हुआ।

डायर को विश्वास है कि वह कैंप में अकेला है। उसे तनिक भी अहसास हो कि कैंप में कोई और भी है तो वह इस तरह की हरकतें नहीं करता। वह अपनी हरकतें करता जा रहा है। उसकी घबराहट, उसकी बेचैनी स्पष्ट दिखाई पड़ रही है। मैं उसके सामने बैठा सभी कुछ देख रहा हूँ। देख-देखकर हैरान हो रहा हूँ। न जाने डायर को आज क्या हो गया है!

दाईं ओर वर्ष 1919 का कैलेंडर टंगा हुआ है। यकायक डायर कैलेंडर की ओर देखता है। फिर उठकर कैलेंडर के पास जाता है और जेब में से लाल पेंसिल निकालकर 13 अप्रैल पर निशान लगाता है।

कुछ ही घंटों पहले ढोल पीटा जा रहा था और यह सूचना दी जा रही थी –

"सूचित किया जाता है कि कोई भी व्यक्ति किसी प्राइवेट कार, किराए के वाहन में या पैदल, बिना आज्ञा के शहर छोड़कर नहीं जा सकता। आज्ञा-पत्र इन अधिकारियों से लिया जा सकता है –

(अधिकारियों के नाम...)

"अमृतसर शहर में रहने वाले किसी व्यक्ति को आठ बजे रात के बाद घर से बाहर जाने की आज्ञा नहीं।

"रात आठ बजे के बाद जो भी व्यक्ति गली में नजर आया उसे गोली से उड़ा दिया जाएगा।

"शहर में, शहर के किसी हिस्से में, या शहर से बाहर भी किसी तरह का जुलूस निकालने की आज्ञा नहीं है ।

"कोई भी इस तरह का जुलूस या चार व्यक्तियों का एकत्रित होना गैर कानूनी समझा जाएगा । उस एकत्र हुए लोगों को तितर-बितर करने के लिए आवश्यकता पड़ने पर हथियारों का प्रयोग किया जा सकता है ।"

शहर में पूर्ण हड़ताल थी । गाँवों के लोग बैसाखी का मेला देखने के लिए शहर की ओर आ रहे थे । बेचारे ग्रामीण हैरान थे कि आज शहर में कोई हलवाई जलेबियाँ नहीं बना रहा था, कोई पकौड़े नहीं तल रहा था, चने नहीं बिक रहे थे, खोमचे वाले आवाज नहीं दे रहे थे, शहर में खामोशी क्यों छाई हुई है !

एक तरफ से आवाज आ रही थी — "जलियाँवाला बाग में आज शाम साढ़े चार बजे एक मीटिंग हो रही है । लाला कन्हैया लाल वकील मीटिंग का नेतृत्व करेंगे ।"

डायर ने यह सूचना कई बार सुनी परंतु उसने किसी और के साथ इस बारे में कोई बात न की । दो-तीन बार मैंने उसे बुदबुदाते हुए सुना — "साढ़े चार बजे ।"

मैं भी हैरान था और डायर भी, कि उनके ऐलान के समय तो एकाध ही व्यक्ति नजर आता था परंतु जब उस छोटे-से लड़के का टीन बजता था तो बाजार लोगों से भर जाता था । न जाने ये लोग यकायक कहाँ से आ जाते थे और ऐलान सुनकर फिर कहाँ छिप जाते थे !

परंतु जब से चार बजे थे, उसकी बेचैनी बढ़ती जा रही है । मुझे ऐसा लगता है जैसे उसे कुछ हो गया हो । चार बजने के बाद सिर्फ दो मिनट ही बीते हैं, परंतु इन दो मिनटों में वह कुछ ऐसी हरकतें कर चुका है जो कोई साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता ।

सुपरिंटेंडेंट पुलिस रीहिल कैंप में आता है । वह बताता है कि साढ़े चार बजे की मीटिंग के लिए काफी आदमी जलियाँवाला बाग में एकत्र हो चुके हैं ।

यह सुनकर पहले तो डायर एकदम उदास हो जाता है और फिर मुस्कराता है। साढ़े चार बजे। मीटिंग। हँसता है। खुलकर हँसता है। बिना कुछ बोले खामोशी से कैलेंडर की ओर देखता है। 13 अप्रैल। लाल रंग की पेंसिल का निशान। प्रश्नवाचक दृष्टि से रीहिल की ओर देखता है। वह फिर मीटिंग वाली बात दुहराता है।

मैं देख रहा हूँ। डायर की हरकतों पर निरंतर नज़र रखे हुए हूँ। कैंप में फिर डायर अकेला है। मैं तो न होने के समान हूँ। वह मेरे बारे में कुछ नहीं जानता। वह गंभीर हो जाता है, फिर हँसने लगता है, फिर सोचने लगता है। फिर गुस्से में आ जाता है। मैं देख रहा हूँ और बस, देखता ही जा रहा हूँ।

फिर लैविस आता है। क्राउन सिनेमा का मैनेजर। वह भी वही कुछ बताता है जो रीहिल बताकर गया है। जलियाँवाला बाग। मीटिंग। साढ़े चार बजे। लोग इकट्ठा हो रहे हैं, हजारों की संख्या में। डायर सुनता है। सोचता है। मुस्कराता है। बाएँ हाथ पर दाएँ हाथ से घूँसा मारता है।

लैविस भी कैंप से बाहर आ गया है— डायर के पीछे-पीछे। वह बता रहा है कि वह एक हिंदुस्तानी का रूप धरकर यहाँ तक पहुँचा है, केवल यह बताने के लिए कि मीटिंग हो रही है। डायर बेचैन है। वह कुछ सोच रहा है और मन ही मन कुछ निर्णय ले रहा है।

मैं सोच रहा हूँ कि वह मुझे साथ ले जाएगा या नहीं। अवश्य ले जाएगा। वह क्या ले जाएगा, मैं स्वयं जाऊँगा। वह मुझको छोड़कर कैसे जा सकता है, कहीं पर भी ! परंतु वह अकेला क्यों जाना चाहता है ? कंपनी कमांडरों को क्यों नहीं ले जा रहा ? उसके चेहरे पर घबराहट के चिह्न स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं, फिर भी वह अपने आत्म विश्वास की धौंस दिखा रहा है। वह स्वयं को धोखा दे रहा है। चलो, कोई बात नहीं ! इसी में वह संतुष्ट है। सदा ऐसा ही होता है।

डायर आज फैसला करना चाहता है। अंतिम फैसला। उसे मालूम है कि उसके पास थोड़े सैनिक हैं। यह भी उसे ज्ञात है कि विद्रोह भयानक

रूप ले रहा है । यह विद्रोह अंग्रेज़ी शासन के लिए घातक सिद्ध होगा । वह अंग्रेज़ है । अंग्रेज़ों के हित की बात ही वह सोचेगा । हिंदुस्तानी विद्रोही हैं, अंग्रेज़ी शासन के दुश्मन । दस अप्रैल की घटनाएं अभी ताज़ा हैं । इन घटनाओं ने अंग्रेज़ी शासन को चोट पहुँचाई है । हिंदुस्तानियों के हौसले बुलंद हैं । उनके मुँह को खून लग गया है । खून का स्वाद अब उन्होंने चख लिया है । ओ...ओ हो ...डायर तो गुस्से से काँप रहा है । उन्हें कोई सज़ा नहीं मिली । सज़ा उन्हें अवश्य मिलनी चाहिए ।

अंग्रेज़ी सेना चार सौ सात । हिंदुस्तानी सात सौ उन्तालीस । तीन सौ निन्यानवे अंग्रेज़ और तीन सौ बयासी हिंदुस्तानी अलग-अलग ड्यूटी पर तैनात हैं । स्टेशन पिकटों पर । पुल की रक्षा के लिए । तरनतारन, गोबिंदगढ़, छावनी, धारीवाल, अटारी । गाड़ियों के लिए रेल-लाइनों की मरम्मत । कोतवाली । हेडक्वार्टर ।

डायर का आदेश । दो सौ सैनिक तैयार । कप्तान ब्रिग्ज़ तैयार । डायर उठता है और कैंप से बाहर चला जाता है ।

एक मिलिटरी कार में डायर और कप्तान ब्रिग्ज़ । उनके पीछे हथियारों और बारूद से भरी दो कारें और उनके पीछे पुलिस कार । पुलिस कार में रीहिल और पलोमर । आगे-पीछे फौजी सिपाही ।

मैं कहाँ हूँ ? डायर के साथ । मैं उसको कहाँ छोड़ता हूँ । उसके साथ ही रहता हूँ । परछाईं की तरह ।

मैंने देखा है कि गोबिंदगढ़ में अमृतसर के सभी अंग्रेज़ों के परिवार कैदियों की तरह बंद हैं । स्त्रियाँ, बच्चे, नौकर आदि सभी एक ही हाल कमरे में उठते-बैठते और सोते हैं । न नहाने के लिए कोई स्थान है और न कुछ खाने-पीने के लिए । न बिजली-पानी का कोई प्रबंध है । ऐशो-आराम का जीवन व्यतीत करते इन लोगों को यह दिन भी देखने थे !

किले के अंदर और बाहर हिंदुस्तानी सैनिकों का पहरा है, नौजवान सिपाहियों का । अच्छे डील-डौल वाले खूबसूरत सिपाहियों का । वे पहरा दे रहे हैं । पूरी तन्मयता से । वे नहीं चाहते कि कोई भी इन स्त्रियों

और बच्चों पर हमला करे। वैसे वे निश्चित हैं कि हिंदुस्तानी कोई ऐसी हरकत कर ही नहीं सकते। हिंदुस्तानी केवल युद्ध क्षेत्र में लड़ना जानते हैं। छिप-छिपकर औरतों या बच्चों को मारना तो उन्होंने सीखा ही नहीं। फिर भी वे सावधान हैं। हर प्रकार की स्थिति से निपटने के लिए तैयार।

सुबह होने पर वे हिंदुस्तानी सिपाहियों को सामने देखती हैं। दिन भर हिंदुस्तानी सिपाही उनके सामने हैं। शाम को भी वही दिखाई देते हैं। रात को भी जब उनकी आँखें खुलें, बाहर देखने पर सिपाही ही सिपाही नजर आते हैं। सिपाही जवान हैं, ऊँचे-लंबे हैं, सुंदर हैं, परंतु हिंदुस्तानी हैं। हिंदुस्तानी उनके दुश्मन हैं। परंतु वे सोचती हैं कि दुश्मन कैसे हैं!

कत्ल होते रहें, हमले होते रहें, लूट-मार होती रहे, आग लगती रहे, किले के अंदर इसका कुछ भी असर नहीं पड़ता। अंग्रेज़ औरतें हँस रही हैं। डर में भी एक आनंद महसूस कर रही हैं।

इरविंग इस समय वहाँ क्या करने गया है? उसे वहाँ क्या ज़रूरी काम हो सकता है? वह भाँप गया है कि डायर के साथ रहना खतरनाक है। और वह अपनी जान बचाने के लिए भाग खड़ा हुआ है। नहीं, वह श्रीमती स्मिथ के साथ रोमांस करने गया है।

डायर की कार बहुत धीमी रफ्तार से चल रही है। सारा काफिला ही धीरे-धीरे चल रहा है। डायर ने नक्शा देखकर दूरी का अनुमान लगा लिया है कि वह इस रफ्तार से ठीक समय पर अपनी मंज़िल पर पहुँच जाएगा।

एक ग्रामीण सिक्ख डायर की कार के समीप आता है। डायर डर जाता है और सावधान होकर उस व्यक्ति से पूछता है कि वह क्या कर रहा है।

"मैं सड़क पार कर रहा हूँ।" वह सरदार जवाब देता है।

डायर उसको भाग जाने के लिए कहता है और क़ाफ़िला आगे बढ़ने लगता है।

जनरल डायर

डायर अब सिक्खों के बारे में सोच रहा है। उसे मालूम है कि सिक्ख बहुत बहादुर और निडर होते हैं। ये अपनी जान की परवाह किए बिना अपने धर्म और देश के लिए हँसते-हँसते मर जाते हैं। इनसे टकराना आसान बात नहीं है। उसने सिक्खों का इतिहास पढ़ रखा है। उसे मालूम है कि ये जंगलों में रहते हैं। फल-फूल खाकर जीवन निर्वाह करते हैं। बड़ी से बड़ी मुसीबत सह लेते हैं परंतु अपने आत्म-सम्मान पर आँच नहीं आने देते। उसे गुरु गोबिंद सिंह के बारे में भी ज्ञान है, जिसने अपना सारा वंश कुर्बान कर दिया। उसने महाराज रणजीत सिंह और हरि सिंह नलवा की बहादुरी की दास्तान सुन रखी है। अपने फौजी नौकरी के लंबे समय के दौरान उसका सामना सिक्खों से बहुत बार हुआ है। इसलिए वह उनके स्वभाव को जानता है, उनकी प्रत्येक रीति, उनकी बहादुरी, उनके सम्मान का ज्ञान है। यह भी वह जानता है कि अंग्रेज़ों से सबसे अधिक घृणा ये सिक्ख ही करते हैं। इनको गुलामी से सख्त नफ़रत है।

डायर जानता है कि जब से युद्ध समाप्त हुआ है सिक्खों में ही नहीं, सभी हिंदुस्तानियों में निराशा फैली हुई है। कीमतें घटने की बजाय बढ़ गई हैं। लोगों को आशा थी कि युद्ध खत्म होते ही कीमतें कम हो जाएंगी। परंतु ऐसा हुआ नहीं। जो सैनिक फ्रांस, इटली, इंग्लैंड आदि देश देख आए हैं, अपने हालात की वहाँ के हालात से तुलना करके देखते हैं तो उन्हें बहुत निराशा होती है।

एलायंस बैंक के मैनेजर जी. एम. थामसन का कत्ल। किसका हाथ है इस कत्ल में ? एक सिक्ख का। डायर को उसका नाम भी मालूम है — बचन सिंह। यदि वह क्लर्क उसको कहीं दिखाई दे जाए तो वह उसके सम्पूर्ण खानदान को बाजार में खड़ा करके गोली से उड़ा दे। परंतु बचन सिंह को अमृतसर की पुलिस अभी तक नहीं ढूंढ़ सकी। कितनी निकम्मी पुलिस है यहाँ की। "बचन सिंह, बचन सिंह" डायर दो बार यह नाम लेता है।

थामसन अपने कमरे में बैठा था जब हिंदुस्तानियों की एक क्रुद्ध भीड़ ने बैंक पर हमला कर दिया। हमला करने वाले बीस-पच्चीस

व्यक्ति थे । उन्होंने लेजर (हिसाब-किताब की किताबें) के टुकड़े-टुकड़े कर दिए । कागजों में आग लगा दी । क्लर्क दौड़े । थामसन अपने कमरे में से बाहर निकला । उसने अपने बचाव के लिए पिस्तौल निकाला और गोली चलाता हुआ छत के ऊपरी भाग पर चला गया । भीड़ ने उसका पीछा किया । उसका पिस्तौल खाली हो चुका था । भीड़ में से एक व्यक्ति ने थामसन के सिर पर डंडे से चोट की । बचन सिंह, थामसन के बैंक का एक क्लर्क, आगे बढ़ा और उसने घायल थामसन को उठाकर नीचे सड़क पर फेंक दिया । फिर बचन सिंह और अन्य लोग भागकर नीचे सड़क पर आए और थामसन की लाश पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा दी । आग में हिसाब-किताब की किताबें और अन्य कागज भी फेंक दिए । इस तरह आग काफी देर तक जलती रही । अशरफ़ ख़ान की भेजी हुई पुलिस देर से पहुँची । तब तक सभी लोग बिखर चुके थे । थामसन की लाश पहचानी नहीं जा रही थी ।

थामसन के स्थान पर कोई और अंग्रेज़ अफसर भी इस तरह मारा जाता तो डायर को अफसोस होना ही था । मगर थामसन तो उसका दोस्त था, बहुत गहरा दोस्त । बेचारे को बहुत निर्दयता से मारा गया है । बचन सिंह के साथ कई अन्य लोग भी थे थामसन को मारने वाले । परंतु डायर का विचार है कि असली कातिल बचन सिंह ही है । बाकी तो सिर्फ तमाशा देखने वाले ही थे । थामसन का यदि कोई दुश्मन था तो सिर्फ बचन सिंह ही । इसीलिए डायर गुस्से से बचन सिंह का नाम ले रहा है ।

मैं एकटक डायर की ओर देख रहा हूँ । वह बहुत गुस्से में है । रास्ते से आने-जाने वाले लोग भी उसकी तरफ देख रहे थे । सभी उसको इस तरह घूर-घूरकर देख रहे हैं जैसे उसे जानते हों, उसकी सभी हरकतों को जानते हों ।

डायर कल ऐसे ही कह रहा था कि सिक्खों की आदतें बच्चों जैसी हैं । ज़िंदगी और मृत्यु में कोई अंतर नहीं समझते । इस समय सड़क पर चलने वालों में अधिकतर सिक्ख और बच्चे ही हैं । सिक्ख और बच्चे । बच्चे और सिक्ख ।

एक कश्मीरी किसी का सामान उठाकर जा रहा है। बेचारे को आज भी सामान उठाना पड़ रहा है। आज तो छुट्टी है, सभी की छुट्टी है। परंतु उसको छुट्टी नहीं है। बेचारा सुबह से यही काम कर रहा होगा। रात तक काम करके बड़ी कठिनाई से रोटी खाने के लिए पैसे इकट्ठा करेगा।

मैं सोचता हूँ, इस कश्मीरी हातो को कोई अनुमान नहीं कि शाम को जलियाँवाला बाग में कोई मीटिंग हो रही है। इसको मालूम ही नहीं कि मीटिंग क्या होती है। वह तो यह भी नहीं जानता कि वहाँ पर लोग इकट्ठे हो रहे हैं। बेचारा यह भी नहीं जानता होगा कि वह भी अन्य हिंदुस्तानियों की तरह गुलाम है। इसे क्या मालूम कि आज़ादी किसे कहते हैं। यह तो बस जिंदा है, भार उठाकर, मज़दूरी करके।

यह बेचारा कश्मीरी हातो इंसान नहीं, कोल्हू का बैल है, कोई भार उठाने वाला गधा है। कितना मजबूर है, कितना विवश है, कितना सीधा है और कितना निश्छल है !

और एक कश्मीरी डॉक्टर किचलू है। कश्मीरी मुसलमान। इसने सारे शहर को अपने पीछे लगाया हुआ है। एक आफ़त का नाम है डॉ. किचलू। कितना भारी व्यक्तित्व है। ऐसा लगता है जैसे पैंतीस साल का यह नौजवान सम्पूर्ण अमृतसर शहर वासियों के दिलों का बादशाह हो। कितना प्रभावपूर्ण भाषण देता है ! इरविंग की तो बात छोड़ो, गवर्नर जनरल उडवायर भी उसका नाम सुनकर काँपता है। कहता है — मैं इन अंग्रेज़ों को हिंदुस्तान से निकालकर दम लूँगा।

और उसका सहयोगी डॉ. सतपाल भी कम आफ़त नहीं है। इंडियन मेडिकल सर्विस में लेफ्टीनेंट रह चुका है और अब अमृतसर शहर के लोग इनके नाम के दीवाने हैं। 30 मार्च और 6 अप्रैल की हड़ताल करवाने वाले ये दोनों बागी ही तो हैं।

इन दोनों विद्रोहियों को 10 अप्रैल की सुबह इरविंग ने गिरफ्तार करके धर्मशाला पहुँचा दिया। इरविंग और अन्य अफसरों ने तो समझा होगा कि इन दोनों को बाहर भेजकर वे शहर में शांति स्थापित कर लेंगे। परंतु अब शांति कहाँ ! शांति कभी ऐसे भी रह सकती है ! केवल किचलू
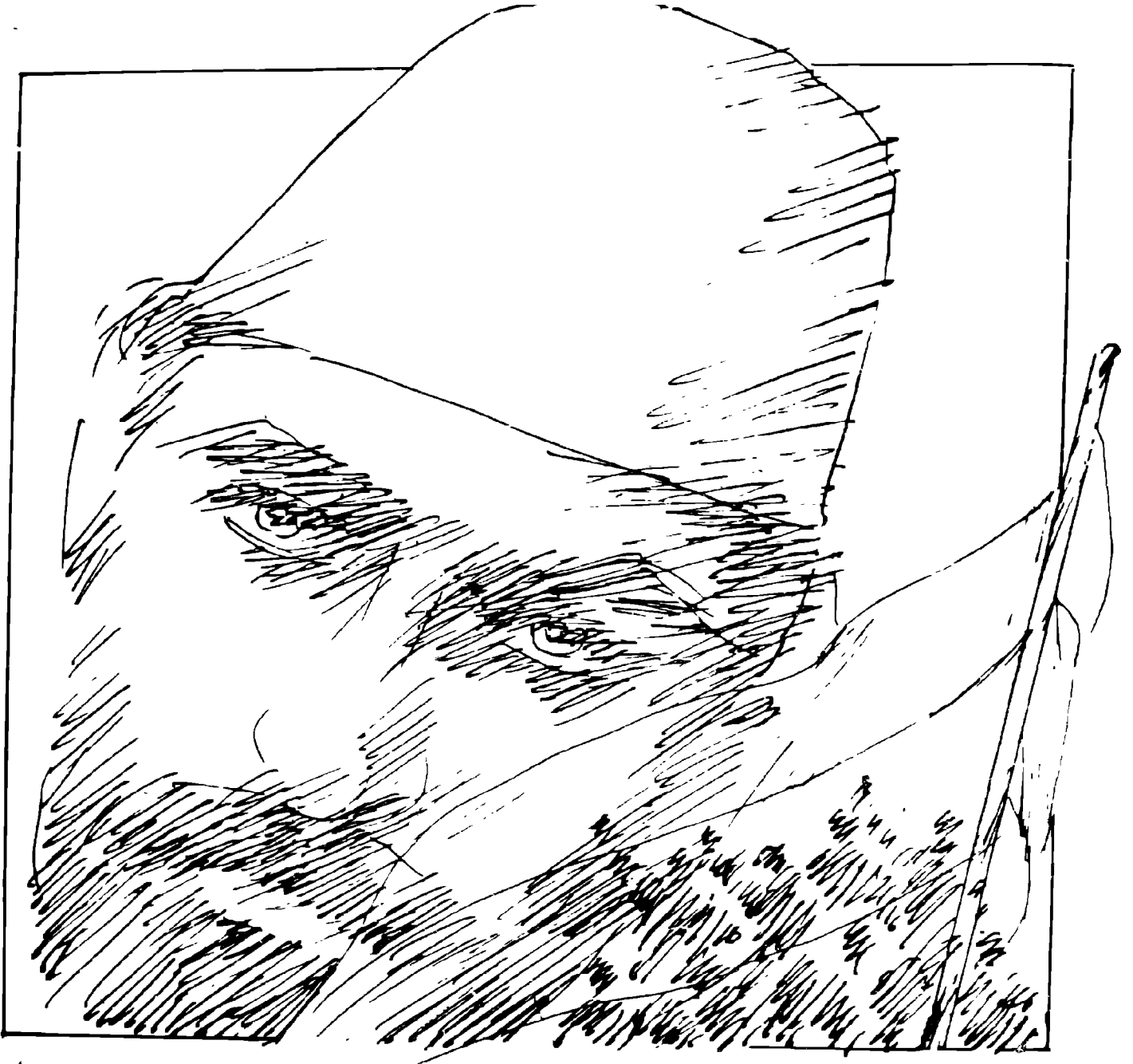
डा. सैफुद्दीन किचलू

और सतपाल ही नहीं, उनके साथी भी तो यहीं हैं जो शहर की शांति भंग करने के लिए पर्याप्त हैं ।

डायर इस समय अवश्य किचलू के बारे में ही सोच रहा है । उसने भी अभी-अभी यहाँ से जाते हुए हातो को देखा है और हातो को देखकर उसे किचलू अवश्य याद आया होगा । किचलू का चेहरा इस समय डायर के सामने है । कश्मीरी मुसलमान किचलू । मुसलमानों से डायर यूं भी डरता है । सिक्खों के बाद यदि वह किसी से डरता है तो मुसलमानों से । फौज का उसका अनुभव भी यही कहता है । यदि कहीं सिक्ख और मुस्लिम सिपाही इकट्ठे बैठे हों तो समझो कि कुछ होने वाला है । इसीलिए दूसरे अंग्रेज़ अफसरों की तरह उसकी भी यह कोशिश होती थी कि इन दोनों कौमों में संपर्क कभी न बन सके । ये सदा परस्पर लड़ते रहें और एक-दूसरे के खून के प्यासे रहें । इसी में अंग्रेज़ी शासन का भला है ।

डायर बुदबुदा रहा है — किचलू, किचलू । कितने ही किचलू । वह इशारा करके बता रहा है कि उसे अनगिनत किचलू दिखाई दे रहे हैं । परंतु जिस दिशा में वह इशारा कर रहा है उधर तो एक-दो ही हैं । और कुछ भी नहीं । वहाँ कोई किचलू नहीं है । कोई हातो नहीं है । डायर का भ्रम है । वैसे डायर एक बहादुर, निडर और निर्दयी व्यक्ति समझा जाता है, परंतु आज वह अपने काल्पनिक भय से ग्रस्त है । हर राहगीर उसे किचलू दिखाई दे रहा है ।

अब दो पहलवानों जैसे व्यक्ति उसे दिखाई पड़ते हैं — उन्होंने कुरते और तहमद (बड़ी धोती) पहनी हुई हैं । ये कौन हैं ? उसे वे हू-ब-हू बग्गा और रत्तू जैसे लगते हैं जिनके बारे में कल इरविंग ने बताया था । बग्गा और रत्तू । इन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर नेशनल बैंक पर हमला किया था । बेचारे स्टीयूर्ट और स्कॉट को मारकर इमारत में आग लगा दी थी । वे बेचारे इमारत के साथ ही जल गए थे ।

ये दोनों जो सामने दिखाई दे रहे हैं, यही उन्हें मारने वाले थे । ये दोनों । इनके साथ और भी थे — अब्दुल मजीद और राय राम सिंह । ये हिंदू, मुसलमान और सिक्ख मिल गए थे । इन्होंने मिलकर यह काम किया था । ये सामने से आ रहे दो पहलवान थे — बग्गा और रत्तू । ये किधर आ रहे हैं ? ये क्यों आ रहे हैं ? ये आजाद कैसे घूम रहे हैं ? इन्हें किसी ने गिरफ्तार नहीं किया ?

हिंदुस्तानियों के शत्रु भी हिंदुस्तानी ही हैं । हिंदुस्तानी को हिंदुस्तानी ही मार सकता है । डायर का विचार है कि सदा हिंदुस्तानी के हाथों ही हिंदुस्तानी को मरवाना चाहिए । इसी में बुद्धिमानी है । यही दूरदृष्टि है । यही राजनीति है । और अब इसके आगे-आगे चल रहे हिंदुस्तानी सिपाही उनको रत्तू और बग्गा दिखाई देते हैं । सफेद कुर्ते और तहमद वाले । कुछ देर पहले बग्गा और रत्तू लगने वाले व्यक्ति न जाने कहाँ अदृश्य हो गए हैं । उन्होंने सिपाहियों की वर्दी पहन ली है और सिपाहियों में ही मिल गए हैं । सभी सिपाही रत्तू और बग्गा बन गए हैं । सिपाही मार्च कर रहे हैं ।

यह कौन है ? सफेद कपड़ों में एक व्यक्ति । बैंड-मास्टर जैसा लगने वाला । कौन है ? केवल मैं ही नहीं, उसकी ओर डायर भी एकटक देख रहा है । बहुत कम हिंदुस्तानियों को मैंने इस तरह के सफेद कपड़ों में देखा है । यह हिंदुस्तानी है ? हाँ, हिंदुस्तानी ही है । यह बैंड-मास्टर लगता है । जैसे अभी-अभी बैंड बजाने की ड्यूटी निभाकर आ रहा हो । यह भी शायद जलियाँवाला बाग जाएगा । ऐसा प्रतीत होता है कि दिखाई देने वाले सभी लोग जलियाँवाला बाग जाने वाले ही हैं । मेरी दृष्टि कुछ देर तक उस बैंड-मास्टर जैसे व्यक्ति पर टिकी रही और फिर किसी और पर जा अटकी । एक लंबी, सफेद दाढ़ी वाले बूढ़े पर । परंतु डायर लगातार उस व्यक्ति को ही देखे जा रहा है । शायद उसको यह लग रहा है कि सफेद कपड़ों में यह राबिंसन है । रेलवे गार्ड राबिंसन । परंतु वह कैसे हो सकता है ? उसको तो हिंदुस्तानियों ने मार दिया है । बेचारा राबिंसन । और डायर की आँखें गुस्से से लाल हो जाती हैं । राबिंसन की मौत, गुण्डागर्दी, सफेद वस्त्र, रेलवे गार्ड । राबिंसन अंग्रेज़ था । उसे मौत के घाट उतार दिया गया । इन हिंदुस्तानियों ने उसे मार दिया । राबिंसन मर गया है । हिंदुस्तानी जीवित हैं । ये भी मर जाएंगे । मार दिए जाएंगे । राबिंसन का बदला लिया जाएगा । वह बुदबुदाता जा रहा है : राबिंसन के कातिल मार दिए जाएंगे । कातिल हैं कहाँ ? कहाँ छिप गए हैं ? जलियाँवाला बाग ।

डायर कल्पना कर रहा है कि लोग इकट्ठा हो रहे होंगे । विद्रोहियों की भीड़ बाढ़ की तरह जलियाँवाला बाग की ओर बढ़ रही होगी । आज एक राबिंसन नहीं, अनेक राबिंसन का बदला लेने का अवसर है । अनेक राबिंसन, जो इन हिंदुस्तानियों ने कत्ल किए हैं ।

उसे अपने इर्द-गिर्द की कोई ख़बर नहीं रहती थी । और अब श्रीमती राबिंसन प्रसन्नता के गीतों के स्थान पर विरह की आहें भर रही होंगी । उसके गीत उससे छीन लिए गए हैं । उसकी हँसती-खेलती ज़िंदगी उससे छीन ली गई है । बेचारा राबिंसन ।

फिर अचानक उसे अपने परिवार की याद आ जाती है । अमृतसर आने से पहले उसने अपनी पत्नी से कहा था : "मैं एक बेहद कठिन कार्य करने जा रहा हूँ — तुम घबराना नहीं, क्योंकि मैं जानता हूँ कि कठिन कार्यों के बाद ही जीवन सुखमय बनता है । तू भी एक बहादुर जनरल की पत्नी है । प्रत्येक कठिनाई को बहादुरी से सहन करना ही वास्तविक जीवन है । अच्छा, तो मैं जाता हूँ ।"

और उसने अपने पुत्र से कहा था : "बहुत बड़ा तूफान आ रहा है । जालंधर में भी अमृतसर के समान ही खतरा है । रात्रि में तुम अपनी माँ के समीप ही बरामदे के पास इस पेड़ के नीचे सो जाना । दोनों द्वारों पर हिंदुस्तानी सिपाहियों का पहरा होगा ।"

मैं भलीभाँति यह जानकारी रखता हूँ कि इस मियां जैसे और भी कई लोग हैं जो भीतर ही भीतर अपना काम कर रहे हैं । कल रात जब मैं और डायर अकेले सैर कर रहे थे तो मैं अपने समीप ही किसी की साँस चलने की आवाज़ सुन रहा था । मुझे विश्वास है कि कोई हमारा पीछा कर रहा था परंतु मैंने डायर को कुछ नहीं बताया । उसको तब बताया जाता यदि किसी के हमला करने की आशंका होती । मैंने तुरंत यह अनुमान लगा लिया था कि पीछा करने वाला केवल हमारी बातें सुन रहा था । उसके पास कोई हथियार नहीं था । साँसों की आवाज सुनने के बाद मेरी आँखों ने उसे ढूँढ़ भी लिया था । वह कोई चोर या डाकू नहीं था बल्कि इस मियां जैसा कोई ईमानदार व्यक्ति प्रतीत होता था । वह केवल हमारी बातें सुनने के लिए, हमारी हरकतें देखने के लिए हमारा पीछा कर रहा था, परंतु हमने बहुत समय तक कोई बात ही न की । यदि कुछ बात की भी तो उससे इन हिंदुस्तानियों की किसी समस्या का कोई संबंध नहीं था ।

ब्रिग्ज़ अपनी ही मस्ती में था । उसे कुछ होश नहीं कि डायर का ध्यान किधर है । इस बात में उसकी कोई रुचि भी नहीं । बस, वह यही जानता है कि डायर किसी खतरनाक इरादे से जलियाँवाला बाग की ओर

जा रहा है। और इस बारे में वह किसी का परामर्श लेने को भी तैयार नहीं। चलते समय ब्रिग्ज़ यह तो चाहता था कि डायर को अपने विचारों से परिचित करवाए और उसके खतरनाक इरादों के बारे में कुछ जाने। परंतु वह अपनी इस चाह को दबा गया। अब वह इस विषय में कोई बात नहीं करना चाहता। परंतु वह किस विचार में गुम है ? क्यों है ? संभवतः वह भी यही सोच रहा हो कि डायर के खतरनाक इरादों का परिणाम क्या होगा। परिणाम बहुत भयानक होगा। उसका मत है कि हिंदुस्तानियों को जुल्म करके दबाना बहुत भयानक भूल होगी। आग और भी भड़क उठेगी। यह अंग्रेज़ी शासन के लिए हितकारी नहीं होगा। परंतु डायर को कोई कैसे समझाए ?

कॉलेज जाने वाले तीन-चार लड़के उधर से गुज़रते हैं। वे डायर को सलाम करते हैं। और वह अनुमान लगाता है कि ये खालसा कॉलेज के लड़के हैं। इनके प्रिंसिपल वादन से कल डायर मिला था। वादन बहुत सुलझा हुआ अंग्रेज़ है। उसने पिछले कुछ दिनों से अपने लड़कों को यह काम सौंप रखा है कि वे बड़े शहर में घूम-फिरकर लोगों को समझाएं। उन्हें किसी तरह की शरारत न करने दें। कल सारा दिन भी खालसा कॉलेज के लड़के अपनी ड्यूटी निभाते रहे हैं और आज भी सुबह से यही कर रहे हैं।

वादन अपने लड़कों की वफादारी का डायर को विश्वास दिलाकर आराम से घर पर सो रहा होगा और उसके लड़के शहर में कुछ और ही काम कर रहे हैं। यह न डायर जानता है, न यहाँ की पुलिस और न कोई अन्य अंग्रेज़ अफसर। लड़कों के लिए यह सुनहरा अवसर है और वे इस अवसर का भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

मुझे विश्वास है बैंकों की लूट-मार में, राबिंसन के कत्ल में और अन्य घटनाओं में खालसा कॉलेज के लड़कों का ही हाथ है। वे ही ऐसा जुल्म कर सकते हैं। साधारण व्यक्ति इतनी हिम्मत नहीं कर सकता। परंतु डायर इसी बात से संतुष्ट है कि प्रिंसिपल वादन ने उसे विश्वास

दिला रखा है । इसमें वादन का भी क्या दोष ? शायद वह अपने लड़कों की व्यस्तता के बारे में जानता ही न हो । बेचारा सरल व्यक्ति । वह तो इस समय भी इसी बात से संतुष्ट होगा कि लड़के होस्टलों में अपनी पढ़ाई में मग्न होंगे । परंतु होस्टलों में शायद ही कोई लड़का हो । सभी होस्टल इस समय खाली हैं । कॉलेज सूना पड़ा है । नौकर, रसोइया, चौकीदार, प्रोफेसर, क्लर्क सभी गायब हैं । वहाँ तो बस वादन है और कॉलेज की इमारत ।

परंतु यह तो डायर की मूर्खता है अगर वह सोचता है कि वादन के कहने पर लड़के उसका साथ देंगे, हिंदुस्तानियों के साथ गद्दारी करेंगे । ये ऐसा करने वाले नहीं । ये हिंदुस्तानी हैं और सदा हिंदुस्तानियों का ही साथ देंगे । वह इनको देखकर प्रसन्न हो रहा है । केवल इनके सलाम करने से ही खुश हो गया है । इसका अर्थ है कि ये लड़के डायर से अधिक चतुर हैं ।

डायर को अहमद खाँ और अशरफ खाँ दोनों के प्रति बहुत गुस्सा है । इन हिंदुस्तानी पुलिस अफसरों ने समय पर अपनी ड्यूटी ठीक से नहीं निभाई । डायर के विचार में ये विद्रोही हैं । इन्होंने योजनापूर्ण ढंग से बैंकों को नष्ट करवाया है, थामसन, स्टीयूर्ट और स्कॉट को मरवाया है । कोतवाली में इतनी पुलिस थी, तब भी यह घृणित कार्य संभव हो पाया है । यह सब अहमद खाँ और अशरफ खाँ की वजह से हुआ है । मन ही मन डायर यह निर्णय कर चुका है कि इन पुलिस अफसरों को वह सख्त सज़ा देगा ।

10 अप्रैल को जो भी हुआ, वह भी मुझे ज्ञात है । उसमें भी ईसडन का ही दोष था । महिलाओं के अस्पताल के पास ही डॉ. केदारनाथ का घर है । रेलवे लाइन के पास गोली चलने से जो हिंदुस्तानी ज़ख्मी हुए थे, वे डॉ. केदारनाथ के घर ले जाए गए । ईसडन अस्पताल की छत पर खड़ी घायलों को देख रही थी । उसके मुँह से निकला – "इन हिंदुओं और मुसलमानों के साथ अच्छा हुआ । इनके साथ ऐसा ही होना चाहिए था ।"

कुमारी शेरवुड के साथ जो बीती, वह भी मैं जानता हूँ । वह अच्छी लड़की है । चर्च ऑफ इंग्लैंड की स्त्री मिशनरी संस्था की ओर से मिशनरी बनकर आई है । वह एक तंग गली में साइकिल चलाती हुई जा रही थी । किसी ने उसकी ओर इशारा करके कहा, "वह देखो, अंग्रेज़ लड़की ।" कुमारी शेरवुड ने समझा कि वे लोग उसका मज़ाक उड़ा रहे हैं । वह बोली : "यू स्वाईंज़ !" इतना सुनते ही लड़के ताव खा गए और उन्होंने कुमारी शेरवुड को साइकिल से उतार लिया और दो-तीन चपत लगा दी । इन लड़कों में एक सुंदर सिंह नाम का शरीफ लड़का था । वह कहने लगा, "नहीं, नहीं, औरत पर हाथ नहीं उठाना चाहिए । यह हमारे धर्म के विरुद्ध है ।"

उसके साथियों ने सुंदर सिंह की बात मान ली और वे कुमारी शेरवुड को छोड़कर चले गए । परंतु वह तो डर से ही बेहोश हो गई थी । कुछ समय बाद एक हिंदू दुकानदार ने उसे देखा, उस पर पानी के छींटे दिए और उसे होश में लाया ।

डायर सहित सभी अंग्रेज़ कहते हैं कि हिंदुस्तानी बहुत चतुर हैं, धोखेबाज़ हैं । इन बेचारों ने क्या धोखा किया है ? मैंने 10 अप्रैल की सभी घटनाओं के बारे में सुना है, अलग-अलग लोगों से सुना है । डायर का विचार उनके बारे में कुछ और है और मेरा कुछ और ।

10 अप्रैल 1919 । सुबह दस बजे का समय । किचलू और सतपाल रेलवे लाइन पार करके डिप्टी कमिश्नर के बंगले पर पहुँचे । उनके साथ उनके कुछ साथी भी थे । दोनों को बंगले में जाने दिया गया । बंगले में इरविंग, कप्तान मैसी और पुलिस विभाग के कुछ कर्मचारी पहले ही बैठे थे । इरविंग ने आदेश पढ़कर सुनाया । बंगले के पीछे रीहिल अपनी कार में बैठा प्रतीक्षा कर रहा था । उसके साथ ही एक ट्रक भी खड़ा था जिसमें अनेक फौजी थे । पलक झपकते ही किचलू और सतपाल को ट्रक में बिठाया गया और ट्रक धर्मशाला के लिए चल पड़ा । किचलू और सतपाल के साथियों को पुलिस ने कुछ देर तक इरविंग के बंगले पर ही रोक रखा । ग्यारह बजे के बाद उन्हें छोड़ दिया गया ।

"हमें यहाँ क्यों रोक रखा है ?"

"इस तरह छल से डॉ. किचलू और डॉ. सतपाल को बाहर भेजा ।"

"उनको छोड़ो, नहीं तो हम शोर मचाएंगे ।"

"ऐसा शासन अधिक दिन तक नहीं चलेगा ।"

"शीघ्र बताओ, किचलू कहाँ हैं ?"

"हमें भी किचलू और सतपाल के पास भेजो ।"

"तुम हमारी सहनशक्ति की परीक्षा ले रहे हो ।"

"हम जितने अच्छे हैं उतने ही बुरे भी हो सकते हैं ।"

"ठीक है, यदि तुम लोग इन चालों पर उतर आए हो तो हम भी अब अपना ढंग बदल लेंगे ।"

"तुमने यह छल क्यों किया ?"

"अच्छा, तो ऐसा ही सही ।"

फिर उसी दिन साढ़े ग्यारह बजे पलोमर भागा-भागा आया । उसने बताया कि एचीसन पार्क में एक भारी भीड़ इकट्ठी हो रही है । एचीसन पार्क रेलवे स्टेशन के दक्षिण में है । पलोमर ने यह भी बताया कि लोगों का उद्देश्य रेलवे लाइन पार करना है ।

रेलवे लाइन पार करने का इरादा । इरविंग को यह इरादा खतरे से खाली नहीं लगा । वह डर गया परंतु फिर भी उसने स्वयं को सँभालने की चेष्टा की । सबसे पहले उसने पलोमर को कप्तान मैसी के पास भेजा, उसे खबरदार करने के लिए । और स्वयं शीघ्रता से टेलीफोन उठाया । उसने कर्नल स्मिथ से बात करनी चाही परंतु फोन खराब होने के कारण या लाइन कट जाने के कारण वह बात न कर सका ।

उसकी घबराहट और भी बढ़ गई । फोन खराब है ? नहीं, किसी ने तार काट दी है । यह और भी गंभीर बात है ।

वह सोच रहा था और शीघ्र ही कोई और कदम उठाना चाहता था । वह बाहर की ओर जाने लगा । वह और कुछ नहीं कर सकता था । वह हर हालत में कर्नल साहब से मिलना चाहता था ।

डॉ. किचलू और सतपाल को गिरफ्तार करके धर्मशाला भेजने की

बात सारे शहर में जंगल की आग की तरह फैल चुकी थी ।

"सुना है डॉ. किचलू और डॉ. सतपाल को इन अंग्रेज़ों ने कहीं बाहर भेज दिया है ।"

"यह बहुत बड़ा षड्यंत्र है ।"

"संभव है, दोनों को अब तक कत्ल कर दिया गया होगा ।"

"अब बदला लेने के लिए तैयार हो जाओ ।"

"अंग्रेज़ी शासन की ईंट-से-ईंट बजा दो ।"

"यदि किचलू और सतपाल को मार दिया गया तो एक हिंदुस्तानी के बदले में सौ अंग्रेज़ मारेंगे ।"

डॉ. सतपाल

"अब शहीद होने का समय आ गया है ।"

"देश रूपी शमा पर जल मरने का समय आ गया है ।"

"हम अपनी जान भी न्योछावर कर देंगे ।"

दुकानें बंद हो रही थीं । आतंक का वातावरण था । पहले एक बाज़ार में, फिर दूसरे बाज़ार में, काम-काज बंद हो रहा था । सभी दुकानदार एक-दूसरे को कह रहे थे, "जल्दी से दुकान बंद कर दो, बहुत खतरा है ।"

सूरज अपने शिखर पर है । खामोश निगाहें एक-दूसरे को कुछ कह रही हैं । जैसे प्रत्येक आँख में एक आग जल रही हो । प्रत्येक चेहरे पर एक गुस्सा, एक उत्साह दिखाई दे रहा था । सभी यही बातें कर रहे थे ।

"हम इस डिप्टी कमिश्नर को पाठ पढ़ा देंगे ।"

"उत्तर देना होगा उसको ।"

"जाएगा कहाँ ?"

नगर-निगम इंजीनियर जारमैन भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा । वह जल्दी से आगे बढ़ रहा था और लोगों की बातें भी सुनता जा रहा था । बातें सुनकर उसे डर भी लग रहा था । उत्साहित लोग उसे पकड़कर उसकी जान भी ले सकते थे । इसीलिए वह जल्द से जल्द घर पहुँचना चाहता था ।

लोगों के हाथों में लाठियाँ थीं । ये लाठियाँ वे गुस्से से सड़क पर पटक रहे थे । उनका यह व्यवहार बता रहा था कि आज वे इन लाठियों से ही शहर के सभी अंग्रेज़ों को मार डालेंगे । परंतु वे भले लोग यह नहीं जानते थे कि उनकी टक्कर गाँव के किसी विरोधी दल से नहीं, अंग्रेज़ों से है जो लाठियों से खत्म नहीं होंगे । उनके पास बंदूकें हैं, मशीन गनें हैं । बड़ी हिम्मत जुटाकर बैकट आगे बढ़ा और उसने लोगों को कहा कि वे आगे न बढ़ें । बैकट की बात किसी ने न सुनी, बल्कि इस तरह की आवाजें उभरीं –

"यह कौन है हमें रोकने वाला ?"

"हम इसे क्या समझते हैं।"

"हमें यह बताओ कि डॉ. किचलू और सतपाल कहाँ हैं ?"

"अब कौन रुकता है।"

बैकट पीछे हट गया। उसकी बात का कुछ प्रभाव नहीं पड़ा। उसे डर था कि कहीं वह स्वयं ही भीड़ का निशाना न बन जाए। वह दूर से ही धमकी दे रहा था। लोगों की भीड़ को डराने की कोशिश भी की, परंतु कोई प्रभाव नहीं।

इरविंग भी आ गया। लोगों की भीड़ और बढ़ गई। कप्तान मैसी पहुँच गया। उसके आदेश पर लेफ्टीनेंट डिक्की ने स्थिति संभालने का प्रयत्न किया। न इरविंग कुछ कर सका और न ही कप्तान मैसी। बस, डिक्की रह गया और उसके साथ छह सैनिक। तीन अंग्रेज़ और तीन हिंदुस्तानी। ईंट-पत्थरों की बरसात हो रही थी। शोर बढ़ता ही जा रहा था। तरह-तरह की आवाजें आ रही थीं। नारे लग रहे थे और धूप बढ़ती ही जा रही थी। लोगों के शरीर धूप से जल रहे थे, दिमाग जल रहे थे, दिल जल रहे थे।

घोड़े पर सवार एक और सहायक कमिश्नर मिस्टर कौनर कोतवाली की ओर जाता हुआ रास्ते में रुका। डिक्की ने उसे आवाज़ दी कि जल्दी से और सैनिक भेजें।

"सैनिकों के पहुँचने तक यह भीड़ सिविल लाइंस तक चली जाएगी।" कौनर ने कहा।

"फिर क्या किया जाए ?" डिक्की ने पूछा।

"कुछ भी।"

"क्या ?"

"फायर !"

"फायर" शब्द सुनते ही अंग्रेज़ सिपाहियों ने फायर कर दिए।

ठाँय ! ठाँय ! ! ठाँय ! ! ! गोलियाँ चलीं। अफरा-तफरी मच गई। आवाज़ें और ऊँची हो गई। शोर और भी बढ़ गया। नारे अभी भी लग

रहे थे । लोग अभी भी उसी तरह एकत्र थे । तितर-बितर नहीं हुए थे । कैसे लोग थे ! मरने से बिल्कुल नहीं डरते थे ।

उस समय बारह बजकर पैंतालीस मिनट हुए थे । लोग अंग्रेज़ी अफसर डिक्की और कौनर पर हमला करना चाहते थे परंतु उनके नेता उनको रोक रहे थे । वे अपने नेताओं का आदेश मान रहे थे । एक भी व्यक्ति आदेश का उल्लंघन नहीं कर रहा था । गोलियाँ चलने के बाद भी भीड़ काबू में ही रही । डिक्की और कौनर हैरान थे ।

जब एक बजा तो पलोमर चौबीस सिपाहियों और सात घुड़सवार पुलिस अफसरों सहित पहुँचा । घायल अभी तक सड़कों पर ही पड़े हुए थे । मरने वालों की लाशें भी अभी तक उसी तरह सड़क पर पड़ी थीं । घायलों और लाशों की बिल्कुल चिंता न करते हुए लोग और अधिक उत्साह से नारे लगा रहे थे और आगे बढ़ रहे थे । अंग्रेज़ अफसर पीछे हट रहे थे । पलोमर ने पुलिस को तैनात होने का आदेश दे दिया । वे सभी तैयार हो गए । अब लोगों की भीड़ पुलिस से सिर्फ चालीस-पचास गज़ की दूरी पर थी । पलोमर क्रोध भरी निगाह से भीड़ की ओर देख रहा था और भीड़ भी पलोमर को देखकर भड़क रही थी । पुलिस भीड़ को आगे बढ़ने से रोकना चाहती थी और भीड़ आगे बढ़ने की कोशिश कर रही थी । ऐसा लगता था कि अभी और गोलियाँ चलेंगी । अभी और झड़प होगी । अभी और लोग घायल होंगे । और कुछ बेचारे मौत की गोद में सो जाएंगे ।

इस आतंकभरी स्थिति के बारे में कुछ सदस्यों ने पलोमर से बात करनी चाही । पलोमर मान गया । उन्होंने इस स्थिति में अपना सहयोग देने की बात की । पलोमर ने उनको आदेश दिया कि दो-चार व्यक्ति यहाँ के लोगों को समझाएं और बाकी रेलवे स्टेशन की तरफ जाएँ, जहाँ पर लोग एकत्र हो रहे हैं । दो वकील — सलारिया और मकबूल महमूद वहीं रह गए । वे पुलिस और लोगों की भीड़ के मध्य में खड़े थे । पुलिस को कह रहे थे कि वे फायर न करें । और लोगों को समझा रहे थे कि वे

आगे न बढ़ें। उन वकीलों की दशा बहुत दयनीय थी। जब वे लोगों को आगे बढ़ने से रोकते थे तो लोग और भी अधिक क्रोधित हो जाते थे —

"तुम अंग्रेज़ों के पिठ्ठू हो।"

"तुम उनके साथ मिले हुए हो।"

"तुम रास्ते से एक तरफ हट जाओ।"

"अंग्रेज़ों के साथ मिलकर तुम हमें खत्म करवाना चाहते हो।"

"हम तुम्हारी बातों में आने वाले नहीं।"

वकील लोगों को थोड़ा-सा पीछे हटाने में सफल हो गए और उनको टेलीग्राफ दफ्तर तक ले गए। परंतु इससे भीड़ में कोई कमी नहीं हुई बल्कि भीड़ बढ़ती ही गई।

उनके लोग हाल बाज़ार में इकट्ठा होकर सावधान खड़े थे। वे न तो आगे बढ़ रहे थे और न ही पीछे हट रहे थे। ऐसा ज्ञात होता था कि उनकी कोई योजना है। वे तो जैसे इशारे की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। वे इशारा चाहते थे। किसका ? यह शायद वे भी नहीं जानते थे। वे तो बस, प्रतीक्षा कर रहे थे। बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। परस्पर जुड़े हुए एक-दूसरे से स्पर्श कर रहे, पसीने से तर-ब-तर लोग न जाने किसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। कभी फुसफुसाकर कोई बात कर लेते थे और कभी बिल्कुल खामोश हो जाते थे।

इस तरह धीरे-धीरे एचीसन पार्क में तीस-पैंतीस हज़ार व्यक्ति एकत्र हो चुके थे। उनके चेहरे के भाव बताते थे कि वे बहुत घातक विचार मन में लेकर यहाँ आए हैं और एक इशारा मिलते ही सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट कर देंगे। इस भीड़ को यह मालूम था कि शहर के किसी भाग में कोई घटना जरूर हुई है। उन्होंने गोलियों की आवाज़ भी सुनी थी। वे यह भी जानते थे कि शहर के किसी दूसरे हिस्से में जो भी हो चुका है, अब यहाँ भी होने वाला है। वे सावधान और सतर्क थे। फिर मिनटों में ही उनके पास यह खबर पहुँच गई कि हाल ब्रिज पर हिंदुस्तानियों पर गोलियाँ चलाई गई हैं, अनेक हिंदुस्तानियों की लाशें वहाँ सड़क पर पड़ी हैं। यह खबर सुनकर

लोगों का क्रोध और भी बढ़ गया। उन्होंने मरने-मारने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

हाल गेट ब्रिज पर स्थिति वैसी ही थी, पहले से भी भयानक। इरविंग और पलोमर लौट आए और उनके साथ इन्फैंट्री भी पहुँच गई। सलारिया और मकबूल लोगों को आगे बढ़ने से रोकने में असफल रहे। लोग फिर आगे बढ़ चुके थे और बेचारे वकील पुलिस और लोगों के बीच बुरी तरह पिस रहे थे। उनके कपड़े फट चुके थे। मकबूल महमूद के सिर से पगड़ी ग़िरकर न जाने कहाँ पहुँच गई थी। फिर भी दोनों वकील अभी तक घबराए नहीं थे। अपने काम में व्यस्त थे। भीड़ का मिज़ाज पहले से अधिक बिगड़ चुका था। घोड़े पर सवार इरविंग ने आगे बढ़कर लोगों से कहा, "आगे बढ़ने से रुक जाओ, वरना इन्फैंट्री अपना काम शुरू कर देगी।"

"हम गोलियों से नहीं घबराते।"

"हम मरने से नहीं डरते।"

"यह धमकी किसी और को देना।"

यह भीड़ की आवाज़ थी। अब पलोमर भी इरविंग से आ मिला। उसने भी भीड़ को संबोधित किया। फिर सलारिया और मकबूल मुहम्मद ने भी फिर से लोगों को समझाने का प्रयत्न किया, परंतु लोग इस समय कोई भी बात सुनने को तैयार नहीं थे। वे कोई भी तर्क समझना नहीं चाहते थे। अंग्रेज़ अफसरों के घोड़े इधर-उधर भाग रहे थे। ईंट-पत्थर फेंके जा रहे थे। नारे लग रहे थे। बाद में और लोग भी इस भीड़ में शामिल हो गए। स्थिति की गंभीरता बढ़ती जा रही थी।

गर्मी से सड़क भी जल रही थी। कपड़े पसीने से भीग रहे थे। हर पल स्थिति बिगड़ती जा रही थी। दोनों तरफ लोगों के दिल धड़क रहे थे। सब डर रहे थे। घायलों को अभी तक किसी ने नहीं उठाया था। लाशें पैरों के नीचे मसली जा रही थीं। सड़क खून से लथपथ थी। पसीने की दुर्गंध फैल रही थी। सूरज अपने यौवन पर था।

एन. सी. ओ. ने आदेश दिया और गोलियाँ चलने लगीं। भगदड़ मच गई। नारे। गालियाँ। घायल। लाशें। सूरज की गर्मी। खून। सड़क। बदबू। शोर। बंदूकें। मौत का ताण्डव। अत्याचार। अंग्रेज़। हिंदुस्तानी।

इसके बाद क्या हुआ? शहर के सभी लोगों – हिंदुओं, सिक्खों और मुसलमानों ने विद्रोह कर दिया। वे घरों को छोड़कर बाज़ारों में आ गए। अपने सीस हथेली पर लिए घूमने लगे। मरने के लिए तैयार हो गए। अंग्रेज़ अभी भी अकड़े हुए थे। अभी भी वे हिंदुस्तानियों को अपने नौकरों के समान ही समझते थे। परंतु हिंदुस्तानी जागृत हो चुके थे। उनको अपने अस्तित्व का ज्ञान हो चुका था। वे अंग्रेज़ों से बदला लेने को तत्पर थे। मिनटों में ही शहर में प्रदर्शन होने लगे, जुलूस निकलने लगे, इंकलाब जिंदाबाद के नारों से आकाश गूंज उठा। टाउन हाल और कोतवाली के समीप हाल बाज़ार में तीन बैंकों पर लोग टूट पड़े। नेशनल बैंक, एलायंस बैंक और चार्टर्ड बैंक। बैंकों में आग लगा दी गई। टाउन हाल जलकर राख हो गया। गोलियाँ चलीं। कई हिंदुस्तानी मारे गए। थामसन, स्टीयूर्ट और स्कॉट भी मार दिए गए। गोली-मौत-आग, सारा शहर झुलस गया। अहमद खान, अशरफ़ खान, रीहिल, पलोमर, इरविंग और अन्य अफसर लाख कोशिश करते रहे परंतु शहर में बढ़ रही बेचैनी को रोक न सके।

नारों की आवाज़ लगातार आ रही थी। तीखी धूप की चमक में भी शहर में अंधेरा प्रतीत हो रहा था। सूरज डूब गया था, तूफान चल रहा था, तेज तूफान। ऐसा प्रतीत होता था कि यह अंधेरा, यह तूफान अब ऐसे ही रहेगा। कभी रोशनी नहीं होगी। कभी तूफान नहीं रुकेगा। अंधेरा और तूफान। सभी शहरवासी अंधेरे में भटक रहे थे। उनको कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। तूफान किसी को भी हिलने नहीं दे रहा था, और वे एक ही स्थान पर खड़े नारे लगा रहे थे।

बैंकों के बाद गोदाम – रेशमी कपड़े के गोदाम। फिर छोटे डाकखाने। फिर अन्य दुकानें। फिर रीलिजस ट्रैक्ट सोसाइटी का डिपो। फिर हाल बाज़ार की एक-दो और इमारतें। लाठियाँ-गोलियाँ-आग -अंग्रेज़-हिंदुस्तानी। बिजली और टेलीफोन की तारें, डाकखाने, अमृतसर अन्य शहरों से कट गया था।

इरविंग अभी तक भीड़ को रोकने का प्रयत्न कर रहा था। वह भीड़ को सिविल लाइंस में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं दे रहा था। उसे यह पता था कि वह अधिक समय तक भीड़ को नहीं रोक सकेगा। भीड़ बेकाबू हो जाएगी तो फिर क्या होगा? इसका उसे आभास नहीं था। उसके मुताबिक केवल ईश्वर ही जानता था कि तब क्या होगा। हर तरफ हंगामा था, शोर था। उसी तरह आवाज़ें आ रही थीं, नारे लग रहे थे। उसी तरह की सख्त गर्मी थी, पसीने छूट रहे थे, बदबू आ रही थी। उसी प्रकार सड़कों पर लाशें थीं, घायल थे। लोग उनको पैरों के नीचे मसल रहे थे। सिपाही भी उनको लाँघकर जा रहे थे। उनको उठाने वाला कोई नहीं था। उनका अंतिम संस्कार करने वाला कोई नहीं था। उसी तरह का डर था, घबराहट थी, बेचैनी थी, परेशानी थी, मृत्यु की छाया थी, जीवन कहीं दिखाई नहीं देता था। ज़िंदगी मानो शहर से भाग गई हो। हर तरफ मृत्यु ही मृत्यु थी। सन्नाटा था, उजाड़ था, कुरूपता थी।

इरविंग जलता हुआ शहर देख रहा था। आग की लपटें आकाश की ओर बढ़ रही थीं। सारा वातावरण धुएँ में लिपटा हुआ था। प्रतीत होता था जैसे सारा शहर ही जलकर राख बन गया हो। एक भी इमारत साबूत नहीं बची थी। एक भी व्यक्ति जीवित नहीं बचा है। शहर तबाह हो गया है, मिट्टी में मिल गया है। धुआँ निकल रहा था, लपटें उठ रही थीं। शहर में आग फैल चुकी थी। लोग शहर से बाहर भाग रहे थे। बच्चे, बूढ़े, पुरुष, स्त्रियाँ, सभी बाहर भाग रहे थे, जैसे वे फिर कभी इस शहर में नहीं आएँगे। जैसे यह शहर फिर क़भी नहीं बसेगा। जैसे इस शहर में सूरज फिर कभी नहीं चमकेगा। जैसे इस शहर में सदा-सदा के

लिए अंधेरा हो जाएगा। जैसे यह अंधेरी का शहर - तूफान का शहर - हंगामे का शहर - बेचैनी का शहर - मौत का शहर हो।

शहर की स्थिति के बारे में वह लाहौर स्थित पंजाब सरकार को बताना चाहता था परंतु टेलीफोन की तारें कट चुकी थीं। वहाँ तक सूचना भेजने का कोई मार्ग शेष नहीं था। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह कैसे सरकार को यह सूचना दे कि परिस्थितियाँ उसके हाथ से निकलती जा रही हैं। यदि बात बिगड़ गई तो वह कैसे अपनी सफाई देगा। परंतु वह कर भी क्या सकता था? वह विवश था। वह चाहकर भी सूचित करने में असमर्थ था। यह सोचकर वह हैरान था कि टेलीफोन की तारें काटने की बात शहरवासियों को कैसे सूझी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि ये सभी काम हिंदुस्तानी सहज भाव से ही कर रहे हैं। उसी समय राबिंसन मारा गया। बैकट को भागना पड़ा। श्रीमती ईसडन को छिपना पड़ा। मिस शेरवुड को परेशान होना पड़ा। कर्नल स्मिथ को किले की तरफ जाना पड़ा। रास्ते में उसने इमारतों को जलते हुए देखा। रेल पटरियां उखाड़ी जा रही थीं। रेलगाड़ियाँ तोड़ी-फोड़ी जा रही थीं। भगतांवाला स्टेशन जला दिया गया। छेहरटा स्टेशन पर हमला हुआ। एक मालगाड़ी को आग लगा दी गई।

अंततः इरविंग लाहौर तक सूचना भेजने में सफल हो गया। डिवीज़न का कमिश्नर किचिन और डिप्टी इंसपेक्टर जनरल डौनलड कार द्वारा पहुँच गए और सीधा रेलवे स्टेशन पर आ गए।

यहाँ उन्होंने एक मीटिंग की, जिसमें माइल्ज़ इरविंग, रीहिल, पलोमर और कप्तान मैसी भी थे। यहाँ पर इरविंग ने शहर की स्थिति के बारे में बताया और उसने जो प्रबंध किए हैं, उसके बारे में भी जानकारी दी। यह सब बातें सुनकर किचिन को गुस्सा आ रहा था और उसे शहर में फँसे हुए अंग्रेज़ अफसरों की चिंता भी हो रही थी। इसी समय अशरफ़ ख़ान ने आकर बताया कि चारों अंग्रेज़ कोतवाली में सुरक्षित हैं। यह निर्णय लिया गया कि उन्हें वहाँ से सुरक्षित निकाल लिया जाए, परंतु कप्तान

मैसी को यह कदम उचित न लगा । उसका परामर्श था कि लाहौर से सेना के आने के बाद ही ये काम किए जा सकते हैं । इस समय अमृतसर की गलियों में जाना खतरे से खाली नहीं था ।

मेजर मैक्डानल्ड रात के साढ़े दस बजे पहुँचा । उसे देखकर सभी ने राहत की साँस ली । किचिन उसे अलग ले गया और काफी समय तक दोनों परस्पर बातें करते रहे । किचिन ने उसको बताया कि अब सिविल अधिकारी इस स्थिति को संभालने में असमर्थ हैं इसलिए शहर को अपने अधीन कर लें, क्योंकिं वह एक ऊँचे दर्जे का अफसर था । फिर सभी ने मिलकर स्टेशन के विश्राम-गृह में मीटिंग की । गर्मी से बुरा हाल था । मच्छर काट रहे थे । हर तरफ गंदगी ही गंदगी थी । किसे मालूम था कि हर तरह से सुखमय जीवन बिताने वाले अंग्रेज़ अफसरों को इस समय इतने कष्ट में रहना होगा । पलोमर के साथ थोड़े से सिपाही भेजे गए ताकि वे अंग्रेज़ अफसरों को कोतवाली से ले आएँ ।

वह भयानक रात किचिन, इरविंग और अन्य अफसरों ने रेलवे स्टेशन पर ही बिताई । रातभर उन्हें यही चिंता सताती रही कि कल अमृतसर में क्या होगा । वे एक पल के लिए भी आँखें न मूंद सके । मच्छर चैन नहीं लेने दे रहे थे और फिर आसपास दुर्गंध से सांस लेना भी मुहाल था । तौबा ! इधर उनकी रेलवे स्टेशन पर यह दयनीय स्थिति थी और उधर स्त्रियाँ और बच्चे किले में गर्मी से बेहाल हो रहे थे । कोई पंखा नहीं था, खुला स्थान नहीं था । एक ही बड़े कमरे में सभी कैद थे । मच्छर काट रहे थे । बदबू के मारे बुरा हाल था । किला एक तरह से नरक का नजारा प्रस्तुत कर रहा था ।

यह है 10 अप्रैल की कथा । मैं इन घटनाओं को याद करके काँप रहा था । दो दिन में ही क्या से क्या हो गया है । परंतु इसमें दोष किसका है ? यह कोई नहीं सोचता । अंग्रेज़ हिंदुस्तानियों को दोष दे रहे हैं और हिंदुस्तानी अंग्रेज़ों को ।

थोड़े समय बाद इरविंग ने महसूस किया कि खतरा थोड़ा कम हो गया है। रेलवे स्टेशन से निकलकर वह अपने दफ्तर में आ गया। कोतवाली पर उस समय सेना का कब्जा था। शहर में बिल्कुल शांति थी।

इरविंग के हाथ में कोई रिवाल्वर नहीं थी। वह खाली हाथ ही पंक्ति में खड़ा हो गया। कोई सिपाही या पहरेदार भी उसके समीप नहीं था। वें सभी थोड़ी दूरी पर खड़े थे। आवश्यकता पड़ने पर वे कोई मदद नहीं कर सकते थे। इरविंग स्वयं पर क्रोधित हो रहा था कि उसने व्यर्थ में ही अपने लिए खतरा मोल ले लिया था। परंतु अब घबराने से क्या होगा। डरने से क्या लाभ ?, उसने तुरंत ही स्वयं को संभाल लिया और पूर्ण अधिकार से पूछा कि उन्हें क्या काम है। वकीलों ने बताया कि वे कल गोली लगने से मर गए लोगों के लिए शोक प्रदर्शन की आज्ञा चाहते हैं। यह जुलूस शहर के मध्य से होता हुआ जलियाँवाला बाग के सामने से निकलकर शहर के बाहर श्मशान घाट तक जाएगा। वहीं पर मृतकों का दाह-संस्कार किया जाएगा। वकीलों ने अपनी बात यथोचित ढंग से कही थी फिर भी इरविंग ने सोचा कि यह शोक प्रदर्शन राजनीतिक प्रदर्शन का रूप धारण कर लेगा तो इनको संभालना कठिन हो जाएगा। शोक प्रदर्शन के लिए आज्ञा देना अपने लिए मुसीबत को बुलावा देना है। इसलिए उसने मना कर दिया। इरविंग ने वकीलों को कहा कि वह मृतकों को जलाने के लिए चार-पाँच व्यक्तियों से अधिक नहीं जाने देगा। और यह सारा काम दो से चार बजे के बीच समाप्त हो जाना चाहिए। यह सुनकर वकील क्रोधित हो गए और गालियाँ देते हुए इरविंग के बंगले से चले गए। अब इनके पास और कोई रास्ता नहीं था। फिर भी इन्होंने इरविंग के आदेश का पालन न करते हुए छोटे-छोटे शोक जुलूस निकाल ही लिए,परंतु सारा कार्यक्रम बिना किसी शोर के, बिना किसी प्रदर्शन के समाप्त हो गए। चार से सवा चार न होने दिए।

शहर उसी तरह शांत रहा। किसी तरह का हंगामा न हुआ।

शहर में शांति थी - शांति, सन्नाटा । ऐसा प्रतीत होता था कि भीतर ही भीतर कोई योजना बन रही है । बाहरी हंगामे के मुकाबले यह भीतरी विद्रोह अधिक भयावह है । यह बात इरविंग जानता था ।

और अब डायर यह सभी बातें सोचकर, विचारकर अपने साथियों सहित जलियाँवाला बाग की ओर जा रहा था । थोड़े समय में वह जलियाँवाला बाग में पहुँच जाएगा । फिर क्या होगा ? यह कोई नहीं जानता था । केवल डायर ही जानता था । डायर ने किसी को कुछ नहीं बताया ।

एक हिंदुस्तानी घुड़सवार सिपाही लोगों को दूर भगा रहा है । उसका घोड़ा बिदकता है । लोग हँसते हैं । वह घोड़े को थपथपाता है । घोड़ा और उछलता है । घुड़सवार घोड़े पर उछलता है । गिरने लगता है । शायद वह घुड़सवारी में इतना माहिर नहीं था । इसीलिए लोग हँसते हैं । लोगों का हँसना उचित है । डायर को घुड़सवारी सीखने के अपने दिन याद आ रहे हैं । शिमला-बचपन-घुड़सवारी । घुड़सवारी वास्तव में गधे की सवारी से शुरू हुई । बचपन में वह गधों और खच्चरों पर सवारी किया करता था । उसके घर के पास धोबी रहते थे । धोबियों के पास माल ढोने के लिए गधे थे और वह उनकी सवारी किया करता था । धोबियों के गधे । बड़ी मजेदार सवारी थी । गधों ने बहुत बार उसे गिराया था । कई बार चोट खाई थी ।

डायर सोचता है कि उनकी ज़िंदगी कितनी खुशी भरी थी — धोबियों की और गधों की । धोबी भी खुश थे । गधे भी खुश थे । वह भी बहुत खुश था । उसके साथी बच्चे भी गधों की सवारी करके खुश थे । मज़ेदार सवारी । सभी खुश थे । कितनी अच्छी ज़िंदगी थी । और अब कोई भी खुश नहीं । लोग चिंतित हैं, घबराए हुए हैं, सहमे हुए हैं । हंगामा, शोर, बेचैनी । यह कैसी ज़िंदगी है ?

और उसे अपने इस विचार पर बहुत क्रोध आता है । ऐसा विचार उसके मन में आया क्यों ? वह गधा कैसा है ? वह तो गधों पर सवारी

करता रहा है । गधों पर सवारी करते हुए ही उसने घुड़सवारी सीखी है । इसीलिए अब वह सबसे बढ़िया घुड़सवार समझा जाता है । हिंदुस्तानियों को छोड़ो, अंग्रेज़ों में भी उस जैसा घुड़सवार मिलना दुर्लभ है ।

डायर जेब में से सिगरेट केस निकालता है । एक सिगरेट सुलगाता है । वह हैरान है कि जब से वह राम बाग के लिए चला है उसने सिगरेट नहीं सुलगाई । चलने से पहले भी काफी समय से सिगरेट नहीं पी थी । इतना लंबा समय उसने कभी सिगरेट के बिना नहीं बिताया था । वह हैरान है । सिगरेट के बिना इतना समय कैसे बीत गया !

वह सामने रेलवे स्टेशन है । वहाँ भी सन्नाटा है । तीन दिन पहले वहाँ भी शोर था । वहीं लोगों ने राबिंसन को मारा था । रेलवे स्टेशन । जब भी कोई हंगामा होता है, स्टेशन अवश्य उसकी चपेट में आ जाता है । अधिकतर स्थानों पर ऐसा देखा गया है । उस दिन दिल्ली में । शायद 30 मार्च का दिन था । हड़ताल थी उस दिन । लोग बहुत उत्साहित थे । उन्होंने रेलवे स्टेशन के जलपान-गृह के ठेकेदार को घेर लिया । वह ठेकेदार अंग्रेज़ों का पिट्ठू था । लोग उससे बहुत नाराज थे । केवल खुशामदी होता, तो भी ठीक था । वह सी. आई. डी. का काम भी करता था । लोगों के बारे में रिपोर्ट करता था । शुरू में तो लोग उसको बूढ़ा और अपंग समझकर छोड़ देते थे परंतु जब बात अपनी सीमा पार कर गई तो लोगों ने उसकी खटिया खड़ी करने का निश्चय कर लिया ।

डायर की कार पुल से नीचे उतर चुकी है और वह कार में बैठा अमृतसर का नक्शा देख रहा था । अनुमान लगा रहा है कि पावर हाउस नजदीक ही होगा । पावर हाउस, जिसके पास सार्जेंट रोलैंड को मार दिया गया था । बेचारा रोलैंड । ये हिंदुस्तानी । ये भयानक हिंदुस्तानी । इनकी इतनी हिम्मत ! इनका इतना हौसला ! और डायर को फिर बचपन के दिन याद आ जाते हैं । वह बहुत शरारती था । बहुत बड़ी-बड़ी शरारतें करता था । उनमें से एक उसे याद आ गई । उसे साँपों को मारने का शौक था । साँप को उसके बिल में से निकालकर वह उसे ईंट, लाठी या फिर किसी

और वस्तु से ज़ोर-ज़ोर से मारता । वह तड़पता । भागने की कोशिश करता । डायर और मारता । फिर हँसता । प्रसन्न होता । आखिर साँप मर जाता । डायर खुशी मनाता और आस-पड़ोस के बच्चों को अपनी 'बहादुरी' दिखाने के लिए इकट्ठा कर लेता ।

मिडलटन कॉलेज में उसने मुक्केबाजी के भी बहुत चमत्कार दिखाए थे । एक बार उसका एक सहपाठी से झगड़ा हो गया । बहुत देर तक दोनों में मुक्केबाजी होती रही । डायर ने निश्चय कर लिया था कि आज उस सहपाठी को जान से मार देगा । वह मारता रहा, मारता रहा । दोनों को अलग करने वाला कोई नहीं था । आखिर में उसे बेहोश करके छोड़ दिया । सुबह जब वह शहर में ऐलान करवा रहा था, कुछ लड़के उसे 'बंदर-बंदर' कह रहे थे । कितने गुस्ताख हैं ये लड़के । वह इनको सबक सिखाएगा । इनके बापों को भी सीधा करेगा । 'बंदर' शब्द से उसे नफरत है, सख्त नफरत । अन्य कोई गाली उसे इतनी बुरी नहीं लगती । बंदर । शिमला के बंदर । बचपन । एक बार उसने किसी पक्षी को निशाना बनाया और गोली लग गई एक बंदर को । बेचारा बंदर । बंदर का खून । उससे देखा नहीं जा रहा था । बंदर का खून हो गया । बंदर मर गया ।

इरविंग ने डायर को स्थिति से अवगत करा दिया है । संपूर्ण शहर डायर के हाथों में दे दिया है । इरविंग स्वयं शहर को नहीं संभाल सका । अब शहर पर डायर का कब्ज़ा है । उसे मालूम है कि सिविल कानून समाप्त हो चुका है । इस समय सेना का राज्य है । इस राज्य में वह जो चाहे कर सकता है । उसे किसी से परामर्श करने की आवश्यकता नहीं है । अपने इर्द-गिर्द के अफसरों को वह बेजान समझता है । कोई भी उससे बात करने योग्य नहीं । वह स्वयं ही सर्वोपरि है । वह है और यह शहर । शहर उसका है । शहरवासी उसके वश में हैं । उसको पूर्ण अधिकार है, शहर में मनमानी करने का ।

एक अंग्रेज़ अफसर की लड़की उसको क्लब में मिली । वह उसके साथ बैडमिंटन खेला करती थी । बढ़िया खिलाड़ी थी । गठीला शरीर

था । नाक-नक्श तीखे थे । गहरे रंगों के कपड़े पहनती थी । मीठी-मीठी बातें करती थी । डायर स्वयं भी एक बढ़िया खिलाड़ी था । वह उस लड़की के साथ सिंगल खेलता । कभी स्वयं जीत जाता और कभी अपनी इच्छा से उसे जिता देता । जब वह डायर से गेम जीत जाती तो बहुत खुश होती । डायर उसके खेल की प्रशंसा करता, खूब प्रशंसा करता । वह और भी खुश हो जाती । क्लब में आते ही मिलते, परस्पर हाथ मिलाते और फिर खेलने लगते ।

डायर सिर्फ हाथ मिलाने से ही संतुष्ट नहीं होता था । वह तो उससे शादी करना चाहता था । सिर्फ प्यार करने का वह ज़रा भी शौकीन नहीं था । वह कोई भी कदम लक्ष्य निर्धारित किए बिना नहीं उठाता था । इस विषय में वह इतनी रुचि इसीलिए ले रहा था कि एक फकीर ने उसे कहा था कि वह तभी सफलता की सीढ़ी चढ़ सकता है जब उसकी शादी इसी वर्ष हो जाए ।

डायर अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता था । लेकिन उसके वश में कुछ नहीं था । उसे अपनी सहनशक्ति का प्रयोग करना पड़ता था । एक दिन गेम में सख्त मुकाबला हो रहा था । डायर को पूर्ण विश्वास था कि यह गेम वह ही जीतेगा । लड़की को विश्वास था कि वह जीतेगी । शर्त लग गई । क्या शर्त ? यह फैसला न हो सका । लड़की ने कहा था, "जो तुम कहोगे स्वीकार है ।" यह कहकर वह मुस्कराकर डायर की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखने लगी । डायर ने भी हँसकर कहा, "स्वीकार"। अब डायर भी पूर्ण शक्ति लगाकर खेलने लगा और लड़की भी । दोनों उत्साहित थे । डायर कई तरह के अनुमान लगा रहा था । आज का अवसर वह छोड़ना नहीं चाहता था । वह सोच रहा था कि शायद उस लड़की ने जानबूझकर उसे यह अवसर दिया है । उसने कहा था, "जो तुम कहो स्वीकार है ।" यदि वह जीत गया तो कह देगा, "मुझसे शादी कर लो ।" वह मना नहीं कर सकेगी । शायद उसने पहले ही यह फैसला कर लिया हो । वह खुश था कि आज खेल खत्म होने के बाद उसकी ज़िंदगी का

फैसला हो जाएगा। वह खुश भी था और उसका दिल भी धड़क रहा था।

धीमी-धीमी हवा चलने लगी थी। वह बहुत मुश्किल से शटल को धकेल पा रहा था। प्रकृति भी उसे हराने पर तुली हुई थी। वह पसीने से तर-ब-तर था। इतनी थकावट उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी। वह प्रतिदिन खेलता था, कई खेल खेलता था, परंतु कभी थकावट महसूस नहीं करता था। आज एक ही गेम ने उसे थका दिया था। उधर वह लड़की ज़रा-सी भी थकावट महसूस नहीं कर रही थी। बहुत विश्वास से खेल रही थी और लगता था कि वह आसानी से जीत जाएगी। अब आखिरी एक-दो नम्बर रह गए थे। सख्त मुकाबला हुआ और अंत में डायर जीत गया। दोनों ने हाथ मिलाए। इस बार डायर कुछ आगे बढ़ गया। उसने लड़की का हाथ चूम लिया। वह कुछ न बोली। बस मुस्कराती रही। मुस्कराती हुई वह कहने लगी – "जो कहोगे मानूँगी।" डायर ने एकदम से कह दिया – "मुझसे शादी कर लो।" वह थोड़ी देर चुप रही। फिर उसने इतना ही कहा – "मुझे दुख है कि मैं हाँ नहीं कर सकती।"

"क्यों ?"

"क्योंकि यह फैसला मैं पहले ही कर चुकी हूँ।"

"क्या ?"

"शादी करने का फैसला। मैं एक हिंदुस्तानी से शादी कर रही हूँ। वह एक व्यापारी का लड़का है।"

व्यापारी का लड़का ? हिंदुस्तानी ? डायर कुछ और पूछे बिना वहाँ से चला गया। लड़की ने भी और कोई बात नहीं की और अपने रास्ते चल पड़ी।

उसके बाद न कभी डायर बैडमिंटन खेलने आया और न कभी वह लड़की।

अब डायर अन्य कोई बात याद करना नहीं चाहता था। यह बहुत दुखदायी याद है। उससे भी अधिक कष्टकर याद उस लड़की की शादी की है। अपनी शादी का निमंत्रण पत्र उसने डायर को भी भेजा था। वह

केवल इसलिए शादी में शामिल होने गया कि उस हिंदुस्तानी को देख सके जिसने एक अंग्रेज़ लड़की का दिल जीत लिया है। पार्टी में बैठा वह उस हिंदुस्तानी लड़के की तरफ देखकर दाँत किटकिटाता रहा। क्या था उस हिंदुस्तानी लड़के में ? उसके मन में आया था कि उसे अभी गोली मार दें।

कुमारी शेरवुड को हिंदुस्तानियों ने मारने की कोशिश की थी। बेचारी कितनी अच्छी लड़की है ! डायर को शेरवुड का चेहरा उस लड़की जैसा लगता है जिसने उसके साथ विवाह नहीं किया था, जिसने एक हिंदुस्तानी व्यापारी के लड़के को उससे अच्छा साथी समझा था।

कुमारी शेरवुड। 10 अप्रैल। हिंदुस्तानियों की उसको मारने की कोशिश। कुमारी शेरवुड। एक खूबसूरत नवयौवना। उस जैसी लड़की। कानपुर। 32 साल पहले। क्लब में बैडमिंटन कोर्ट। लड़की की हार। अनोखी शर्त। विवाह की पार्टी। अपमान। बदला। हिंदुस्तानियों से बदला। दाँत पीसता है। आँखें क्रोध से लाल। बेचैन है। बुदबुदाता है। मुट्ठियाँ भींचता है। मैं देख रहा हूँ। ब्रिग्ज़ देख रहा है। न वह आश्चर्यचकित होता है और न मैं। ऐसी हरकतें वह काफी समय से कर रहा है।

पावर हाउस वाली सड़क से एक मज़दूर भागता आ रहा है। मालूम नहीं कौन है, किस धर्म का है। केवल मज़दूर है। मज़दूर का कोई धर्म नहीं होता। वह एक इंसान होता है। इंसान ? समझा चाहे न जाए पर होता अवश्य है। मज़दूर नवयुवक है। मज़दूर होता ही जवान है। बूढ़ा क्या मज़दूरी करेगा। मज़दूरी अपनी इच्छा से नहीं की जाती, करनी पड़ती है। कई बूढ़े भी मज़दूरी करते हैं। कितनी ही अधिक उम्र के बूढ़े। क्या करें ? उनके पास और कोई चारा नहीं होता। बच्चे मज़दूरी करते हैं। छोटे-छोटे बच्चे, छोटी-सी उम्र। औरतें मज़दूरी करती हैं। बूढ़ी, जवान, बच्चियाँ। परंतु जो मज़दूर भागा आ रहा है, पूर्ण जवान है। होगा 20-25 वर्ष का। वह भागता हुआ आ रहा है। पावर हाउस की तरफ से आ रहा है।

मैं सोच रहा हूँ कि पुल के नीचे रेल पटरी पर कोयले चुन रही स्त्री भी मज़दूरनी थी । सारा दिन मज़दूरी के बदले में उसे थोड़े-से कोयले मिलते हैं, जिनको वह जलाती है । वह केवल आग जला सकती है, उस आग पर पकाने के लिए उसके पास कुछ भी नहीं है । उस बेचारी को सब्ज़ी, दाल, आटा लेने के लिए न जाने क्या-क्या करना पड़ता है ।

दो-तीन लड़के सड़क पर खेल रहे हैं । इनमें वह लड़का भी दिखाई पड़ता है जो सुबह लोहे का पीपा खड़का रहा था । इस लड़के ने अपनी ड्यूटी कितनी लगन से निभायी थी । इसी ने लोग इकट्ठे किए थे । सारे शहर में अपनी और अपने पीपे की आवाज़ पहुँचाई थी । और अब जबकि लोग जलियाँवाला बाग में पहुँच चुके हैं, सड़कों पर खेलने लगा है । इसके लिए तो पीपा बजाना भी एक खेल ही था । इस छोटे से लड़के ने कितना बड़ा खेल शुरू कर दिया है ।

सूरज की गर्मी कम हो रही है । आसमान पर बादल छाने लगे हैं । दूर क्षितिज की ओर देखने पर लगता है कि आँधी आने वाली है । चीलें उड़ान भरने लगी हैं । कुत्ते भौंकने लगे हैं । अधिकतर लोग घरों से बाहर हैं । जो घरों में हैं, वे चुपचाप अंदर बैठ गए हैं । वे दरवाजे बंद करके बैठे हैं । जिन माताओं के पुत्र घर से बाहर हैं, वे बेचैन हो रही हैं । जिन पत्नियों के पति बाहर गए हुए हैं, वे भी चिंतित हैं और यही दशा भाइयों के लिए बहनों की है । यूं लगता है कि थोड़ी देर में ही तेज आँधी आ जाएगी । घर से बाहर गए हुए लोगों के लिए घर पहुँचना कठिन हो जाएगा । न जाने क्या होगा ?

आँधी आ रही प्रतीत होती है... । आज कोई विशेष चहल-पहल नहीं है... बाज़ार बंद हों तो जैसे शहर में ज़िंदगी ही ठहर जाती है । डायर जब वहाँ से चला तो उसकी आँखों में खून था । यह प्रभाव सुबह नहीं था । यह विद्रोह केवल एक दिन में नहीं पैदा हुआ, इन हिंदुस्तानियों के दिलों में यह कई वर्षों से पनप रहा है । खामोश विद्रोह इसी तरह पनपता है, जवान होता है और फिर एक धमाके की तरह फट जाता है । पहले-पहल खामोश होता है और फिर कुछ समय बाद चारों ओर के जीवन में उथल-पुथल मचा देता है । विद्रोह का वास्तविक रूप धारण करने के भी

कई ढंग हैं । देखा नहीं हमने ! इसके अनेक रंग तो हम देख चुके हैं ।...
डायर अब पहले जैसा नहीं है । हम अंग्रेज़ हैं, शासक वर्ग में से हैं । परंतु इस समय हम गुलाम हैं । हमें आदेश मानना पड़ रहा है — एक पागल अफसर का आदेश । एक बीमार व्यक्ति का आदेश । हम आज़ाद नहीं । हम गुलाम हैं । केवल डायर आज़ाद है । नहीं, वह भी गुलाम है — अपने अहंकार का, अपनी चाहतों का, अपनी कमियों का । यदि वह आज़ाद होता तो इस तरह न चल पड़ता । हम सभी गुलाम हैं । हिंदुस्तान में नौकरी करने वाले सभी अंग्रेज़ गुलाम हैं । इनकी कोई इच्छा नहीं, इनका कोई मान-सम्मान नहीं ।

...डायर अपने बदले ले रहा है, अंग्रेज़ी शासन का कोई हित नहीं कर रहा । इसकी अपनी कठिनाइयाँ हैं । इसे किसी के प्रति हमदर्दी नहीं है । अंग्रेज़ों के प्रति भी इसके मन में कोई सहानुभूति नहीं । यह न अंग्रेज़ है और न हिंदुस्तानी ।... हमारे अंग्रेज़ी शासकों ने भी बिना वजह मुसीबतें खड़ी कर रखी हैं । इन भड़के हुए लोगों को कब तक दबाएंगे ।

...हाँ, वह बात ही ज़रा रोमांचक थी । यह रूमानी बातों का समय नहीं परंतु... रोचक बात है । बहुत ही रोचक बात । कल ही मालूम हुई है । इरविंग, अपना डिप्टी कमिश्नर, आजकल इश्क लड़ा रहा है स्मिथ की पत्नी से । इसीलिए बार-बार किले की ओर भागता है । आज भी वहीं मस्ती कर रहा है । हमारी जान पर बनी है और उसे अपने इश्क से फुर्सत नहीं । बस, ज़रा फुर्सत हुई तो चल पड़ता है गोबिंदगढ़ किले की ओर । क्या इतनी ही बात है ? नहीं, केवल इतनी बात में क्या रोमांच ! कुछ और भी है । इरविंग की पत्नी से स्मिथ इश्क चला रहा है । तभी तो वह भी गायब है । किले में ये दोनों इश्क कैसे चला सकते हैं ? इतना बड़ा किला है । एक कोने में इरविंग और स्मिथ की पत्नी इश्क के दरिया में डूबे होंगे और दूसरे कोने में स्मिथ और इरविंग की पत्नी ।

...यह इश्क भी चलता रहेगा और बर्बादी भी नहीं होगी । वो इश्क और होते हैं जो तबाह कर देते हैं, उजाड़ देते हैं । इस इश्क में तो मस्ती ही मस्ती है । खुशकिस्मत लोग ही ऐसे इश्क का आनंद लेते हैं । क्या

विचार है ?... हिंदुस्तानियों ने विपत्ति खड़ी कर रखी है, नहीं तो हम भी किले की ओर चलते । वहाँ क्या है ? हम भी किसी अवसर की तलाश करते ।...डायर ने कभी इश्क नहीं किया ? इश्क किया होता तो इतना भयानक व्यक्ति न होता । इश्क करने वालों का दिल बहुत कोमल होता है । डायर क्या इश्क करेगा... ।

रीहिल और पलोमर कुछ इस प्रकार की बातें क़रते हुए जा रहे हैं । वे बहुत चिंतित हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि डायर का कदम बहुत गलत है । उनका विश्वास है कि डायर का यह कदम अंग्रेज़ शासन की नींव पक्की करने की बजाय खोखली कर देगा ।

लैविस इस समय किले की ओर जाना चाहता है । परंतु अकेला उधर जाने से डरता है । अगर कोई साथी होता तो इधर आने के स्थान पर अवश्य किले की ओर चला जाता। उसका विश्वास है कि जलियाँवाला बाग में अवश्य कोई गड़बड़ी होगी । इसलिए यूँ ही मौत के मुँह में नहीं जाना चाहता । और किले तक पहुँचना भी आसान नहीं है । वह डायर को सूचना देने आया है और स्वयं ही फँस गया है । वह तो मुफ्त में ही फँस गया है । वह डायर को राम बाग में ही कह सकता था कि उसे किले तक पहुँचने के लिए कुछ साथी चाहिए । डायर तो जानता भी नहीं होगा कि वह भी उसकी टुकड़ी के साथ चल रहा है । यह उसकी स्वयं की मूर्खता है ।

अंतत: वह रीहिल को अपने मन की बात बता देता है । रीहिल दो हिंदुस्तानी सिपाहियों को उसके साथ भेज देता है । धन्यवाद करके लैविस कार में से उतर जाता है और किले की ओर चल देता है । लैविस के जाने के बाद रीहिल और पलोमर फिर से लैविस की बातें शुरू कर देते हैं । लैविस की छह पत्नियाँ थीं । लैविस की बेटी स्टैला थी ।

इस समय जब डायर का काफिला अभी हाल बाज़ार में ही पहुँचा है, बहुत बड़ी संख्या में लोग जलियाँवाला बाग में एकत्र हो गए हैं । कोई-कोई व्यक्ति ही घर में बैठा है । कुछ देर पहले तेज़ी से आती हुई

आँधी थोड़ी देर के लिए रुक गई लगती है। हाल गेट का घंटा उसी तरह चल रहा है। डायर अपने विचारों में खोया हुआ है। मैं भी पास से गुज़रते हुए लोगों को देख रहा हूँ। वादन अपने घर पर होगा। इरविंग किले में पहुँच चुका होगा। कर्नल स्मिथ भी वहीं है। लैविस अभी रास्ते में ही है।

एक रात 8.30 बजे सायं में शायद श्रीमती इरविंग ने मुझे टेलीफोन किया – "अगर आपको फुर्सत है तो जरा क्लब में आओ।" मैं क्लब पहुँच गया। क्लब में कोई विशेष चहल-पहल नहीं थी। एक-दो व्यक्ति ही थे। श्रीमती इरविंग ने बताया – "उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, लेटे हुए थे और मैं बैठी-बैठी बोर हो रही थी। सोचा, जरा क्लब ही चली जाऊँ।"

उस रात हमने व्हिस्की पीते हुए कई प्रकार की बातें कीं। वह अपने बचपन की बातें करती रही, जवानी के किस्से सुनाती रही। मैं सुनता रहा और साथ-साथ अपनी बातें भी करता रहा। इतनी बातें इससे पहले हमने कभी नहीं की थीं।

उस रात श्रीमती इरविंग ने मुझे कहा – "तुम डाक्टर हो, मेरा इलाज करो।" उसने कई बार दोहराया – "मेरा इलाज करो।" मैं उसकी बात समझ गया था। इरविंग को कोई लड़का नहीं था, केवल एक लड़की थी, जो इस समय पंद्रह वर्ष की हो गई थी। इन पंद्रह वर्षों में उनके यहाँ कोई और बच्चा नहीं हुआ था।

सवेरे ही वह अपने घर चली गई और मैं अपने घर। फिर उसने मेरे सारे रुटीन के बारे में जानकारी हासिल कर ली। मेरे भी और मेरी पत्नी के बारे में भी। जब भी मेरी पत्नी घर से बाहर जाती श्रीमती इरविंग आ पहुँचती। इस तरह चोरी-चोरी मुलाकात होती रही। यह मुलाक़ात कभी घर में होती, कभी सिनेमा में, कभी क्लब में और कभी उस एकांत और उजाड़ स्थान पर, जहाँ एक पूरी रात हमने सिर्फ एक बोतल व्हिस्की के सहारे काटी थी। श्रीमती इरविंग – व्हिस्की की बोतल – खेत और

कलर — टापू वाली फिल्म — क्लब वाली रात — नीले और लाल बल्बों की रोशनी — झोली में उसका सिर — संतान की भूख — व्हिस्की की गर्मी . . . ।

और अब वह श्रीमती इरविंग की प्रतीक्षा कर रहा है । साढ़े चार का समय दिया था परंतु अभी तक पहुँची नहीं । साढ़े चार से सिर्फ दो मिनट ऊपर हुए थे और वह घबरा गया है । दो मिनट भी कितना लंबा समय होता है ! सिगरेट पीकर भी समय नहीं बीत रहा ।

शहर छोड़कर स्मिथ इस समय यहाँ किले में आया हुआ है, लेकिन श्रीमती इरविंग से मिलने के लिए । परंतु श्रीमती इरविंग अभी तक नहीं आई । उसे तो ठीक साढ़े चार बजे यहाँ पहुँचना था । अजीब औरत है । अब वह एक बेटे की माँ है — नन्हे-मुन्ने बेटे की । कई दिन पहले इरविंग कह रहा था — "मेरे बेटे की सूरत तेरी सूरत से मिलती है ।" उसने ऐसा क्यों कहा ? कहीं उसे कोई शंका तो नहीं हुई ?" नहीं, शायद उसने साधारण बात की थी । श्रीमती इरविंग भी तो रोज कहती है — "आओ, तुम्हें तुम्हारा बच्चा दिखाऊँ ।" 'तुम्हारा' कैसे हुआ ? वह ऐसा क्यों कहती है ?

श्रीमती इरविंग भागी-भागी आती है और स्मिथ को अपनी बाँहों के घेरे में ले लेती है । इसके बाद दोनों की कोई खबर नहीं रहती कि वे कहाँ हैं ।

जब श्रीमती इरविंग और स्मिथ किले की हरी-हरी घास पर बैठे परस्पर अपने मन की बातें कर रहे थे, उस समय किले के अंदर एक छोटे-से कमरे में इरविंग और श्रीमती स्मिथ सख्त गर्मी में, एक-दूसरे की बाँहों में लिपटे हुए हैं । यह छोटा कमरा सिपाहियों की वर्दी रखने के लिए है । फर्श पर वर्दियां बिखरी पड़ी हैं और उनके ऊपर वे बैठे हैं ।

इस सख्त गर्मी में बैठें वे अपने बीते दिनों को याद कर रहे हैं । उन्हें बिल्कुल याद नहीं कि वे शादीशुदा हैं, उनके बच्चे हैं । वे तो स्वयं को कॉलेज के विद्यार्थी समझ रहे हैं ।

बाहर पहरे पर खड़ा सिपाही अवश्य जानता होगा कि कमरे में

साहब अकेला नहीं हैं, उनके साथ मेम साहब भी हैं।मेम साहब कौन है ? किसकी पत्नी है ? यह शायद वह नहीं जानता होगा । उसे तो सभी मेम साहब एक जैसी लगती होगी । वह क्या जाने कि उनमें कोई अंतर भी होता है । इरविंग साहब की मेम साहब और है और स्मिथ साहब की और ।

स्टैला और उसकी सौतेली माँ नोरा बरामदे में बैठी चाय पी रही हैं । दोनों के संबंध बहुत मधुर हैं । बिना झिझक के वे एक-दूसरे से अपने मन की बात कह लेती हैं । लैविस ने दोनों को आज़ादी दे रखी है । कहीं जाने से, किसी से मिलने से मना नहीं करता ।

स्टैला और नोरा की आयु में भी अधिक अंतर नहीं है । स्टैला 17-18 वर्ष की होगी और नोरा 25-26 की । लैविस ने केवल छह वर्ष पहले नोरा से शादी की है । उस समय स्टैला केवल ग्यारह वर्ष की थी । वह शायद लैविस की छठी शादी थी । उसकी पहली सभी पत्नियाँ जीवित हैं । अधिकतर ने दूसरी शादी कर ली हैं ।

स्टैला जस्सी से प्रेम करती है । जस्सी एक धनी सरदार का बेटा है और खालसा कॉलेज में बी. ए. का विद्यार्थी है । वैसे तो स्टैला के अनेक मित्र हैं – अंग्रेज़, एंग्लो-इंडियन और हिंदुस्तानी । परंतु जस्सी उसका बहुत ही प्रिय मित्र है । गत कुछ महीनों से वह जस्सी के साथ ही घूमती है । कुछ दिन पहले जस्सी ने उससे कहा था – "स्टैला, मुझसे शादी करने के बाद तुझे स्कर्ट के स्थान पर सलवार-कमीज़ पहननी पड़ेगी । फिर तुम बहुत सुंदर लगोगी ।" और वह सोच रही है, कितना अच्छा होता, यदि अब तक वह जस्सी से शादी कर चुकी होती । इस तरह इस किले में कैदियों की तरह तो न रहना पड़ता ।

आज भी चाय पीते समय नोरा स्टैला को यही कह रही है कि उसे हिम्मत से काम लेना होगा । यह काम इतना आसान नहीं । अपनी इच्छा से तो कभी भी लैविस उसे जस्सी से विवाह की आज्ञा नहीं देगा । अपनी इच्छापूर्ति के लिए उसे स्वयं ही प्रयत्न करना होगा । अपने जीवन को

खुशियों से भरने के लिए उसे अपने पिता की नाराज़गी सहनी पड़ेगी। स्टैला पहले तो डरती थी परंतु अब वह ऐसा कदम उठाने के लिए तैयार है। उसने जस्सी को भी अपने इस विचार से अवगत करा दिया है। जस्सी अपने माता-पिता से बात कर चुका है। उन्हें कोई अचंभा नहीं हुआ।

जस्सी भी जलियाँवाला बाग की ओर गया है। स्टैला को उसकी चिंता है। वह नोरा से कह रही है – "जस्सी को मैंने कहा था कि वह जलियाँवाला बाग में न जाए, परंतु वह नहीं माना ! वह अवश्य वहाँ गया होगा। सुना है, डायर सेना और पुलिस लेकर जलियाँवाला बाग जा रहा है। मुझे लगता है कि झगड़ा बढ़ जाएगा। संभव है, गोलियाँ भी चलें। डायर बहुत निर्दयी व्यक्ति है। मुझे जस्सी की चिंता है।"

लैविस दो फौजी सिपाहियों के साथ किले की ओर आ रहा है। वह चिंतित है। शायद नोरा से मिलने को उत्सुक है। कल भी वह नोरा से नहीं मिल सका था। वह नोरा के बिना नहीं रह सकता। नोरा से पहले वह पाँच औरतों के साथ विवाह कर चुका है, परंतु नोरा उसे अत्यंत प्रिय है। उसे मालूम है कि यह उसकी अंतिम पत्नी है। इसके बाद वह शादी नहीं कर सकेगा। अब वह पचास वर्ष पूरे कर चुका है। अब उसकी कीमत पहले जैसी नहीं रही है।

वह किले की ओर जा रहा है और सोचकर रोमांचित हो रहा है कि जाते ही वह नोरा को अपनी बाँहों में भर लेगा। उसे चूम लेगा। उसे बताएगा कि वह उसके बिना एक दिन भी नहीं रह सकता। वह प्रसन्न हो जाएगी और काफी देर तक उससे प्रेमभरी बातें करती रहेगी। स्टैला पास ही होगी। नोरा उससे शरमाएगी। नहीं, स्टैला थोड़ी देर के लिए दूर चली जाएगी। वह स्थिति को समझती है। समझदार है। स्टैला वहाँ से चली जाएगी और वे दिल भरकर प्यार करेंगे – नोरा और वह।

फिर एक और विचार उभरता है कि उसकी नोरा उसके लिए बेचैन नहीं होगी। उसके मन-मंदिर में तो कोई और बसा हुआ है। उसके मन से उस फ्रांसीसी का विचार निकालना ही पड़ेगा, तभी वह उसे प्यार कर

सकती है। यदि यही स्थिति रही तो कुछ महीनों में वह उस फ्रांसीसी के साथ भाग जाएगी और वह हाथ मलता रह जाएगा।

उसकी नोरा। फ्रांसीसी प्रोफेसर। उसकी स्टैला। सिक्खों का लड़का। बकवास। सब व्यर्थ है। असहनीय है। यह क्या है? क्या हो रहा है यह? आँधी आ रही है। तूफान आ रहा है। वर्षा होने लगी है। सभी कुछ नष्ट हो जाएगा। धरती उलट जाएगी। आँधी-तूफान वर्षा शहर उजड़ जाएगा। बम गिरेंगे। गोले बरसेंगे। गोलियाँ चलेंगी। लोग मरेंगे। लोग भागेंगे। नोरा का क्या होगा? स्टैला कहाँ जाएगी? फ्रांसीसी प्रोफेसर और वह सिक्खों का लड़का — सभी कुछ बकवास है। सभी व्यर्थ। ये अंग्रेज़। ये हिंदुस्तानी। ये झगड़े। ये प्रदर्शन। यह डायर। यह इरविंग। ये अन्य सभी अंग्रेज़। ये अंग्रेज़ स्त्रियाँ। ये सभी लोग। सभी फ़िज़ूल। सभी बकवास। कोई कहाँ जाए? कोई क्या करे?

और स्टैला? स्टैला ने भी उसका गुस्सा नहीं देखा। वह अपना निर्णय बदलने को विवश हो जाएगी। यदि वह न मानी तो वह उससे अपने सारे संबंध तोड़ लेगा। कभी उसका मुँह नहीं देखेगा। वह हमारी गुलाम जाति के किसी व्यक्ति से शादी करे। यह नहीं हो सकता, कभी नहीं हो सकता। उसे सही रास्ते पर आना ही होगा। उसे आँखें खोलनी ही पड़ेंगी।

जुलूस हाल बाज़ार में से गुजर रहा है। जुलूस आगे बढ़ रहा है और चालीस-चालीस सैनिकों की टुकड़ियों को विशेष स्थानों पर पीछे तैनात करता जा रहा है।

डायर नक्शा देखता है। अनुमान लगाता है कि जलियाँवाला बाग अभी कितनी दूर है। अनुमान लगाने में वह प्रवीण है। झट अनुमान लगा लेता है। सामने देखता है। एक दवाइयों की दुकान का बोर्ड है। दुकान बंद है परंतु बोर्ड पर मोटे अक्षरों में "कैमिस्ट शॉप" लिखा है। क्या व्यर्थ बोर्ड है। कितनी बेहूदा दुकान है। दवाइयों की दुकान। कैमिस्ट शॉप। यह भी कोई काम है।

कानपुर शू हाउस। कानपुर शहर। 39वीं बंगाल इन्फैंट्री। 32 साल

पहले । पहली बार कमिश्नर । कानपुर शहर उसके सामने आ जाता है । पहले प्यार में असफल होने के बाद डायर ने सोच लिया कि या तो वह प्यार करेगा ही नहीं, और यदि करेगा तो असफल प्यार नहीं करेगा । किसी फकीर ने कहा था – "वह इसी साल शादी करे ।" उसने बहुत प्रयत्न किया, परंतु उसकी शादी उस साल न हो सकी । उसकी क्लब की दोस्त को किसी हिंदुस्तानी व्यापारी का लड़का ब्याह कर ले गया ।

डायर को याद है, फिर वह झाँसी चला गया था । एक अंग्रेज़ कर्नल की लड़की ऐनी के साथ उसका परिचय हुआ । बात आगे बढ़ गई । इस बार उसने पहले ही यह छानबीन कर ली कि कहीं इस लड़की के भी किसी हिंदुस्तानी के साथ संबंध तो नहीं । जब उसे पूर्ण विश्वास हो गया तो एक दिन उसने ऐनी के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा । वह मान गई । कर्नल भी सहमत हो गया और फिर उनका विवाह हो गया ।

फकीर की बात पूरी हो गई । उसने विवाह कर लिया । अब वह सफलता के मार्ग पर चल पड़ा । गोमती नदी का किनारा । लहरों का शोर । पानी ही पानी । नदी के किनारे ही डायर के पिता का घर था । उसी घर में वह हनीमून मनाने के लिए आया ।

वह इकतीस साल पहले के दिन याद कर रहा है । ऐनी के साथ उसने प्यार भरी ज़िंदगी के इकतीस साल पूरे किए हैं । वह ज़िंदगी खुशियों से भरी हुई थी । ऐनी, उसका बेटा और उसकी भतीजी इस समय जालंधर में हैं । जालंधर में वे अकेले हैं । उनके पास पहरेदार हैं, सैनिक हैं, सिपाही हैं, नौकर-चाकर हैं । परंतु सभी हिंदुस्तानी हैं । एक हिंदुस्तानी का क्या विश्वास । गोमती नदी का किनारा । लहरों का शोर । लखनऊ शहर । इकतीस साल । जालंधर । पहरेदार । हिंदुस्तानी । हिंदुस्तानियों का कोई विश्वास नहीं ।

यह एक कवि है । यह जलियाँवाला बाग क्यों नहीं गया ? वहाँ अनेक कवि पहुँचे होंगे । अनेक कवि अपनी कविताएँ सुनाएंगे । उनकी कविताएँ जोशीली होंगी । लोगों के मन में उत्साह भरने वाली होंगी ।

यह कवि घर बैठा है। अकलमंद है। घर बैठने में ही भलाई है। बेचारा बूढ़ा है। शायद घर की पहरेदारी कर रहा है। बेटा तस्वीरें खींचने गया है। वह तस्वीरें खींचेगा। पिता घर की रखवाली करेगा। घर की रखवाली की क्या आवश्यकता है। इनको घर की रखवाली की कोई आवश्यकता नहीं है। इनके घर की ओर कोई नहीं देख सकता। हिंदुस्तानियों के घर से किसी को क्या लेना है। ये निश्चिंत हैं। इनको कोई चिंता नहीं। कवि चाहे अपने विचारों में मग्न रहे, चाहे वह बेखबर होकर कविता करता रहे। इनके घर को कोई ख़तरा नहीं। इनकी दुकान को कोई ख़तरा नहीं। परंतु ये स्वयं ख़तरनाक व्यक्ति हैं। पिता कविता करता है, पत्रिकाओं में लिखता है। निश्चित है, अंग्रेज़ों के विरुद्ध कविता लिखता होगा। आजकल लोकप्रिय कवि वही है जो अंग्रेज़ों के विरुद्ध लिखता है। पुत्र फोटोग्राफर है। उसकी तस्वीरें भी पत्रों में छपती हैं। उन तस्वीरों को देखकर लोग और भी भड़क जाते होंगे। अंग्रेज़ों को और अधिक गालियाँ देते होंगे। यह फोटोग्राफर बकवास है।

और समाचार-पत्र? सभी उत्तेजक समाचार देने वाले समाचार-पत्र। इन सभी को बंद कर देना चाहिए। उसने इसीलिए ये सभी समाचार-पत्र पढ़ने छोड़ दिए हैं। इनमें कोई भी बात सही नहीं छपती। ये समाचार-पत्र। ये किताबें। इस कुतब फरोश (दुकानदार) ने अवश्य कुछ किताबें और अखबारें एक पटरी के कोने पर रखकर अपनी दुकान सजाई होंगी। शायद कहीं जलियाँवाला बाग के समीप ही बैठा हो। इसने वहीं अखबारें रखी होंगी जिसमें अंग्रेज़ों के विरुद्ध समाचार छपे होंगे।

अमृतसर के अखबार बेमिसाल हैं। डायर को 11 अप्रैल का समाचार याद आता है। निर्मूल समाचार। लाहौर के किले पर हिंदुस्तानियों ने अधिकार कर लिया है। सेना ने विद्रोह कर दिया। लेफ्टीनेंट गवर्नर को मार दिया गया। ये समाचार अमृतसर के अखबार फैलाते हैं। इनको कोई कुछ नहीं कहता? यह कैसी सरकार है? यह

क्या हो रहा है ? अखबार फिर भी छप रहे हैं । गलत समाचार छाप रहे हैं । नित्य छाप रहे हैं । रोज़ बिक रहे हैं । कोई उन्हें बंद नहीं करता ।

डायर को क्लर्क से घृणा है । क्लर्क भी व्यर्थ हैं । क्लर्क कहीं इंसान होते हैं ? क्लर्क बस क्लर्क होते हैं, और कुछ भी नहीं । क्लर्कों ने अंग्रेज़ अफसरों को मारा है । उन्होंने अपना गुस्सा निकाला है । थामसन को उसके ही एक पुराने क्लर्क ने मार डाला । क्लर्की देकर अंग्रेज़ इन हिंदुस्तानियों की आजीविका चला रहे हैं और क्लर्क अंग्रेज़ों को मार रहे हैं । कितने बदमाश हैं ये हिंदुस्तानी क्लर्क ।

वह याद करता है कि कसाइयों के चेहरे बहुत भयानक होते हैं । लंबी-लंबी मूँछे । बड़ी-बड़ी आँखें । चौड़ी छाती । और फिर उसे वे कसाई जैसे व्यक्ति याद आ जाते हैं जो दिल्ली में उसकी कार पर चढ़ गए थे । कसाई जैसे व्यक्ति । उनसे बहुत मुश्किल से पीछा छुड़ाया था । न जाने उनका क्या उद्देश्य था । इस तरह किसी कार में दो कसाई जैसे व्यक्तियों का चढ़ आना । कितना भयानक दृश्य है ! वह और उसके परिवार के सदस्य बहुत डर गए थे । वे कार पर क्यों चढ़े थे ? शायद कत्ल के इरादे से । यदि घुड़सवार पुलिस न आती तो उन्होंने हमारा काम तमाम कर दिया होता ।

30 मार्च । दिल्ली की गड़बड़ । बहुत बड़ी हड़ताल । शोरगुल । ख़ून ही ख़ून । घायल लोग । गोलियाँ । शहर के कई क्षेत्रों में लूटमार । अंग्रेज़ों के प्रति घृणा का प्रचार । शाहजहाँ की राजधानी । कुतुबमीनार । भागदौड़ । रेलवे स्टेशन पर शोर । कई मौतें ।

उसे झट से 9 अप्रैल का दिन याद आ जाता है जब इन हिंदुओं, सिक्खों और मुसलमानों ने अमृतसर शहर में मिलकर जुलूस निकाला था । रामनवमी का दिन । रामनवमी का जुलूस । कितनी ख़तरनाक बात है । हिंदुओं, सिक्खों और मुसलमानों का मिलकर शोभा यात्रा निकालना । मिलकर त्योहार मनाना । बहुत गलत बात है । बहुत बकवास । यह क्या हो रहा है ? यहाँ शासन कैसे चलेगा ? यह असहनीय

बात है । हमारा शासन तंत्र कितना ढीला पड़ गया है । इसने हिंदुस्तानियों को कितनी ढील दे रखी है । नहीं तो इन हिंदुस्तानियों की इतनी हिम्मत ! हिंदुस्तानी तो गाय हैं । हिंदुस्तानी बेचारे हैं ।

डायर को वे दिन फिर याद आते हैं । कानपुर क्लब में बैडमिंटन खेलने के दिन । उसने उस अंग्रेज़ लड़की को रैकेट पकड़ना सिखाया । शॉट लगाना सिखाया । शॉट उठाना सिखाया । और वह सभी कुछ सीखकर भी उसकी न बन सकी । एक हिंदुस्तानी व्यापारी का लड़का उस लड़की को जीतकर ले गया । ये खेल भी व्यर्थ हैं । इन खेलों का कोई अर्थ नहीं । खेलों ने इन शिक्षित हिंदुस्तानियों को और भी खराब कर दिया है ।

इन हलवाइयों का क्या लाभ ? सभी व्यर्थ हैं । सभी हिंदुस्तानी हैं । हलवाई की दुकान के बाहर एक कुत्ता बैठा है । उसे मिठाई की खुशबू आ रही है । वह वहाँ से उठना नहीं चाहता । कुत्ता यहीं प्रतीक्षा करेगा । जब तक दुकान नहीं खुलती, यहीं बैठा रहेगा । पीटे जाने के बाद भी यहीं रहेगा । इस कुत्ते को गोली मार देनी चाहिए । यह यहाँ क्यों बैठा है ? यह बेकार क्यों बैठा है ? इसे कोई काम नहीं । यह हिंदुस्तानियों की तरह निकम्मा है । बिना काम के इसे भी शरारतें सूझेंगी । व्यर्थ बातें इसके दिमाग में आएंगी । कुत्ते के पास बुद्धि होती है ? उसे बुद्धि की क्या आवश्यकता । वह सोच-विचार भी नहीं करता । उसको तो बस पेट भरना होता है और घूम-फिर कर समय बिताना होता है ।

आँधी जैसे रुक गई है । शायद थोड़ी देर में फिर उठे । अभी तो आकाश साफ़ हो गया है, परंतु दूर क्षितिज में अभी भी लाल रंग स्पष्ट दिखाई दे रहा है । लाल रंग । ऐसा लगता है आँधी अवश्य आएगी । अगर अब आँधी आई तो लाल रंग की हवा चलेगी । लाल रंग की हवा । आँधी और तूफान । न जाने क्या होगा ।

वह देखता है कि एक दुकान बाहर से बंद है परंतु अंदर ठक-ठक हो रही है । उसे मालूम है कि अंदर छापाखाना है । छपाई हो रही है ।

अवश्य कोई इश्तिहार छप रहा होगा। इश्तिहार भी सरकार के विरुद्ध होगा, तभी तो इस समय काम हो रहा है। वैसे कोई प्रेस चल रहा होता तो हड़ताल करवाने वाले तुरंत पहुँचकर प्रेस बंद कर देते, परंतु यहाँ तो उनका अपना काम हो रहा है। अपने इश्तिहार छप रहे हैं।

मैं बैठा-बैठा सो गया था। यूं ही नींद आ गई थी। अभी ही उठा हूँ। अभी हम हाल बाज़ार में से गुजर रहे हैं। डायर बाहर देख रहा है। उसे नींद नहीं आती। ब्रिग्ज़ सहमा-सा बैठा है। वह डरा हुआ है। उसे नींद कैसे आ सकती है? डायर क्यों नहीं सोता? यदि वह सो जाए तो झगड़ा ही समाप्त हो जाए। वह सो जाए तो शायद शेष अंग्रेज़ अफसर लौट जाने का फैसला कर लें। न डायर जलियाँवाला बाग की ओर जाए और न... कुछ नहीं कहा जा सकता क्या होगा। पर होगा कुछ अवश्य। डायर की आँखों में भरे हुए क्रोध से लगता है कि कुछ होगा अवश्य।

डायर की दशा दयनीय है। उस पर दया करनी चाहिए। उसके मन में न जाने क्या संघर्ष हो रहा है। वह स्वयं भी नहीं जानता कि वह क्या चाहता है। वह विवश है। वह विवश क्यों है? उसकी विवशता क्या है? यह तो केवल वही जानता है।

और इस समय कर्नल साहब और श्रीमती इरविंग किले के मैदान में घास पर बैठे हैं। वे कुछ इस तरह बातें कर रहे हैं—

बहुत समय से मुझे डाक्टर की तलाश थी! एक ऐसे डाक्टर की तलाश, जो मेरा इलाज कर सके, जो मुझे ठीक कर सके। मुझे डाक्टर मिल गया है। डाक्टर ने केवल मेरा इलाज ही नहीं किया, मेरी ज़िंदगी में रोशनी ही रोशनी कर दी है। डाक्टर के मिलने से पहले मुझे हर तरफ अंधेरे के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता था। मेरी अंधेरी ज़िंदगी के आसमान पर चाँद निकल आया है। मुझे अब कोई और चाह नहीं।... यह मखमली घास, यह एकांत, यह वातावरण फिर कहाँ मिलेगा! फिर हमें उसी तरह छिप-छिपकर मिलना होगा। लोगों का भय। अपनों का भय। वह भी कोई ज़िंदगी है!... मन करता है यह गड़बड़ ऐसे ही चलती

रहे । शहर में हो-हल्ला इसी तरह होता रहे । इस तरह हम खुलकर मिल तो सकते हैं । वहाँ तो मिलने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते थे ।... तुम्हारा पति शहर का डी. सी. है, ऊँची आन-शान वाला । उससे डरता हूँ ।... डरने की क्या बात है ? वह पति है, केवल पति । उसने मुझे क्या दिया ? खुशी नहीं दी, रोशनी नहीं दी । सच्चे अर्थों में जीवन ही नहीं दिया । आपने मुझे खुशी दी है । नई ज़िंदगी दी है, प्यार दिया है । अब मैं किसी की चिंता नहीं करती ।... यदि कभी, किसी समय इरविंग जान गया कि उसका बेटा उसका नहीं है तो क्या होगा ? व्यक्ति सभी कुछ सहन कर सकता है परंतु वह सहन नहीं कर सकता कि उसकी पत्नी उसे छोड़कर किसी और का बच्चा पैदा करे । उसे मुझ पर विश्वास है और मैंने उसके विश्वास का मनचाहा लाभ उठाया है... तुमने कब अनुचित लाभ उठाया है ? तुमने तो मुझे भटकाने का प्रयत्न नहीं किया । तुम तो सदा मुझसे दूर रहे हो । मैं तो स्वयं ही आपकी गोद में आ गिरी हूँ ।

उनमें बातें हो रही हैं । बातें समाप्त करने का अभी कोई विचार नहीं । ऐसा बढ़िया अवसर उनको फिर कब मिलेगा ।

किले में, वर्दियों वाले कमरे में, जहाँ दम घुटता है, श्रीमती स्मिथ और इरविंग भी पुरानी घटनाएँ एक-दूसरे को याद करवा रहे हैं —

एक दफा कॉलेज में नाटक खेला जाना था । किटी (श्रीमती स्मिथ) हीरोइन का अभिनय कर रही थी और इरविंग हीरो का । नाटक शुरू होने में केवल बीस मिनट शेष थे । किटी के गले में न जाने क्या हो गया । उसकी आवाज बंद हो गई । इरविंग बहुत चिंतित हुआ । उसने कई महीने रिहर्सल करके नाटक तैयार किया था और अब सारी मेहनत व्यर्थ जा रही थी । इरविंग ने हिम्मत नहीं हारी । किटी को साथ लेकर डाक्टर के पास गया । डाक्टर ने दवा दी । दवा लेकर वे पैदल आ रहे थे । इरविंग बार-बार उससे पूछ रहा था कि गला ठीक हुआ या नहीं । किटी महसूस कर रही थी कि कुछ ही पलों में उसका गला ठीक हो जाएगा । उसकी आवाज़ कुछ-कुछ खुलने लगी थी । किटी का गला ठीक हो गया ।

मालूम नहीं दवा से ठीक हुआ था, प्रार्थना से ठीक हुआ था या परस्पर स्नेह-स्पर्श से ।

इस नाटक से ही उनका प्रेम-नाटक आरंभ हुआ था । फिर वार्षिक खेल-समारोह हुआ । नाटक की तरह इन खेलों में भी इरविंग और किटी ही अग्रगण्य थे ।

फिर वे बहुत करीब आ गए । एक-दूसरे में घुल-मिल गए । फिर उन्होंने जीवन-साथी बनने के वायदे किए । फिर वे जुदा हो गए । इनके क्षेत्र अलग-अलग हो गए । और हिंदुस्तान में आकर फिर उनका मिलन हो गया । उनके लिए फिर वे गुजरे हुए दिन लौट आए थे । वही नाटक जैसे फिर से खेला जा रहा था । वही खेल जैसे फिर से खेले जा रहे हों ।

इरविंग कहता है – "तुमसे जुदा होकर मुझे अन्य सभी कुछ मिला है । पद, इज़्ज़त परंतु प्यार नहीं मिला । प्यार जीवन में एक बार ही होता है । कितनी विवशता है ! अब हम एक घर में नहीं रह सकते । हमारा मिलन भी डर से भरा रहता है । हम मिलते हैं तो इन वर्दियों वाले कमरे में, घुटन भरे वातावरण में । ये सांसारिक पद । यह झूठी शान । मैं डर रहा हूँ कि कोई देख न ले । शहर का डिप्टी कमिश्नर हूँ । शहर में गड़बड़ है । मैं यहाँ हूँ । मैं यहाँ इश्क कर रहा हूँ । कोई देखे तो क्या कहेगा !

सामने उस बैंक की इमारत को डायर देख रहा है । इस बैंक को लूटा गया था । इसमें आग लगाई गई थी । 10 अप्रैल । ये हिंदुस्तानी । ये विद्रोही । सीधे हो जाएंगे । मैं सभी को ठीक कर दूँगा । काफिला आगे बढ़ रहा है । काफिला अपनी मंज़िल की ओर आगे बढ़ रहा है ।

डायर सोच रहा है, आज 13 अप्रैल है । अप्रैल । अप्रैल महीना ही था । 4 अप्रैल । उसका ऐनी के साथ विवाह हुआ था । ऐनी के साथ विवाह । ऐनी और वह अंग्रेज़ लड़की । कितना अंतर है ! ऐनी ने उसके प्यार का उत्तर दिया । उससे विवाह कर लिया । उस अंग्रेज़ लड़की ने उसके प्यार का कोई उत्तर न दिया । केवल उससे खेलती रही, उसे देखकर मुस्कराती रही । उसने किसी हिंदुस्तानी व्यापारी के लड़के से विवाह कर

लिया। ऐनी कितनी अच्छी है और वह अंग्रेज़ लड़की कितनी चतुर निकली ! कितनी बेवफा !

अंग्रेज़ी शासन अब आखिरी साँसें ले रहा है। सुना है, लाहौर में इनकी बहुत बुरी दशा है। लाहौर का बदला ही ये यहाँ लेना चाहते हैं। ... खालसा पूर्णतः तैयार है। यदि ये ऐसा ही करते रहे तो मैं इनका बहुत बुरा हाल करूँगा।... किचलू और सतपाल को पकड़कर इन अंग्रेज़ों ने अच्छा नहीं किया। इन्होंने अपनी मौत को दावत दी है।... इनको यह ज्ञान नहीं कि किचलू और सतपाल के अतिरिक्त भी यहाँ ऐसे व्यक्ति हैं जो अंग्रेज़ी शासन की समाप्ति के लिए रात-दिन एक किए बैठे हैं। ... डायर ही सभी कुछ कर रहा है। बहुत अत्याचारी है। लाहौर में भी हिंदुस्तानियों पर गोलियाँ चलाई गई हैं परंतु हिंदुस्तानी डरे नहीं। उन्होंने मुकाबला किया है।... उडवायर* ने ही यहाँ के डिप्टी कमिश्नर को लिखा था कि डाक्टर किचलू और डाक्टर सतपाल को जलावतन कर दिया जाए। यह माइकल उडवायर बहुत बुरा व्यक्ति है।... आज सुबह जो इश्तिहार उन्होंने बाँटे हैं, देखे हैं ?... देखे हैं, परंतु पढ़े नहीं। किसी ने भी न इश्तिहार पढ़ा है और न सूचना सुनी है। 10 अप्रैल को भी तो हिंदुओं-मुसलमानों ने इतनी ही एकता और स्नेह का परिचय दिया था।

मर रहे लोगों के मुँह से भी निकल रहा था – "हिंदू-मुस्लिम एक़ता जिंदाबाद।"... तब मैं भी वहीं था। बड़ा भयानक दृश्य था। किसी की आँख निकल गई थी, किसी की टाँग उड़ गई थी, किसी का सिर धड़ से अलग हो गया था। एक 15-16 वर्षीय लड़के ने मरते समय कहा – "मैं तो मर रहा हूँ, मेरी चिंता मत करो। मेरे अन्य भाइयों की सुधि लो – हिंदू-मुस्लिम की जै।"... एक अन्य 25-26 वर्षीय नौजवान ने कहा – "मैं मर रहा हूँ। अपने देश के लिए मर रहा हूँ। इससे बड़ा भाग्य और क्या होगा।"... और वह मर गया। एक अधेड़ आयु के ज्ञान सिंह ने मरने से पहले पुलिस के एक सिपाही को आवाज़ देकर कहा – "मेरा

* उडवायर पंजाब का गवर्नर था।

बेटा भी इस भीड़ में है। उसको मत मारना। मेरे बाद मेरी पत्नी और मेरे चार छोटे-छोटे बच्चों की देखभाल करने वाला कोई नहीं।"... ज्ञान सिंह की बात उस समय किसी ने नहीं सुनी।

यह ज्ञान सिंह बेचारा बढ़ई का काम करता था। बड़ी मुश्किल से परिवार का पेट पालता था। उसी दिन हमारे मुहल्ले का एक स्कूल मास्टर भी मरा था। वह बहुत जन सेवा करता था। उसके अपने बच्चे भूखे मरते थे परंतु दूसरे बच्चों पर अपनी कमाई बाँट देता था। उसने भी मरते समय कहा था – "मेरे बेटे से कहना कि वह भी अपना जीवन देश को समर्पित कर दे। जब तक हिंदुस्तान आज़ाद नहीं होता, हिंदुस्तानियों को इसी तरह कुर्बानियाँ देनी पड़ेंगी।" उस स्कूल मास्टर को दो गोलियाँ लगी थीं।

माइकल उडवायर

एक बाजू पर और एक टाँग पर। दोनों अंग उड़ गए थे। दूसरी गोली लगने पर वह गिर पड़ा और उसका सिर फट गया। ख़ून फव्वारे की तरह बह रहा था और वह अपनी अंतिम इच्छा अपने साथियों को बता रहा था।... हमारा पड़ोसी अमरनाथ 10 अप्रैल को 3 बजे घर पहुँचा। ख़ून से लथपथ था। कहने लगा – "मुझे फिरंगी की गोली ने घायल किया है – मैंने सोचा, मरना तो है ही, एक-दो अंग्रेज़ मैं भी मारूँ। बहुत कोशिश करने पर भी कोई मेरे हाथ न आया। मैं अपनी चाहत दिल में रखकर नहीं मरना चाहता था। मेरे हाथ में एक छोटा-सा डंडा था। इससे मैं किसे मार सकता था? फिर मैंने एक मिलिटरी अफसर को अपने पास घूमते हुए देखा। निश्चय तो कर ही लिया था। वही डंडा ज़ोर से उसके सिर पर दे मारा। वह मेरे पीछे भागा। मैं भीड़ को चीरता हुआ गायब हो गया। मुझे खेद है कि उस मामूली चोट से वह अंग्रेज़ मरा नहीं। कोई बात नहीं। मैं भी तो नहीं मरा। फिर कभी यह इच्छा पूरी करूँगा। अभी बहुत ज़िंदगी पड़ी है।..."

दरबार साहब (स्वर्ण मंदिर) के अंदर परिक्रमा में भी बहुत लोग एकत्र हैं। आज बैसाखी का दिन है। दूर-दूर से लोग यहाँ गुरु की नगरी में पहुँचे हुए हैं। अंदर परिक्रमा में एक सूरदास सिंह और उसके साथी बाबर वाणी में से यह शब्द पढ़ रहे हैं – "पाप की जंज लै काबलों धाया जोरी मंगै दान वे लालो!" सरोवर में अनेक श्रद्धालु स्नान कर रहे हैं। सेवा हो रही है। परिक्रमा कर रहे लोगों को कटोरियों से पानी पिलाया जा रहा है। यहाँ कबूतर भी खुश हैं और मछलियाँ भी। कोई उन्हें कुछ नहीं कहता। अकाल तख़्त पर बैठे हुए सिंह साहबान शहर की स्थिति के बारे में विचार कर रहे हैं। "खालसा एकदम तैयार बैठा है।" एक ऊँचे कद का गुरु का सिक्ख तलवार पर हाथ रखकर कहता है। उसके पास बैठे सभी सिंहों के चेहरों पर लाली छा जाती है। सभी तैयार बैठे हैं।

अकाल तख़्त पर बैठे इन सिंहों के समीप ही एक 15 वर्षीय लड़का बीर सिंह बैठा है। वह इनकी बातें सुन रहा है। "खालसा एकदम तैयार

बैठा है ।" वह भी मन ही मन प्रण करता है कि आवश्यकता पड़ने पर वह भी अपने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देगा । बीर सिंह माथा टेककर उठता है और चल पड़ता है ।

आँधी नहीं आई । आकाश निर्मल हो गया है । फिर भी चीलें चक्कर लगा रही हैं । दूसरे पंछी भी आकाश में उड़ रहे हैं । दिन अभी ढला नहीं है परंतु पंछी अपने घोंसलों में पहुँचने को उतावले हैं ।

बैंक पीछे छूट गया है । टाउन हाल भी । दुकानें, मकानें और हाल बाज़ार भी पीछे छूट चुका है । डायर का जुलूस आगे बढ़ रहा है ।

पाँच बजने वाले हैं । अब जलियाँवाला बाग बिल्कुल समीप है । कुछ ही समय में जुलूस वहाँ पहुँच जाएगा । सूरज डूबने वाला है । शाम हो रही है । गर्मी अभी कम नहीं हुई । आकाश में कभी बादल छा जाते हैं और कभी चले जाते हैं । चीलें उसी तरह उड़ रही हैं । कुत्ते उसी तरह भौंक रहे हैं । कोई-कोई व्यक्ति घूमता हुआ दिखाई पड़ता है ।

मैंने अपनी डायरी के पन्ने पलटने शुरू कर दिए हैं । 30 मार्च 1919 । दिल्ली की सड़कों पर भीड़-भाड़ । शोरगुल । दो व्यक्ति कार पर चढ़ गए । हाथापाई । दो घुड़सवारों को पुलिसवालों ने बचाया । गलियों में शोरगुल । गोलियों की आवाज़ । ख़ून । पूर्ण हड़ताल । दिल्ली रेलवे स्टेशन के जलपान गृह के ठेकेदार का कत्ल । 31 मार्च को एक मस्जिद में हिंदू-मुसलमानों की एक सभा । पहली बार हिंदू-मुसलमान इकट्ठे मस्जिद में । और फिर डायरी का एक और पन्ना । 6 अप्रैल । लुधियाना के समीप किसी ने कार पर पत्थर मारा । शीशा टूटने से मुझे मामूली-सी चोट आई । हम जालंधर पहुँच गए । 7 अप्रैल का पन्ना । डिवीज़नल हेडक्वार्टर की ओर से संदेश : गड़बड़ की आशंका है — विशेषत: अमृतसर में । फिर मैं 12 अप्रैल का पन्ना पढ़ता हूँ । हवाई जहाज़ में से शहर को देखा । कई स्थानों पर एकत्रित हुए लोग दिखाई दिए । और मैं डायरी एक ओर रख देता हूँ । डायरी में काफी कुछ और भी लिखा हुआ है परंतु मैं पढ़ना नहीं चाहता । चीलें भी एक ओर जा

रही हैं । आँधी भी नहीं आएगी । डायर भाग्यवान है । उसके रास्ते में कोई रुकावट नहीं । वह इसी तरह अपनी मंज़िल की ओर बढ़ता जाएगा । क्या होगा ? उसे कौन समझाएगा ? कौन उसे रोके ?

प्रिंसिपल वादन इस बात से अनभिज्ञ हैं कि विद्यार्थी अंग्रेज़ी शासन का काम नहीं कर रहे अपितु अपने हिंदुस्तानी नेताओं का संदेश लोगों तक पहुँचा रहे हैं, अपनी जान की बाजी लगाकर देश की सेवा कर रहे हैं । हर तरफ सन्नाटा देखकर वादन डर जाता है । डिप्टी कमिश्नर और उसके अन्य अंग्रेज़ मित्रों ने उसे कहा था कि वह अकेला कॉलेज में न रहे, किले में आ जाए । परंतु वह नहीं माना था । उसने कहा था – "मैं कॉलेज में अकेला नहीं, मेरे साथ विद्यार्थी हैं, प्रोफेसर हैं, सैकड़ों अन्य कर्मचारी हैं ।" आज उसे अहसास हो रहा है कि यह उसकी गलती थी । उसे किले में चले जाना चाहिए था । यदि किसी सिरफिरे ने उस पर हमला कर दिया तो वह क्या करेगा । फिर यही विचार उसे व्यर्थ लगा । उसे डरना नहीं चाहिए ।

सोमावती ने डायरी लिखना बंद कर दिया है । वह बुदबुदाने लगी है – "कहीं मेरा कंवल जलियाँवाला बाग की सभा में न चला गया हो । वहाँ . . . वहाँ तो कहते हैं बहुत खतरा है । डायर बहुत अत्याचारी है । शहर का प्रबंध उसके हाथ में है । मेरा कंवल ! मैं उसे कहाँ ढूँढूँ ? मुझे तलाश करने की क्या ज़रूरत ? वह आ जाएगा । क्या हुआ यदि जलियाँवाला बाग भी चला गया हो तो ! शायद उसे वहाँ वे मिल जाएँ । उनको ढूँढ़ने ही जाएगा ।"

इसी तरह स्वयं से ही बातें करती हुई वह चारपाई पर लेट जाती है ।

अब्दुल कादिर अपनी पत्नी को सभी घटनाओं के बारे में बताता जा रहा है और पत्नी केवल हाँ-हूँ करती है । अधिकतर बातें बेचारी की समझ से बाहर हैं, फिर भी ध्यान से सुनती जा रही है ।

कन्हैया के कटरा के शराबखाने में बाहर से ताला लगा हुआ है, परंतु वे ग्राहकों को चोर दरवाज़े से अंदर भेज रहे हैं । अंदर प्रतिदिन की

तरह दौर चल रहा है । 6-7 मेजों पर दो-दो, तीन-तीन व्यक्ति बैठे हैं । मेजों पर बोतलें और गिलास पड़े हैं । एक मेज़ पर ये बातें हो रही हैं —

...यार, आज तो शहर में पुलिस घूम रही है । जिधर देखो पुलिस ही पुलिस । कहीं इधर भी न आ जाए । बहुत खतरनाक होते हैं ये पुलिस वाले । आ जाएँ, हमारा क्या बिगाड़ लेंगे ? हम अपनी जेब से पी रहे हैं, कोई चोरी तो नहीं कर रहे ।... यहाँ डायर का बाप भी नहीं आ सकता । आए तो सही यहाँ डायर, बोतल उसके सर पर दे मारें और उसका किस्सा खत्म हो जाए । डायर का बच्चा ! है क्या वह ? हमने उस जैसे पाँच सौ देखे हैं ।... हम तो कमज़ोर व्यक्ति हैं । बड़ी कठिनाई से चोर दरवाज़े से यहाँ तक पहुँचे हैं । अब तो हम यहाँ से नहीं जाएंगे । अब तो कोई हमें उठाकर ही ले जा सकता है ।... यार, हम भी मूर्ख हैं । आज कोई पीने का दिन है । हमारे भाइयों पर अत्याचार हो रहा है और हम यहाँ अपनी मस्ती में बैठे हैं ।... मस्ती में कहाँ बैठे हैं ? हम तो यहाँ अपना गम मिटा रहे हैं । खुशी से कौन यहाँ आता है ? यहाँ कोई अय्याशी करने तो नहीं आए हम लोग । हम यहाँ इसलिए आते हैं क्योंकि इस संसार में कोई अन्य स्थान हमारा भार नहीं उठाता । यहाँ हमें कोई कुछ नहीं पूछता । यहाँ हमारा आदर-सत्कार है । शराबखाना हमारा घर है ।... हम भी हिंदुस्तानी हैं, हमें भी अपने देश से प्यार है । परंतु हम क्या करें, हमारे हाथ में कुछ नहीं है । हम कमज़ोर हैं । हम वास्तविकता का सामना नहीं कर सकते । हम ज़िंदगी से भागकर यहाँ आते हैं ।... डिप्टी कमिश्नर भी हमें शराब पीने से नहीं रोक सकता । हमारी शराब अंग्रेज़ी शासन को कोई हानि नहीं पहुँचाती अपितु उनको लाभ ही देती है । लोगों का ध्यान विद्रोह की ओर से हटाती है । शराब अंग्रेज़ों की दोस्त है । हिंदुस्तानियों की दुश्मन है । डिप्टी कमिश्नर स्वयं शराब नहीं पीता ? और भी बहुत कुछ करता है । वह शासक है न !... अच्छी हिम्मत दिखाई है उसने । भाग गया शहर छोड़कर ।... हम यही तो चाहते हैं । अन्य अंग्रेज़ भी इस तरह भागकर किले में चले जाएं तो फिर हमारी आज़ादी

आ गई समझो ।... हम तो अब भी आज़ाद हैं । जिस स्थान पर हम बैठे हैं, यहाँ किसी का राज्य नहीं । यहाँ हमारा राज्य है, पीने वालों का राज्य है ।

इस तरह की बातें अन्य मेज़ों पर भी हो रही हैं । शराबखाने का स्वामी रशीद ख़ान इधर-उधर घूम रहा है । प्रत्येक मेज़ पर आकर लोगों की बातों में शामिल होता है । हाँ में हाँ मिलाता है, अपनी राय देता है । वैसे भी वह बातें करने में प्रवीण है । बातों के सहारे ही तो उसका व्यापार चलता है ।

रशीद खान के कुत्ते की तरह रशीद खान के ग्राहकों की दुनिया भी यह शराबखाना ही है । वे कुछ नहीं जानते कि शराबखाने के बाहर क्या हो रहा है । 10 अप्रैल को भी शराबखाना इसी तरह खुला होगा । उस दिन भी इसी तरह रशीद खान के ग्राहक चोर दरवाज़े में से अंदर आते रहे होंगे । उस दिन भी इसी तरह शराब के दौर चलते रहे होंगे । जिस समय पुल के ऊपर हिंदुस्तानियों पर गोलियाँ चल रही होंगी, उस समय यहाँ शराबखाने में बोतलें खुल रही होंगी । ज़िंदगी का सामना न कर सकने वाले लोग, वास्तविकता से भागने वाले लोग यहाँ चोर दरवाज़े से पहुँच गए होंगे ।

फायर ब्रिगेड । कई फायरमैन ड्यूटी कर रहे हैं । पिछले काफी दिनों से इन्हें तनिक भी आराम नहीं मिला । कभी कहीं आग लग जाती है और कभी कहीं । आज सुबह उन्हें बताया गया था कि आज अनेक स्थानों पर आग लगने की आशंका है, अतः एक पल के लिए भी इधर-उधर जाने की भूल न करें । इसलिए कोई भी अपने स्थान से हिला नहीं है । साधूराम फायरमैन सुबह से प्रतीक्षा कर रहा है कि कहीं आग लगे और वह बुझाने जाए । वह चिंतित है । न जाने क्यों उसे आग देखने का और फ़िर आग बुझाने का बहुत शौक है । वह हैरान है कि आज अभी तक कहीं भी आग क्यों नहीं लगी ।

सुबह जब साधूराम ड्यूटी पर आया तो उसने अफसर से छुट्टी

माँगी। उसके बच्चे को तेज़ बुखार है। अफसर ने मना कर दिया। उसने कहा कि आज अनेक स्थानों पर आग लगने की आशंका है। इसलिए किसी को छुट्टी नहीं दी जा सकती। साधूराम विवश होकर ड्यूटी कर रहा है। उसका ध्यान बच्चे में ही है। बच्चे को बुखार है। घर में केवल उसकी पत्नी है। बेचारी अकेली परेशान हो रही होगी। उसे अपने अफसर पर गुस्सा आ रहा है। वह चाहता है कि अनेक स्थानों पर आग लग जाए। उसे आग बुझाने का अवसर तो मिले। उसकी इच्छा है कि आज सारे शहर में आग लग जाए। पूरा शहर आग की लपटों में घिर जाए। ऐसी आग लगे कि बुझे ही न। परंतु वह सुबह से प्रतीक्षा कर रहा है, कहीं से भी आग लगने की सूचना नहीं आई। अब पाँच बजने वाले हैं परंतु आग कहीं भी नहीं लगी। आग नहीं लगी परंतु उसका बच्चा बुखार की आग में जल रहा है। उसे ड्यूटी करनी पड़ रही है। आग नहीं लगी परंतु ड्यूटी कायम है, न जाने कब आग लग जाए। साधूराम बार-बार पानी पी रहा है। उसके अंतर्मन में आग लगी हुई है। वह आग नहीं बुझ रही। ऐसे कितना पानी पीएगा? आग तो बुझनी ही चाहिए। पानी से भी आग नहीं बुझती। कोई-कोई आग पानी से नहीं बुझती। कोई आग किसी भी चीज़ से नहीं बुझती। कोई आग जीवन भर नहीं बुझती।

नसीम अहमद, एक मुसलमान, रेलवे कर्मचारी, हाल बाज़ार वाली मस्जिद में जाने लगता है, फिर न जाने क्या सोचकर रुक जाता है। वह देखता है, अनेक मुसलमान मस्जिद में एकत्र हैं। नसीम अहमद अपने छोटे भाई की तलाश में घर से निकला है। उसका भाई सुबह का घर से निकला, अभी तक लौटा नहीं है। सुबह उसने खाना भी नहीं खाया। उसका अनुमान है कि शायद वह मस्जिद की ओर गया है। फिर न जाने वह क्यों रुक गया है। उसे अपना एक मित्र दिखाई दिया है। मस्जिद में जाने से पहले वह उस मित्र से मिलना चाहता है। नसीम अहमद का मित्र उसके साथ रेलवे में ही ड्यूटी करने वाला निरंजन सिंह है। निरंजन सिंह

उसके समीप आता है । दोनों हाथ मिलाते हैं और फिर एक-दूसरे की बाँहों में लिपट जाते हैं । नसीम अहमद निरंजन सिंह को साथ लेकर मस्जिद में चला जाता है । मौलवी नज़ीर अहमद नसीम को देखकर उससे मिलने आता है । नसीम उससे अपने भाई के बारे में पूछता है । वह बतलाता है कि उसका भाई शमीम 5-6 अन्य मित्रों सहित सुबह यहाँ आया था । काफी देर तक वे यहाँ बैठे बातचीत करते रहे और फिर दुआ माँगकर यहाँ से चले गए । जाते समय शमीम ने उससे कहा – "जिंदा रहे तो फिर मिलेंगे मौलवी साहब !" मौलवी ने कहा कि पहले तो उसने इस बात को हँसी में कही हुई बात कहकर टाल दिया परंतु उसके जाने के बाद अब तक वह शमीम की कही हुई बात याद कर रहा है । नसीम ने पूछा – "मगर वो गया कहाँ ?" मौलवी क्या बता सकता है । निरंजन सिंह को साथ लेकर नसीम अहमद भाई की तलाश में निकल जाता है । नसीम अहमद भी परेशान है और निरंजन सिंह भी । आखिर शमीम गया कहाँ ? मौलवी साहब को कही बात का क्या अर्थ है ?

जुलूस मलिका (महारानी) के बुत के सामने से गुजर रहा है । मैं देख रहा हूँ एक ग्रामीण 5-6 भैंसें लेकर जुलूस के पास से जा रहा है । मैं भैंसों की ओर देख रहा हूँ । भैंसों की कहानी याद कर रहा हूँ और हँस रहा हूँ । बात ही हँसने वाली है । भैंस की सवारी । ऐनी का गिरना । डायर का भैंस वाले को डांटना । हिंदुस्तानियों को गालियाँ । सभी हँसने वाली बातें हैं ।

अभी 5 बजने में 2 मिनट बाकी हैं, जब डायर का जुलूस मलिका के बुत से आगे निकल गया है । इस समय दुर्गियाना मंदिर की घंटियाँ बज रही हैं । लोग मंदिर में पूजा के लिए इकट्ठा हो रहे हैं । रामायण की कथा हो रही है । कथाकार बता रहा है – कैसे श्रीराम चंद्र ने रावण जैसे बली और अत्याचारी का अभिमान तोड़ा और सीता को वापिस लाए । हमेशा सत्य की ही जीत होती है । रामायण की कथा वह पहले भी कई दफ़ा सुन चुका है । प्रत्येक कथाकार यही कहता है – "हमेशा सत्य की

जीत होती है, झूठ हार जाता है ।" सत्य क्या है ? झूठ क्या है ? वह आज भी यही सोच रहा है ।

डायर क्या है ? केवल पद का भूखा । अपने पद और शान को बनाए रखने के लिए वह हिंदुस्तानियों पर अत्याचार करने को तैयार है । डायर रावण है । वह बदी का प्रतीक है । वह झूठ का चिह्न है । कथा सुन रहा हरिराम इन विचारों में मग्न है । घंटियाँ बज रही हैं । श्रद्धालु बड़ी संख्या में आ रहे हैं ।

डायर को नज़र आता है कि एक पुरबिया-सड़क पर खड़ा निरंतर उसकी ओर देख रहा है, देखता ही जा रहा है । डायर डरकर दूसरी ओर देखने लगता है । कोई साधारण व्यक्ति होता तो शायद वह न डरता परंतु वह पुरबिया अवश्य कोई विशेष व्यक्ति है । एकदम पहचाना हुआ चेहरा । डायर सोचता है कि यह पुरबिया कहीं महेसर राम तो नहीं । महेसर राम उसका बैरा था । बहुत आत्मीय और वफादार नौकर । पेशावर । उन्नीसवीं रेजीमेंट । उसे याद है कि वह नौकर उसकी कितनी सेवा किया करता था । कहता था – "मैं जीवन भर आपकी सेवा करूँगा ।" अब वह कहाँ है ? वह सामने एकटक उसकी ओर देख रहा है । वह अपनी दृष्टि हटा ही नहीं रहा । देखे ही जा रहा है ।

उसे कालू की भी याद आ गई । एक दिन वे शिकार पर गए । ऐनी के घोड़े के साथ कालू बहुत दूर निकल गया । बहुत खोजने पर बेहोश ऐनी मिली । डायर ने कालू को मरवा दिया । ऐनी ने बताया कि कालू उसे वृक्षों के झुण्ड के पास छोड़कर न जाने कहाँ चला गया था । उसके बाद दो-तीन भयानक दिखाई देने वाले व्यक्ति आए । उसके बाद क्या हुआ, इस बात का उसे कोई होश नहीं । डायर को विश्वास हो गया कि यह कालू की ही शरारत थी । वह उन बदमाशों से मिला हुआ था । डायर के मन में यह बात घर कर गई कि ऐनी पर बदमाशों के हमले के लिए कालू ही उत्तरदायी है तो उसने उसका नामोनिशान ही मिटा दिया ।

कुछ समय बाद महेसर राम और कुछ अन्य लोग कालू की लाश

लेकर घर पहुँचे । कालू मर गया था । महेसर राम की आँखें लाल थीं । वह क्रोध से कांप रहा था । वह यही सोच रहा था कि साहब ने कालू को मरवा दिया है और आज वह बदला लेने को तैयार था । डायर ने चतुरता दिखाई । उसने इस बात से इनकार कर दिया कि उसने कालू को कुछ कहा था । उसने कहा – "मैं घबराहट में घोड़ा भगाता जा रहा था । मुझे तो पता ही नहीं चला कब घोड़े ने कालू को गिरा दिया । अवश्य घोड़े से गिरकर ही वह मर गया होगा । मुझे इस बात का बहुत दुख है ।"

महेसर राम उस समय तो मान गया परंतु बाद में लोगों ने उसे बताया कि कालू की मौत में डायर का ही हाथ है ।

उसके बाद डायर कभी महेसर राम से आँख नहीं मिला सका । उसे डर था कि यदि महेसर राम को उसके गुनाह का ज्ञान हो गया तो वह उसकी जान ले लेगा ।

महेसर राम अपने बेटे का बदला लेने के लिए खड़ा है और डायर हिंदुस्तानियों से 10 अप्रैल को अंग्रेज़ों के हुए कत्ल का बदला लेने जा रहा है । महेसर राम और डायर दोनों बदला लेने के लिए बेचैन हैं । अब डायर के सामने कालू का मासूम चेहरा घूम रहा है । वह बेचारा मुफ्त में ही मारा गया । परंतु . . . शायद वह बदमाशों से मिला हुआ हो । इन हिंदुस्तानियों का कोई विश्वास नहीं । उसने अवश्य ही जानबूझकर ऐनी को वृक्षों के झुण्ड के पास ले जाकर उसे बदमाशों के सुपुर्द कर दिया होगा । वे बदमाश । वे भी हिंदुस्तानी ही होंगे । ऐनी ने बताया था कि उनके चेहरे बहुत भयानक थे । ऐनी ने यह भी बताया था कि कालू उसे झुण्ड के पास छोड़कर स्वयं भाग गया था ।

महेसर राम अभी तक वहीं खड़ा है । वह उसी तरह खड़ा रहेगा । उसमें इतना साहस कहाँ कि इतने लोगों के बीच उसे गोली मारे । वह कुछ नहीं कर सकता । डायर फुसफुसा रहा है – "महेसर राम बदमाश बेटे का बाप है ।" उसके साथ मेरा व्यवहार बिल्कुल सही था । वह जल्दी ही मर गया । यदि न मरता तो मैंने उसे कुत्तों के हवाले कर दिया होता ।

उसके अंग कटवा देता। कालू मर गया है। एक कुत्ता मर गया है। नहीं नहीं, एक साँप मर गया है। साँप मारना तो मेरा शौक है, बचपन का शौक।

कालू मर गया है। ऐनी बेहोश हो गई और जब होश में आई तो उसे कोई बात याद नहीं थी। यह बेहोशी कैसी थी? डायर अब तक समझ नहीं सका था कि ऐनी को उस समय किस तरह की बेहोशी का दौरा पड़ा था। वह बेहोश हो गई और वे बदमाश उसे उठाकर ले गए। रात भर न जाने क्या हुआ। फिर जब उसने ऐनी को जंगल में देखा तो वह बेहोश थी। बेहोशी? यह कैसी बेहोशी थी? कालू कहीं स्वयं ही तो... संभव है कालू स्वयं ही बदमाश हो।

महेसर राम उसका नौकर था। उसे एक अन्य नौकर याद आ रहा है। अल्लाहदाद। अल्लाह का नाम लेने वाला मुसलमान था। ईमानदार और वफ़ादार। पूंछ का रहने वाला। बेचारे को पागल कुत्ते ने काट लिया। पागल हो गया। एक रात जब डायर घर आया तो उसने नौकर को आवाज़ दी। वह भागा-भागा आया और उसने डायर को काटने की कोशिश की। पहले तो वह समझा कि शायद अल्लाहदाद ने आज भूल से शराब पी ली है परंतु जब उसने अल्लाहदाद की आँखों में वहशत देखी तो वह डरकर काँपने लगा। इससे पहले भी उसने कुत्ते के काटने से पागल हुए लोग देखे थे। इसलिए वह समझ गया। उसने झट से पिस्तौल निकाली और अल्लाहदाद के सिर को निशाना बना दिया। अल्लाहदाद उसी समय तड़पकर मर गया।

वह मुड़कर उसकी ओर देखता है। अब पुरबिया गायब है। उसके स्थान पर वहाँ अल्लाहदाद खड़ा है। उसी तरह डायर की ओर देख रहा है। डायर और भी डर जाता है। अल्लाहदाद का चेहरा पुरबिया से अधिक भयानक है। वह हैरान है कि अल्लाहदाद कहाँ से आ गया। महेसर राम तो अभी तक जीवित भी हो सकता है परंतु अल्लाहदाद तो मर गया था। उसको डायर ने अपनी पिस्तौल से मारा था। फिर वह सामने कैसे खड़ा है? अल्लाहदाद जीवित है। यह हो क्या रहा है? यह

क्या तमाशा है । संभव है अल्लाहदाद का भूत हो । भूत क्या होता है ? यह केवल हिंदुस्तानी ही जानते हैं । वह भूतों में विश्वास नहीं करता ।

अल्लाहदाद उसका नौकर था । अब उसे याद आ रहा है कि एक ख़ुदादाद भी था । अल्लाहदाद और ख़ुदादाद । एक ही अर्थ है । परंतु व्यक्ति दो थे । ख़ुदादाद मल्लाह था । जेहलम नदी में किश्ती चलाया करता था । ऐनी और डायर कई बार उसकी किश्ती में दूर तक सैर करने गए थे । एक दफ़ा ख़ुदादाद की किश्ती भंवर में फँस गई । डायर और ख़ुदादाद तैरना जानते थे परंतु ऐनी तैरना नहीं जानती थी । बेचारी मुश्किल में फंस गई । अगर ख़ुदादाद हिम्मत न करता तो ऐनी डूब जाती । बहुत कठिनाई से वह ऐनी को किनारे तक लाया । ऐनी उस ख़ुदादाद पर बहुत प्रसन्न हो गई । उसने उसकी जान बचाई थी । ख़ुदादाद को कहने लगी – "जो चाहो मांगो ।" ख़ुदादाद ने केवल इतना ही माँगा – "प्रतिदिन एक दफ़ा मुझे आपका दीदार हो जाना चाहिए ।" ऐनी ने इस बात को व्यर्थ बात मानकर हँसी में उड़ा दिया ।

मगर ऐनी ने हँसी में बात नहीं उड़ाई थी बल्कि वह रोज नदी किनारे आने लगी । बस,आती और ख़ुदादाद के साथ दो-तीन बातें करके हँसती हुई चली जाती । कभी-कभी डायर उसके साथ आता । प्राय: वह अकेली ही आती । धीरे-धीरे डायर को यह बात चुभने लगी । वह सोचता, ख़ुदादाद से बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए । उसे स्वयं ही ऐनी को प्रतिदिन आने से रोक देना चाहिए । वह बेचारी तो अपना वचन निभाने आती थी, ख़ुदादाद को ही शर्म आनी चाहिए । यह ठीक है कि उसने ऐनी की जान बचाई थी परंतु इस तरह रोजाना नदी किनारे बुलाना ठीक नहीं था ।

एक दिन डायर ने गुस्से में आकर कहा – "कल से ऐनी नहीं आएगी ।" ख़ुदादाद ने उत्तर दिया – "न आए ।"

डायर ने कहा – "तू आज उसे कह दे कि उसे कल आने की आवश्यकता नहीं ।"

उसने उत्तर दिया – "मैं क्यों कहूँ ?"

"तुझे कहना पड़ेगा।"

"मैं नहीं कहूँगा।"

"नहीं कहेगा ?"

"नहीं।"

"तो सोच लो !"

"सोच लिया है।"

डायर ने आवाज़ दी। 6-7 फौजी सिपाही आए और उन्होंने खुदादाद को उठाकर नदी में फेंक दिया। खुदादाद की किश्ती नदी के किनारे बँधी हुई थी और खुदादाद नदी के पानी में डूब रहा था। डायर दूर खड़ा तमाशा देख रहा था।

दूसरे दिन जब ऐनी खुदादाद से मिलने आई तो खुदादाद वहाँ नहीं था। अन्य मल्लाहों ने बताया कि कल से किसी ने उसे नहीं देखा।

अब डायर के सामने अल्लाहदाद के स्थान पर खुदादाद खड़ा है। उसे लगा कि यह भी उसकी नज़र का धोखा है। आज उसे सभी वे व्यक्ति दिखाई दे रहे हैं जो इस दुनिया से जा चुके हैं। खुदादाद भी जेहलम की भेंट चढ़ चुका है। उसे तो डूबते हुए भी उसने देखा था। वह अब जीवित कैसे हो सकता है ! यह कैसा व्यक्ति है ! कभी यह महेसर राम बन जाता है, कभी अल्लाहदाद और कभी खुदादाद। व्यक्ति कहाँ है, यूं ही नज़र का धोखा है।

महेसर राम पुरबिया। उसका बेटा कालू। ये जंगली लोग। पागल अल्लाहदाद। खुदादाद मल्लाह। जेहलम नदी। ये सभी उसकी आँखों के सामने घूम रहे हैं और वह बुदबुदा रहा है – "ये सभी हिंदुस्तानी हैं। ये सभी मेरे दुश्मन हैं। ये सभी मुझे मारना चाहते हैं। परंतु मैं इनके हाथों से नहीं मरूँगा। ये मुझे नहीं मार सकते। मैं इन सभी को मारकर मरूँगा। ये हिंदुस्तानी मर जाएँगे। संपूर्ण हिंदुस्तान समाप्त हो जाएगा, नष्ट हो जाएगा। संपूर्ण हिंदुस्तान को आग लग जाएगी।"

खुदादाद जैसा ही एक और हिंदुस्तानी था – प्रभाशंकर। यह

रावलपिंडी का प्रसिद्ध व्यापारी था और अब डायर को खुदादाद के स्थान पर प्रभाशंकर का चेहरा दिखाई देने लगा। प्रभाशंकर को कभी-कभी क्लब में आने की भी आज्ञा थी। सभी अंग्रेज़ अफसरों के साथ उसकी पहचान थी। सभी का यही मत था कि वह एक सभ्य और शिक्षित नवयुवक है। एक बार क्लब में एक पार्टी हो रही थी। बिजली के बल्ब जगमग कर रहे थे। नाच-गाना चल रहा था और व्हिस्की का दौर भी। वातावरण रंगीन था। तभी एकदम बिजली गुल हो गई। हर तरफ अंधेरा फैल गया। कुछ दिखाई नहीं देता था।

सभी लोग घबरा गए। एक-दूसरे को आवाज़ देने लगे। इस अंधेरे का लाभ उठाने के लिए प्रभाशंकर ने ऐनी का हाथ पकड़ लिया। पहले तो ऐनी ने वह हाथ डायर का ही समझा परंतु फिर उसे आशंका हुई। परंतु उसने कुछ भी न कहा। वह प्रतीक्षा करने लगी कि रोशनी हो तो वह प्रभाशंकर की मरम्मत करे। यकायक रोशनी आ गई। प्रभाशंकर भागकर पीछे हटा। डायर को उसके इस तरह भागने पर आशंका हुई। उसने ऐनी को पास बुलाकर पूछा। ऐनी ने प्रभाशंकर की हरकत के बारे में सभी कुछ बता दिया। डायर बाहर गया और एक हंटर उठा लाया। क्लब में भरी सभा में उसने प्रभाशंकर को हंटर से इतना मारा कि उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने बहुत मिन्नतें कीं परंतु किसी ने उसकी एक न सुनी। मार-मारकर उसे क्लब से निकाल दिया गया।

प्रभाशंकर ने अपने इस अपमान को चुपचाप सहन नहीं किया। उसने अदालत में डायर के विरुद्ध मुकद्दमा दायर कर दिया। मुकद्दमे का परिणाम तो कुछ न हुआ परंतु डायर को बहुत परेशान होना पड़ा।

एक दिन जब डायर मरी रोड पर घुड़सवारी कर रहा था, अचानक कोई घुड़सवार पीछे से आया और उसे धक्का देकर स्वयं भाग गया। डायर नीचे गिर गया परंतु वह उसका चेहरा न देख सका। डायर को बहुत चोट आई और उसे 10-15 दिनों तक अस्पताल में रहना पड़ा। डायर को पूर्ण विश्वास था कि उसे घोड़े से गिराने वाला प्रभाशंकर ही था या उसका कोई साथी।

ऐनी ने क्लब में तो प्रभाशंकर का नाम ले लिया था परंतु बाद में उसे मालूम हुआ कि अंधेरे में उसका हाथ पकड़ने वाला वास्तव में प्रभाशंकर नहीं अपितु एक अंग्रेज़ अफसर मार्टिन था। यह जानकर उसे बेहद खेद हुआ।

एक दिन डायर अपने एक अफसर के निमंत्रण पर रात्रिभोज के लिए उसके घर गया। अभी नौ ही बजे थे। वह अफसर के घर पहुँचा। उस अफसर का नाम राबर्ट्स था। राबर्ट्स की कोठी बहुत बड़ी थी और उसमें एक सुंदर बगीचा था। वह बगीचा डायर को बहुत पसंद था। कभी-कभी समय निकालकर वह घंटों इस बगीचे में बैठकर सोच-विचार करता था। बगीचे में बैठकर विचारी हुई बात अवश्य ही दमदार होती है यह उसका विश्वास था। उस दिन रात 9 बजे वह बगीचे में पहुँचा तो उसने देखा कि एक हिंदुस्तानी राबर्ट्स की बेटी से बातें कर रहा था। पौधों की ओट होने के कारण उन्होंने डायर को नहीं देखा था। डायर को उनकी बातें सुनाई दे रही थीं। लड़की अपने हिंदुस्तानी प्रेमी से कह रही थी – "मुझे अंग्रेज़ों से तो इतनी घृणा नहीं है परंतु ये ऐंग्लो-इंडियन तो मुझे जहर दिखाई देते हैं। ये वैसे भी जहरीले हैं।

"हमारे क्लब में जो भी ऐंग्लो-इंडियन आते हैं, वे बिल्कुल पत्थर हैं, उनमें इंसानों वाली कोई बात नहीं। मालूम है, तुम मुझे क्यों अच्छे लगते हो ? नहीं मालूम ? तुम हिंदुस्तानी हो। हिंदुस्तानियों में भी पंजाबी हो। और फिर पंजाबियों में भी पठान। तू कायर नहीं। कितना साहस करके तुम मुझसे मिलने आते हो। यहाँ मेरे घर में तुम्हारा इस तरह मिलने आना कितने साहस की बात है। तुम्हारी इसी बहादुरी पर मैं मरती हूँ। अब तू आखिरी बहादुरी भी दिखा दे।"

लड़की की बातें सुनकर डायर को गुस्सा आ रहा था। उसने अंग्रेज़ों को बुरा कहा था। ऐंग्लो-इंडियन की बेहद निंदा की थी। उसे केवल हिंदुस्तानी पसंद है। वे भी पंजाबी और उनमें भी पठान। पठान, जिन्होंने कितने ही अंग्रेज़, ऐंग्लो-इंडियनों, ईसाइयों को मौत के घाट उतार दिया

था । स्टीफेंस को एक पठान ने ही रेलवे स्टेशन पर मार दिया था । कर्नल मर्चेंट को भी पठान ने ही कत्ल किया था । उसने उसकी बाँहों में अंतिम साँस ली थी । और इसी तरह कैप्टन माइकिल और कैप्टन डेविड । ये अत्याचारी पठान । और अब एक पठान राबर्ट्स का वंश विनष्ट कर रहा था । उसकी बेटी को भगा ले जाने की योजना बना रहा था । पठान की बहादुरी पर वह लड़की मरती थी । मूर्ख कहीं की । डायर गुस्से से लाल-पीला हो रहा था । वह वहाँ से चला और भीतर पहुँच गया ।

कल के बाद उनकी भागने की योजना थी । दूसरे दिन डायर ने कुछ चमचे फौजी बुलाए । लगभग ये सभी सिक्ख फौजी थे । पहले उसने उन्हें हिंदुस्तानी इतिहास में से सिक्खों और पठानों की दुश्मनी की कथाएँ सुनाईं । फिर उस पठान के बारे में बात की जिसे उसने कल लड़की के साथ देखा था । उसने उस पठान को खोज निकाला था । सिक्खों को बताया कि वह पठान सिक्ख धर्म के विरुद्ध प्रचार करता है । बस, फिर क्या था ! सिक्ख क्रोधित हो गए । दूसरी रात वे राबर्ट्स के घर के समीप खड़े हो गए । पठान के आते ही उसे उन सबने पकड़ लिया । किसी ने लाठी मारी, किसी ने कुछ और । बेचारा पठान वहीं बेहोश हो गया । सिक्ख फौजी भाग गए । दूसरे दिन डायर ने राबर्ट्स को सारी बात बताई तो वह बहुत खुश हुआ । बेचारी राबर्ट्स की बेटी रातभर अपने प्रेमी की प्रतीक्षा करती रही ।

दो पठान परस्पर पश्तो में बातें करते हुए जा रहे थे । वे बस एक नजर डायर की कार पर डाल लेते थे । उन्हें मालूम नहीं था कि जुलूस क्यों निकल रहा है । किस उद्देश्य से कहाँ जा रहा है । वे हैरानी से देखते हैं और आगे बढ़ जाते हैं । डायर सोचता है कि ये पठान कितने भोले हैं । पठान और शराफ़त । इन दो बातों का कोई मेल नहीं है । पेशावर में उसने कितने ही पठान मित्र बनाए थे । उनकी सभाओं में भी वह गया था । थोड़ी-थोड़ी पश्तो भी सीख गया था । परंतु उसे इस बात का ज्ञान है कि ये पठान मौका मिलते ही धोखा देते हैं । ये कभी भी अंग्रेज़ों के मित्र नहीं बन सकते । ये पठान सर्वप्रथम हिंदुस्तानी हैं, फिर कुछ और ।

राम कौर बार-बार बाहर की ओर देखती है । उसका पति नहीं आया

है । बच्चे बाहर खेल रहे हैं । वे उसकी एक नहीं सुन रहे । वह फिर उन्हें आवाज़ देती है । छोटे बच्चे को गोदी में उठाकर स्वयं बाहर आती है । बड़े बच्चों को डाँटती है । उनको भीतर ले जाती है ।

अब बच्चे घर में हैं । चूल्हे पर दाल चढ़ा रखी है । छोटा बच्चा सो गया है । आटा गूँथकर रखा हुआ है । राम कौर आश्वस्त है । वह पीढ़ी पर बैठ जाती है । बच्चों को पढ़ने के लिए कहती है । वे कॉपियाँ और किताबें ढूंढ़ने लगते हैं । राम कौर पीढ़ी पर बैठकर पाठ करने लगती है । वह पाठ कर रही है । उसका पति अभी भी नहीं आया है । न जाने कहाँ चला गया है । पहले कभी बाज़ार में इतनी देर नहीं करता था । और न ही दोस्तों से गप्पें लड़ाने में इतना समय व्यर्थ गँवाता था । परंतु आज उसने बहुत देर कर दी है । पाठ करती हुई भी वह बार-बार बाहर दरवाजे की ओर देख रही है ।

मजीठ मण्डी बाज़ार में नगरपालिका का नल चल रहा है । पानी बहता जा रहा है । नल किसी से बंद नहीं हो रहा । सड़क पानी से भर गई है । चलना भी कठिन हो गया है । ऐसा प्रतीत होता है कि यदि कुछ देर और यह नल बंद न हुआ तो यहाँ एक नदी बन जाएगी । पानी घुटनों तक आ जाएगा । संभव है और भी बढ़ जाए । उनके लोग नल बंद करने का प्रयत्न कर रहे हैं । परंतु नल है कि बंद ही नहीं हो रहा है । नल बंद नहीं होगा । चलता रहेगा, चलता रहेगा । अभी तक नगरपालिका वालों ने भी इसे बंद करने का कोई प्रबंध नहीं किया है ।

एक बनिए का पुत्र नाथू कन्हैया के कटड़े वाले शराबखाने से शराब पीकर आ रहा है । वह पानी को देखकर कहता है – "मैं तो घर को चला था । यह कहाँ आ गया हूँ ? यह पानी है या शराब ? मेरे विचार में तो यह शराब है । यह रशीद खान भी बहुत चतुर है । इसने सारे शहर में शराब बहा दी है ताकि शहर के होश गुम हो जाएँ । कोई भी होश में न रहे और फिर रशीद खान की चाँदी ही चाँदी । अब क्या होगा ? सारा शहर शराब में डूब जाएगा । फिर न शहर रहेगा और न शहरवाले । केवल

शराब ही शेष रहेगी । शराब ही राजा होगी और वही प्रजा । अब अंग्रेज़ों का शासन नहीं रहेगा अपितु शराब का शासन हो जाएगा ।" घुटनों तक पानी में नाथू चल रहा है और आज उसे पानी में चलना अच्छा लग रहा है । वह इस पानी को पानी नहीं समझ रहा । उसके लिए तो यह शराब है । उसे तो यही प्रतीत हो रहा है कि यह शराब कन्हैया के कटड़े से सीधी मजीठ मण्डी आ रही है । अंजलि भरकर वह पानी अपने मुँह में डालता है । इसका स्वाद उसे बिल्कुल शराब जैसा लगता है । ऊँची आवाज़ में कहता है — "मजीठ मण्डी के निवासियों ! आज यहाँ शराब की गंगा बह रही है । आओ, इसमें नहा लो ।"

मैं अब भी जब डायर का चेहरा देखता हूँ तो मुझे डायर का बचपन याद आ जाता है । तब भी उसके चेहरे पर ऐसी ही भावनाएँ होती थीं । इसी तरह वह बच्चों के जुलूस निकालता था और लड़ा करता था । एक बार डायर ने रास्ते में घास चरती हुई एक गाय को देखा । न जाने उसे क्या सूझी, उसने गाय के पास जाकर गाय को दुहना शुरू कर दिया । बेचारी गाय सीधी थी । डायर ने दूध की धारा सीधी अपने मुँह में डाली और इस तरह काफ़ी दूध पी गया । इतने में गाय का स्वामी ग्वाला पहुँच गया । उसने डायर को पकड़ लिया । इससे पहले कि वह उसके एक-दो चपत लगाता, डायर झटका देकर स्वयं को छुड़ाकर भाग गया । ग्वालों ने जब लड़कों को लाठियाँ लेकर आते देखा तो वे डर गए । अब उन्हें ज्ञात हुआ कि ये लड़के तो अंग्रेज़ों के बच्चे हैं । उन्होंने अपनी जान बचाकर खिसकने में ही भलाई समझी । वे वापस लौटने ही वाले थे कि लड़कों की टोली ने उनपर हमला कर दिया । किसी के सिर पर चोट आई, किसी की पीठ पर और किसी की टाँग पर । फिर भी मुकाबला करने की बजाए भागने में ही उन्होंने भलाई समझी । वे भाग गए । डायर और उसके साथी लड़के जीत के नारे लगाते हुए लौटे । दूसरे दिन डायर ने अपने पिता से ग्वालों की शिकायत की । डायर का पिता कोई साधारण व्यक्ति नहीं था । बेचारे ग्वालों को थाने में बुलाया गया । उनको डाँटा

गया, डराया गया और जुर्माना भी किया गया । बेचारों ने माफ़ी माँगी । वचन दिया कि फिर कभी वे किसी अंग्रेज़ या ईसाई बच्चे को इस तरह से तंग नहीं करेंगे ।

एक बार डायर अपने स्कूल के खेलों में दूसरे स्थान पर आया । प्रथम कुमार रहा । कुमार था तो हिंदुस्तानी परंतु किसी "सर" की उपाधि वाले का लड़का । कुछ भी हो, डायर उसे केवल एक हिंदुस्तानी समझता था । और वह हिंदुस्तानियों को महत्त्वहीन समझता था । दो-तीन महीने बाद जब फिर दौड़ लगाने का दिन आया, उसे फिर परेशानी हुई । उसे अपने एक नौकर के लड़के से काम लेने का विचार आया । उसने नौकर के लड़के से कहा कि वह कुमार को इस तरह मारे कि वह दौड़ने के योग्य न रहे । नौकर का लड़का आयु में भी बड़ा था और इस तरह के कामों में भी निपुण था । अपने मालिक के बेटे को खुश करने के लिए यह काम करने को भी वह तैयार हो गया । स्कूल जाते समय बेचारे कुमार को नौकर के उस लड़के ने पीटा । परंतु कुमार भी चुपचाप रहने वाला नहीं था । उसने भी उत्तर दिया । फिर भी वह आयु में बहुत छोटा था । कितनी देर तक मुकाबला करता ! नौकर के लड़के ने कुमार की टाँग पर जोर से मारा और फिर भाग गया । बेचारा कुमार टाँग मलता हुआ स्कूल जाने की बजाए घर लौट गया । इस तरह उस दिन कुमार दौड़ में भाग न ले सका और डायर पहले स्थान पर आ गया ।

डायर का जुलूस चल रहा है । तस्वीरों का फ्रेम बनाने वाले कारीगर करम सिंह ने झट काम बंद कर दिया है । वह समझा, शायद उससे काम बंद करवाने के लिए लोग शोर मचाते आ रहे हैं । काम बंद करके वह दुकान से बाहर आ गया है और जुलूस देखने लगा । तस्वीरों के फ्रेम बनाते-बनाते करम सिंह की आयु बीत गई है परंतु वह समझ नहीं सका कि ये झगड़े किस बात के हैं, गोलियाँ क्यों चल रही हैं । वह तो अंदर बैठा फ्रेम बनाता रहता है । ग्राहक आते हैं और फ्रेम बनवाकर ले जाते हैं । बच्चा आए या बूढ़ा, वह उतनी ही कीमत लेता है । ईमानदार व्यक्ति

है । दो वक्त की रोटी कमा लेता है । बच्चों का पेट भर जाता है । वह तो बस यही जानता है कि मज़दूरी करनी भली है । मेहनत की कमाई खाना ही उचित है । यही उसका सिद्धांत है, यही उसका नारा है । कभी-कभी कुछ नवयुवक उसकी दुकान के पास से जाते हुए काम बंद करने को कह जाते हैं । उनके सामने वह काम बंद कर देता है । उनके जाने के बाद फिर अपना काम शुरू कर देता है ।

बाहर अभी तक शोर है परंतु करम सिंह ने अपना काम फिर से शुरू कर दिया है । उसे याद ही नहीं कि अभी ही वह दुकान खोलकर बाहर गया था, उसने एक बड़ा जुलूस देखा था, लोगों की भीड़ देखी थी । वह सभी कुछ भूल गया है । उसे केवल अपना काम याद है ।

जुलूस जा रहा है और एक मकान में बैठे हुए लोग जुलूस की ओर देखकर बातें कर रहे हैं —

डिप्टी कमिश्नर जुलूस के साथ नहीं आया। शायद उसे ड्यूटी-मुक्त कर दिया गया है । अब तो डायर ही कर्ता-धर्ता है । अमृतसर में अब डायर का राज्य है ।

एक तरह से मार्शल लॉ ही है । कमाल है कि अंग्रेज़ों को अवसर अनुसार जो भी उचित लगे, कर लेते हैं । इस समय ये लोग शहरवासियों को दबाना चाहते हैं, उन पर अत्याचार करना चाहते हैं, इसलिए इन्होंने शासन की बागडोर डायर के हाथों में दे दी है । अब डायर की इच्छा पर निर्भर है, जिसे चाहे पकड़कर बंद कर कहीं भी गोली चला दे । उसे रोकने वाला कोई नहीं ।

सुना है, इन्होंने कई घरों में छापा मारा है । घरों से कुछ नहीं मिला, फिर भी घरों में ताला लगा दिया है । संदेह में ही कई लोग गिरफ्तार कर लिए गए हैं । बेचारे नयाज़ के घर छापा पड़ा । वह तो घर पर नहीं था । उसकी कुछ नज़में पड़ी थीं, वही उठाकर ले गए । और उसकी पत्नी को भी थाने तक ले गए । उसने लाख कहा कि उसे अपने पति के बारे में कुछ मालूम नहीं कि वह कहाँ है, क्या कर रहा है, परंतु किसी ने उसकी

बात नहीं सुनी । थाने पहुँचकर पुलिस ने उससे कई तरह के प्रश्न पूछे । ऐसे प्रश्न जिनका पुलिस के साथ कोई संबंध नहीं था । बेचारी पर्दा करने वाली औरत को चार घंटे तक थाने में बिठाकर रखा । उससे कई बेकार बातें भी पूछी गईं ।

डायर का विचार है कि सभी लोग जलियाँवाला बाग में ही होंगे । और वह वहाँ पहुँचकर उन्हें गिरफ्तार कर लेगा । किसे गिरफ्तार करेगा वहाँ जाकर ? वहाँ कौन है ? वहाँ तो बेचारे अनपढ़ ग्रामीण एकत्र हैं । जिन्हें गिरफ्तार करना चाहता है वे घरों में ही काम कर रहे हैं । घरों में बैठे योजनाएँ बना रहे हैं ।

इसे रास्ते पर लाना चाहिए । वास्तव में आज तक इस डायर को कोई मिला ही नहीं जो इसकी अकड़ को खत्म कर सके । तभी तो यह इस तरह अकड़कर सारे शहर में घूम रहा है । हममें भी बहुत कम लोग हिम्मत वाले हैं । कोई माई का लाल नहीं उठता जो ऐसे बददिमाग अंग्रेज़ों की ख़बर ले ।

हममें से ही उठना चाहिए । परंतु यह काम केवल जोश से नहीं हो सकता । महात्मा गाँधी की नीति ठीक है । सहजता से ही कुछ हो सकता है । यदि कोई दुस्साहसी उठकर डायर को मार भी दे तो क्या होगा ? कुछ भी नहीं । अकेले डायर को मारने से तो हिंदुस्तान आज़ाद नहीं होगा । एक ही डायर नहीं, अनेक डायर हैं । सभी को मारना पड़ेगा । और इन सभी को मारने के लिए ताकत की नहीं, चतुराई की आवश्यकता है, लगन की आवश्यकता है, धीरज की आवश्यकता है ।

हिम्मत वाले लीडर भी यहाँ क्या कर सकते हैं ? उनको समाप्त करने के अनेक ढंग इस सरकार के पास हैं । डाक्टर किचलू का जोश क्या कम है ? जिस मंच से बोलता है वह मंच ही काँपने लगता है । हर वक्त मरने को तैयार रहता है । उसे देश की आज़ादी के लिए लड़ मरने के सिवाय और कोई लगन ही नहीं, परंतु उस बेचारे की लगन क्या करे ? उसे जलावतन कर दिया गया है । यही हाल डाक्टर सतपाल का है । यह

महात्मा गांधी

सरकार हर तरह का हथकंडा प्रयोग कर लेती है। यहाँ अधिक जोशीला व्यक्ति भी सफल नहीं है।...

मकान के एक कमरे में ये बातें हो रही हैं। इस तरह की बातें कई मकानों में हो रही हैं। यह रामसरन वकील का घर है।

रामसरन उस दिन उन वकीलों में भी शामिल था जो डिप्टी कमिश्नर के पास लाशों को जलाने की आज्ञा लेने गए थे। उसने अपने हाथों से कितनी ही लाशों को शीघ्रता से 4 बजे से पहले-पहले जला दिया था।

उन लाशों में एक 20-22 वर्षीय नवयुवक की भी लाश थी, जिसका कोई वारिस नहीं पहुँचा था। बहुत सुंदर नवयुवक था। साँसें समाप्त होने के बाद भी उसके चेहरे पर अजीब रौनक थी। उसकी जेब में एक चिट्ठी थी परंतु उस पर भी उसका नाम नहीं लिखा हुआ था। यह भी ज्ञात न हो सका कि वह चिट्ठी किसको संबोधित करके लिखी गई थी। लिखा था – "मेरे जीवन के स्वामी, मेरे मन को आशंका है। शायद हम जीवन साथी न बन सकें। न सही। इस दुनिया की नज़र में न सही। परंतु मैं तो बहुत पहले से आपकी साथी बन चुकी हूँ। यह साथ मृत्यु भी तोड़ नहीं सकती। मैं तुम्हें अपना स्वामी मान चुकी हूँ, जीवन तुम्हें अर्पण कर चुकी हूँ। आज शाम तक यदि जीवित रहे तो मिलेंगे। तुम्हारी... ।"

चिट्ठी पढ़कर रामसरन रोने लगा। उसने चिट्ठी अपनी जेब में रख ली। वह चिट्ठी अभी तक उसके पास है। शाम को वह अभागिन उसकी प्रतीक्षा करती रही होगी। "अगर जीवित रहे तो मिलेंगे।" उसने स्वयं ही तो लिखा था। उसे मालूम नहीं था कि उसकी ज़िंदगी का स्वामी तो चला गया था, इस दुनिया में नहीं रहा था।

यहाँ से थोड़ी दूर भगतांवाला गेट के पास एक मकान में 20-25 हिंदू, सिक्ख और मुसलमान इकट्ठे हुए हैं। इस सभा में यह निर्णय लिया गया है कि शहर की स्थिति की सूचना धर्मशाला में डॉ. किचलू को पहुँचाई जाए। एक लंबी चिट्ठी में संपूर्ण स्थिति को स्पष्ट रूप से लिखा

जाता है। तीन व्यक्तियों की ड्यूटी लगाई जाती है कि वे धर्मशाला जाएँ और किसी भी तरह डॉ. किचलू को चिट्ठी पहुंचाएँ। तीनों व्यक्ति तैयार हो जाते हैं। चिट्ठी उनको दे दी जाती है। ये तीनों व्यक्ति हैं — सोहन सिंह, रघुबीर दास और ध्यान चंद। मुहम्मद रफी चाहता है कि यह काम उसे सौंपा जाए। परंतु सभाप्रधान ने उसकी बात नहीं मानी। वह शायद कोई अन्य काम उसे सौंपना चाहता है। सोहन सिंह, रघुबीर दास और ध्यान चंद चिट्ठी लेकर चले जाते हैं। सभा का प्रधान दो अन्य व्यक्तियों को एक तरफ ले जाकर कुछ आदेश देता है और फिर वे भी चले जाते हैं। अब वह मुहम्मद रफी को एक तरफ ले जाता है। लंबे समय तक उससे बातें करता है। सभा में उपस्थित अन्य सदस्य उनकी कोई बात नहीं सुन सके। बातचीत के बाद मुहम्मद रफी सभी को सलाम करके नीचे उतर जाता है। नीचे उतरकर वह शीघ्रता से कदम बढ़ाता है। फिर भागने लगता है। फिर किसी गली में चला जाता है।

डायर के जुलूस को हाल बाज़ार में से गुजरे हुए काफी समय बीत चुका है परंतु अभी तक बाज़ार में सन्नाटा है। गिने-चुने व्यक्ति दिखाई देते हैं। एक बंदूकधारी पहरेदार डाकखाने के बाहर खड़ा है। डाकखाने के अंदर एक पोस्टमास्टर और तीन क्लर्क पास-पास बैठे हैं। सभी की बोलती बंद है।

डाकिया मुहरें लगा रहा है और डाकखाने के बाहर बैठा बंदूकधारी चौकीदार ऊँघ रहा है। वह रखवाली कर रहा है या सो रहा है? अगर कोई डाकखाने को लूट भी ले तो इसे क्या फर्क पड़ता है। इसकी ड्यूटी सिर्फ बंदूक लेकर डाकखाने के बाहर बैठना है। इस तरह का वातावरण था मानो सभी को फाँसी की सजा सुनाई गई हो।

राम बाग के समीप ही एक अखाड़ा है। उस अखाड़े में आज कुश्ती-मुकाबला है। पंजाब भर से पहलवानों को वहाँ इकट्ठा होना था, परंतु कुश्तियाँ नहीं हो सकीं। दो-तीन पहलवानों से घर नहीं बैठा गया। इसलिए अखाड़े में पहुँच गए हैं। यूँ ही एक-दूसरे पर दाँव लगाकर देख

रहे हैं । कभी एक नीचे गिर पड़ता है, कभी दूसरा और कभी तीसरा । इस तरह वे समय बिता रहे हैं ।

इन तीनों में एक गंजा पहलवान है । यह डायर को पहचानता है । डायर ने अनेक बार इस गंजे को अच्छे-अच्छे ईनाम दिलवाए हैं । इसे कभी-कभी घर भी बुलाता है । अच्छी मेहमाननवाज़ी करता है ।

इस गंजे को एक बार डायर ने बहुत कठिन काम बताया था । उसने वह भी कर दिया । तभी से डायर उस पर मरता है, उसकी प्रशंसा करता नहीं अघाता । गंजा अक्सर ही जालंधर जाता है । वहाँ उसका बड़ा भाई रहता है । कुछ समय पहले फौजियों को पहलवानी सिखाने का काम गंजे को पक्के तौर से मिल गया था । वह काम भी उसे डायर ने ही दिलवाया था ।

जालंधर का एक अन्य पहलवान अल्लाहरक्खा भी किसी समय में डायर के बहुत करीब था । एक बार किसी पार्टी में न जाने डायर ने उसे किस बात पर डांट दिया । वह डांट सहन न कर सका और सामने बोलने लगा । डायर क्रोधित हो गया और उसने अल्लाहरक्खा को एक चपत लगा दी । वह कहाँ सहन करने वाला था । उसने डायर को पकड़ लिया । उसने डायर की टाई को पकड़कर काफी देर तक उसे घुमाया । आखिर पार्टी में बैठे अन्य लोगों ने उसे छुड़ाया । यह डायर का घोर अपमान था । वह ब्रिगेडियर जनरल था और एक साधारण से पहलवान ने उसका अपमान कर दिया था । वह कैसे सहन कर सकता था । उस समय तो वह चुप रह गया परंतु उसने बदला लेने का पक्का निश्चय कर लिया । इसके बाद अल्लाहरक्खा डायर को कभी न मिला ।

डायर किसी को माफ़ करने वाला व्यक्ति नहीं । उसने बदला लेने के लिए गंजे के साथ दोस्ती की । उसे घर बुलाना शुरू किया । जब वह गंजे से बातें कर रहा होता तो अपने परिवार से कह देता कि उसके पास किसी और से मिलने के लिए समय नहीं है । परिवार भी हैरान था कि एक मामूली पहलवान को वह क्यों घंटों तक अंदर बिठाए रखता है । एक दिन उसने गंजे को अपने दिल की बात कह ही दी – "मैं

अल्लाहरक्खा से तेरी कुश्ती करवाऊँगा । तू यह दवा वाली सूई उसके बदन में घुसेड़ देना । सूई चुभने से उसे मामूली-सा दर्द होगा । यह दवा उसके ख़ून में पहुँच जाएगी और वह पहलवानी के योग्य नहीं रहेगा ।"

गंजा कैसे मना कर सकता था । वह तो डायर के अहसानों तले दबा हुआ था । उसने डायर का काम कर दिया । बेचारा अल्लाहरक्खा सदा के लिए अखाड़े से बाहर हो गया । अपनी बीमारी के कारण को वह आज तक जान नहीं पाया ।

गंजा अखाड़े में से बाहर आता है । साथियों से कहता है कि उसकी सेहत ठीक नहीं है । वह उदास है, उसे अपने किए पर पछतावा हो रहा है । वह निर्णय करता है कि वह आज डायर से नहीं मिलेगा । डायर से अब वह कभी भी नहीं मिलेगा । वह पहलवानी का कद्रदान नहीं अपितु इसका दुश्मन है । वह पत्थरदिल है । उसके दिल में किसी व्यक्ति, किसी कला, किसी कौशल के लिए कोई स्थान नहीं । वह झूठा है, पाखंडी है । इस तरह सोचता हुआ वह सुस्त कदमों से अपने घर की ओर चला जा रहा है ।

सुल्तानविंड गेट के समीप ही पीरू की डेयरी है । उसके पास सौ के लगभग भैंसें हैं । इस क्षेत्र के अधिकतर घरों में वही दूध पहुँचाता है । आज उसने समय से पहले ही दूध दुहना शुरू कर दिया है । उसे किसी ने बताया है कि आज शीघ्र ही अपना काम निपटा लेना, न जाने क्या हो जाए । परामर्श देने वाले व्यक्ति की बात तो उसने झट मान ली, परंतु यह नहीं पूछा कि क्या होने वाला है । अब जब पीरू ने भैंसों को शीघ्रता से दुहने को कहा है, साथ ही वह यह भी सोच रहा है कि न जाने क्या होगा । शहर में ऐसा क्या होने वाला है जिसका प्रभाव मेरी भैंसों पर पड़ेगा और वे दूध नहीं देंगी । उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा ।

इसी तरह शहर में लोग उदास भी हैं और खुश भी । शहर के आस-पास के गाँवों में उदासी का कोई निशान नहीं है । वे तो जानते ही नहीं कि शहर में क्या हो रहा है । छेहरटा और अमृतसर वाली जी.टी. रोड

पर इस समय बैलगाड़ियों की दौड़ हो रही है। किसानों के जवान बेटे बैलों को डंडे मारकर भगा रहे हैं। पक्की सड़क के साथ-साथ कच्ची सड़क भी भरी पड़ी है। बैसाखी मनाई जा रही है। धूल उड़ रही है। हँसी गूंज रही है। शोरगुल है। सड़क के दोनों तरफ खड़े दर्शक तालियाँ बजा रहे हैं। कुछ अधेड़ उम्र के व्यक्ति बैलगाड़ियों के पीछे-पीछे घोड़ों पर आ रहे हैं। कुत्ते गाड़ियों के साथ-साथ भाग रहे हैं। शाम हो रही है। सड़क पर कोई मोटर दिखाई नहीं दे रही और न ही कोई तांगा चल रहा है।

रेलवे लाइन के पास खड़े चार व्यक्ति बातें कर रहे हैं —

यदि यह गाड़ी सवारियों से भरी हुई है तो काम ख़राब हो जाएगा। हमने निर्णय किया है कि सवारियों से भरी गाड़ी को कोई हानि नहीं पहुँचाएंगे।... सवारी गाड़ी नहीं हो सकती। इस समय तो प्रतिदिन यहाँ से मालगाड़ी गुज़रती है। आजकल प्रतिदिन मालगाड़ियों में सेना का सामान जाता है। कल भी इस समय यहाँ से जो मालगाड़ी गुज़री थी उसमें सैनिक सामान ही था। इस सामान को नष्ट करके हम अंग्रेज़ों को काफी हानि पहुँचा सकते हैं।... सामान कैसे नष्ट करेंगे यह भी कोई पूछने वाली बात है। हमारे पास पेट्रोल किसलिए है। बस, आग लगा दो। आग लगाकर हम यहाँ से भाग जाएँगे। जब तक पुलिस यहाँ पहुँचेगी, हम अपने-अपने घरों में होंगे। बस, एक बात का ध्यान रखना आवश्यक है — बेचारे ड्राइवर और गार्ड की जान न चली जाए।... हम तो प्रयत्न करेंगे कि वे बच जाएँ परंतु यदि वे अंग्रेज़ों के वफ़ादार हुए तो उनका भाग्य।... आज मैं तो अपनी पत्नी से कहकर आया हूँ कि अधिक देर तक इंतज़ार न करना। क्या मालूम घर पहुँचेंगे या जेल।... जेल को भी अब घर ही समझना पड़ेगा। आज न गए तो दो दिन बाद पहुँच जाएंगे। यह आज़ादी की लड़ाई तो अब आज़ादी मिलने पर ही समाप्त होगी। घर बैठे-बैठे गुलाम जीवन जीने से तो गुलामी की ज़ंजीरें काटने के लिए जेल में जीवन व्यतीत करना अच्छा है।... नहीं नहीं, अब यह

योजना नहीं बदली जा सकती । तू ड्राइवर का हमदर्द मत बन । यदि तुझे उसके साथ इतनी सहानुभूति है तो जाओ अपने घर बैठो, हम स्वयं ही सभी काम कर लेंगे । यह बहुत मुश्किल काम है भाई साहब । तेरे जैसे भावुक व्यक्ति का यहाँ कोई काम नहीं । ड्राइवर को हम भी बचाना चाहेंगे । परंतु उसे बचाने के लिए हम अपनी योजना नहीं बदल सकते । अच्छा, जैसी तुम्हारी इच्छा । मैं तुम्हारे साथ हूँ . . . वह देखो, गाड़ी आ रही है । तैयार हो जाओ । अपना-अपना स्थान ले लो । पेट्रोल तैयार रखो । . . .

कुछ ही समय में मालगाड़ी वहाँ पहुँच जाती है । गाड़ी का एक डिब्बा पटरी से उतर जाता है । ड्राइवर छलाँग लगाकर उतर जाता है । गाड़ी को आग लग जाती है । लपटें उठने लगती हैं । धुआँ ऊपर उठने लगता है ।

डायर अभी जलियाँवाला बाग नहीं पहुँचा । कुछ ही मिनटों में वह और उसका जुलूस जलियाँवाला बाग पहुँच जाएंगे । फिर क्या होगा ? फिर क्या होगा ?

डायर का जुलूस अभी तक जलियाँवाला बाग नहीं पहुँचा ।

मुहम्मद इस्माइल अपने घर के आँगन में चारपाई पर लेटा हुआ है । उसकी कुतिया ने रंग-बिरंगे पाँच पिल्लों को जन्म दिया है । एक पिल्ला उसकी चारपाई के पास आकर बैठ गया है । इस्माइल अख़बार पढ़ रहा है ।

थोड़ी देर में कुतिया भी आ जाती है । सो रहा पिल्ला बिल्कुल नहीं हिलता, जैसे गहरी नींद में सो रहा हो । इस्माइल आशंकित होता है । वह पिल्ले को पकड़कर हिलाता है । पिल्ला नहीं हिलता । वह मर चुका है । इस्माइल हैरान है । कुतिया उसे भूसे वाले कमरे में ले जाना चाहती है । वह समझ जाता है । उसका पीछा करता हुआ भूसे वाले कमरे में पहुँचता है । वहाँ देखता है कि तीन अन्य पिल्ले भी मरे पड़े हैं । एक में अभी साँस बाकी है । इस्माइल देखता है कि कुछ दूरी पर एक काला साँप छिपने का प्रयत्न कर रहा है ।

इस्माइल सोच रहा है कि बेचारी कुतिया पर क्या बीत रही होगी जिसके पाँच बच्चे एक क्षण में ही उससे बिछड़ गए हैं । काला नाग अभी भी भूसे वाले कमरे में है । अवसर मिलते ही वह कुतिया को भी काट सकता है, फिर उससे भी लड़ सकता है । उसके दो अन्य साथियों को भी काट सकता है ।

वह सोचता है कि नाग उसके घर के कमरों और रसोई में भी जा सकता है । वह शीघ्रता से कमरे में जाता है और अपने बच्चों को चूमता है । फिर रसोई की ओर जाता है । पत्नी को अपनी बाँहों में जकड़ लेता है । कुतिया उसके पीछे-पीछे रसोई घर में आ जाती है । कुतिया अब तक रो रही है । इस्माइल अपनी पत्नी को सारी घटना बताता है । पत्नी भी उदास हो जाती है ।

किले में अभी तक सिपाही और नौकर-चाकर घूम रहे हैं । अंग्रेज़ स्त्रियाँ उनकी ओर देखती हैं, उनसे बातचीत करती हैं । कर्नल स्मिथ और श्रीमती इरविंग घास पर बैठे बातें कर रहे हैं और माइल्ज़ इरविंग और श्रीमती स्मिथ वर्दियों वाले कमरे में बैठे चोरी-चोरी मुलाकात का आनंद ले रहे हैं । लैविस और नोरा बरामदे में कुर्सियों पर बैठे गप-शप कर रहे हैं और स्टैला उनको छोड़कर बाहर चली गई है ।

खालसा कॉलेज के हॉल में म्यूजिक कंसर्ट था । प्रिंसिपल वादन ने कंसर्ट की अध्यक्षता करने के लिए माइल्ज़ इरविंग को बुलाया था । वह अपने पिता के साथ कंसर्ट देखने गई थी । कंसर्ट में जस्सी ने हीर गाई थी । जस्सी हीर गा रहा था और वह सुनती-सुनती सपनों की दुनिया में खो गई थी, जहाँ बस वह थी और उसका जस्सी । उसने जस्सी के बारे में अपने पिता से बात की परंतु उन्होंने कोई रुचि नहीं ली । कंसर्ट समाप्त होने पर एक छोटी-सी चाय-पार्टी हुई । उसमें जस्सी भी आया । श्रीमती इरविंग को उसने धीरे से कहा कि उसका परिचय वह जस्सी से करवा दे । श्रीमती इरविंग ने यह काम हँसकर कर दिया । उसे याद आया कि उस समय उसका जस्सी जलियाँवाला बाग में होगा । इस बात पर वह उदास हो जाती है ।

टहलती हुई स्टैला थोड़ी दूर चली जाती है । कर्नल स्मिथ और श्रीमती इरविंग को देखती है । हैरान रह जाती है । वापस लौट आती है । सोचती है, ये इस तरह एकांत में क्यों बैठे हैं ? इनको इस तरह यहाँ छिपकर बैठने की क्या आवश्यकता है ? फिर उसे स्वयं ही इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है और उसकी आँखें शर्म से लाल हो जाती हैं । वह सोचती है, ये बूढ़े हैं, जवान बेटे-बेटियों के बाप हैं, फिर भी इस तरह छिपकर प्यार करते हैं । प्यार उम्र का पाबंद नहीं है, किसी भी बात का पाबंद नहीं है । प्यार कभी भी हो सकता है । फिर उसे वे सभी व्यक्ति याद आ जाते हैं जिन्होंने वृद्धावस्था में प्यार किया । फिर उसे अपने पिता लैविस की याद आती है जिसका यह छठा विवाह है ।

आसमान फिर निर्मल हो गया है । बादल छंट गए हैं । हवा में भी पहले जैसी तेज़ी नहीं है । दूर क्षितिज की ओर देखने से अभी भी ज्ञात होता है कि आँधी आएगी, अवश्य आएगी । एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ आती है । किसी ने एक जोरदार डण्डा कुत्ते को मारा है । वह और अधिक भौंकने लगा है । कोई सिपाही कुत्ते के पीछे भागा है । भौंकता-भौंकता कुत्ता दूर भाग गया है । हँसते हुए 4-5 बच्चे न जाने किधर से आ गए हैं । उनके पास रबड़ का एक रिंग है । बच्चे अपने खेल में निमग्न हैं । उन्होंने उसे नहीं देखा । और वह भी बच्चों की ओर देखकर आगे बढ़ गई है । गर्मी के मौसम में ऐसी मखमली घास की कितनी आवश्यकता होती है ! वह इस मखमली घास का और आनंद लेने के लिए एक स्थान पर बैठ जाती है । खेल रहे बच्चे उससे काफ़ी दूर हैं । स्टैला महसूस करती है जैसे इन प्रेमियों को इस तरह का अवसर इससे पहले कभी नहीं मिला । और आज ये इस अवसर का पूर्ण लाभ उठा रहे हैं । न जाने फिर ऐसा अवसर कभी मिले या न मिले ।

अपनी कल्पना में स्टैला जस्सी को जलियाँवाला बाग में देख रही है । भीड़ में खड़ा वह भाषण सुन रहा होगा । उत्साह से उसके बाजू भी फड़क रहे होंगे । इंकलाब जिंदाबाद के नारों में उसकी आवाज़ भी

शामिल होगी । अंग्रेज़ों के प्रति उसकी नफ़रत और भी बढ़ गई होगी । परंतु फिर भी उसे अपनी स्टैला अवश्य याद आ रही होगी । वह प्रत्येक अंग्रेज़ से घृणा कर सकता है परंतु अपनी स्टैला से नहीं ।

स्टैला को खालसा कॉलेज के वार्षिक खेलों का दिन याद आता है । उस दिन वह जस्सी के निमंत्रण पर वहाँ गई थी । जस्सी ने अनेक खेलों में हिस्सा लिया परंतु दौड़ में तो उसका कोई सानी नहीं था । एक मील लंबी दौड़ वह पहले कभी नहीं जीता था परंतु उस दिन उसने बहुत विश्वास से अपने एक साथी से कह दिया था कि आज वह अवश्य जीतेगा । अब मील की दूरी समाप्त होने वाली थी और विद्यार्थियों की भीड़ एक स्थान पर लग गई थी । चीख-चीख कर वे अपने-अपने मित्र का उत्साह बढ़ा रहे थे । स्टैला का जस्सी जीत गया । लड़कों ने उसे उठा लिया ।

स्टैला को अब भी याद है कि उस समय उसकी बाँहें जस्सी को गले लगाने के लिए कितनी बेताब थीं । आखिर जस्सी उसके पास आ गया और दोनों गले मिले । आस-पास के लोग देख रहे थे । प्रोफेसर इस बदतमीज़ी पर नाक चढ़ा रहे थे । विद्यार्थी हँस रहे थे, तालियाँ बजा रहे थे । परंतु जस्सी को किसी की कोई परवाह नहीं थी ।

जुलूस अभी भी जलियाँवाला बाग तक नहीं पहुँचा । दो व्यक्ति जुलूस के पास से गुज़रे हैं । एक के हाथ में सफेद चादर में लिपटी हुई कोई वस्तु है । दूसरा व्यक्ति उसके साथ चल रहा है । दोनों कुछ बुदबुदाते जा रहे हैं ।

मैं कार में से बाहर देख रहा हूँ । मैंने मुर्दा बच्चे को ले जा रहे दो व्यक्तियों को देखा है । मैंने सड़क के एक कोने में बैठे एक कोढ़ी भिखारी को भी देखा है । अभी-अभी अपने पास से गुज़रने वाली एक पागल औरत को भी देखा है । मैंने लाठी टेककर चलते एक अर्धनग्न अंधे को भी देखा है । फिर मैं कार में से अपना सिर बाहर निकाल कर जुलूस के पिछले भाग को ध्यान से देखता हूँ । मैं काफ़ी देर तक बाहर देखता रहा । अब फिर मैं अपने स्थान पर बैठ गया हूँ । अब बाहर देखने का मन नहीं

है। बाहर कुछ भी नहीं। कोई व्यक्ति नहीं। कोई जीवित व्यक्ति नहीं। मुर्दा बच्चे को ले जा रहे दो व्यक्ति भी मुर्दा ही थे।

कई अकारण भी मर जाते हैं। घर से सब्ज़ी खरीदने निकलते हैं और रास्ते में गोली चल जाती है। वे गोली का शिकार हो जाते हैं। सब्जी खरीदने के लिए हाथ में लिए पैसे उनके हाथ से गिर जाते हैं। परिवार सब्ज़ी की प्रतीक्षा कर रहा है परंतु थोड़ी देर में उन्हें सूचना मिलती है कि न सब्ज़ी आएगी और न सब्ज़ी लेकर आने वाला। कुछ मौतें ऐसी भी होती हैं।

अभी-अभी जो नंगी औरत देखी है वह भी जीवित नहीं है। बिल्कुल नहीं, वह मर चुकी है। वह मुर्दा है। उसे मालूम ही नहीं कि वह नग्न है, उसके तन पर कोई भी कपड़ा नहीं है। लोग कहते होंगे कि वह पागल है। होगी, पागल ही होगी। परंतु वह पहले मुर्दा है फिर कुछ और। वह मर चुकी है, फिर भी घूम रही है।

और वह लाठी के सहारे चल रहा अर्धनग्न अंधा। यह ठीक है कि वह अंधा है, पर इससे भी ठीक यह है कि वह मुर्दा है। वह मुर्दा पहले है, फिर अर्धनग्न, फिर अंधा।

अपने पीछे वाला जुलूस का भाग, जो मैंने अभी-अभी देखा है, बिल्कुल मुर्दा लगा है। मुझे अनुभव हो रहा है कि यह मुर्दों का जुलूस चल रहा है। दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे मुझे मुर्दे ही मुर्दे नजर आ रहे हैं। जो भी व्यक्ति दिखाई देता है, मुर्दा ही लगता है।

डायर अपनी कार में देखता है। उसे अनुभव होता है जैसे इस कार में भी कोई जीवित नहीं है। ब्रिग्ज़ निर्जीव प्राणी की तरह लग रहा है। डायर अकड़कर बैठा है। ब्रिग्ज़ और डायर दोनों मुर्दा हैं। और मैं... मैं भी मुर्दा... नहीं नहीं, मैं मुर्दा नहीं। मैं जीवित हूँ। इस संपूर्ण शहर में सिर्फ मैं ही हूँ जो जीवित है।

एक मकान के चौतरे पर खड़े तीन नवयुवक इस तरह की बातें कर रहे हैं :

यार, जलियाँवाला बाग में तो पैर रखने को स्थान नहीं। मैंने भी चाहा था उस चहल-पहल को देखना, परंतु वहाँ तो केवल धक्के ही मिल रहे हैं। फिर मैंने सोचा कि बाज़ार की रौनक ही देख चलें।... बाहर तो कुछ भी नहीं। बैसाखी का दिन है, फिर भी इतना सन्नाटा। लगता ही नहीं कि आज कोई त्योहार है।... अरे, तू तो कहता था कि बैसाखी के दिन तेरा जन्म दिन है और तू पार्टी देगा!... पार्टी और आज? आज तो बेटा, हम तीन जो इधर खड़े हैं तो बचे हुए हैं, यही प्रभु की कृपा है। अभी कोई पुलिसवाला हमें गोली का निशाना बना दे तो हम उसका क्या बिगाड़ सकते हैं।... हमारे गाँव में उस दिन मालूम है क्या हुआ? पुलिसवालों की हमारे नाज़र सिंह से पुरानी दुश्मनी थी। एक दिन शाम को पुलिसवालों ने तीन-चार व्यक्तियों के सामने उसे गोली मार दी। बात यह बना ली कि नाज़र सिंह अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध प्रचार करता था।

नवयुवक बातें कर रहे हैं।

डायर का जुलूस मंजिल के समीप पहुँच गया है।

अस्पताल के एक वार्ड में अधिकतर वे बीमार हैं जो 10 अप्रैल को लाठियों या गोलियों से घायल हुए हैं। चमन लाल केवल दो दिन के लिए अमृतसर आया था, अपने विवाह का सामान खरीदने के लिए। 20 अप्रैल को उसकी शादी है। आज 13 अप्रैल है। उसका परिवार सामान सहित उसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा और चमन लाल यहाँ अस्पताल में पड़ा है।

एक दूसरा घायल नूरदीन है जिसकी आँख पर गोली लगी है। आँख तो चली ही गई है और उसके दिमाग पर भी इतनी चोट आई है कि वह अपनी स्मृति खो बैठा है। उसे अपने बीते समय के बारे में कुछ भी याद नहीं है। वह यह भी भूल चुका है कि उसे कब चोट लगी। उस समय वह कहाँ था। वह किसका बेटा है और कहाँ का रहने वाला है। नूरदीन तो उसके हाथ पर लिखा हुआ है परंतु उसे अपना नाम याद नहीं

है । अभी-अभी उसकी पत्नी उसे ढूँढ़ती हुई अस्पताल पहुँची है । नूरदीन को देखते ही वह चीख पड़ती है परंतु नूरदीन ने तो उसे भी नहीं पहचाना ।

एक अन्य बीमार अखबार बेचने वाला लड़का बिरजू है । अखबार बेचता-बेचता उस भीड़ के पास जा पहुँचा जिस पर गोली चलाई गई थी । इसकी जाँघ पर गोली लगी । उसकी जान तो बच गई है परंतु अब उसकी टाँग कभी काम नहीं करेगी ।

एक बेचारा बंत सिंह नाहक ही मारा गया है । वह दो भैंसें मण्डी में बेचने के लिए लाया था । भैंसें तो मण्डी में ही बँधी रह गई और वह शहर में घूमता हुआ पिटते हुए लोगों में जा पहुँचा । सिर पर लाठी लगी और सिर खुल गया । जख्म तो सिल चुका है परंतु फिर भी दर्द से उसकी जान निकल रही है ।

नूरदीन यह बात मानने को तैयार ही नहीं कि वह इस समय घायल है । वह कहता है —

"बिल्कुल बकवास है ! केवल बकवास ! इसे कौन अस्पताल कहता है ? यह अस्पताल है ही नहीं । मुझे कोई चोट नहीं लगी । मेरी कोई पत्नी नहीं । मेरा कोई बच्चा नहीं है । मैं अकेला ही इस दुनिया में आया हूँ और अकेला ही जाऊँगा ।"

अब बंत सिंह बात करता है —

"मैं यहाँ हूँ और मेरी भैंसें मण्डी में हैं । न जाने मण्डी में भी हैं या नहीं । अपने गाँव के एक साथी को सौंप आया था । संभव है, उसने उन्हें बेचकर पैसे कमा लिए हों और घर चला गया हो, या शराब पी रहा हो । पीने दो । पैसे मैं भी नहीं छोड़ूँगा । मेरे पैसे खाकर वह गाँव में नहीं रह सकता । भगवान कसम, पहली बार पिटा हूँ ।"

कुछ दूसरे बीमार भी बातें कर रहे हैं —

"यह सरकार भी अब कुछ ही दिन की मेहमान है । इस तरह का अत्याचार अधिक समय तक नहीं चल सकता । निहत्थे लोगों पर इस तरह लाठी चार्ज, गोलीबारी बुद्धिमानी की बात नहीं है । इनकी बुद्धि तो

घास चरने गई है । यह डायर समझता है कि जिस तरह सरहद पर लोगों को उल्लू बनाकर यह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ा रहा है, यहाँ भी ऐसा ही कर लेगा । अब ऐसा नहीं होगा । यहाँ पर तो मार दिया जाएगा ।... परंतु हममें से विद्रोही कितने हैं ? विद्रोही तो इन्होंने हमें जबरदस्ती बना दिया है । हममें से अधिकतर तो रास्ता चलते हुए गोली खा बैठे हैं । यह तो हमारी पुलिस और सरकार की ज्यादती है । उन व्यक्तियों पर गोली क्यों चलाई गई जिनके इरादे बुरे नहीं थे ? ऐसा कोई ऐलान नहीं किया गया था कि भीड़ मत लगाओ या नारे मत लगाओ । लोग सरकार का क्या बिगाड़ रहे थे । बस, एक स्थान पर इकट्ठे होकर नारे ही तो लगा रहे थे । नारे लगाना कोई जुर्म नहीं है । इतना अधिकार तो होना ही चाहिए ।"

यह अस्पताल है ।

और यह एक अख़बार का दफ्तर है ।

हाँ... ठीक है... राय राम सिंह ने क्या कहा है ?... राय राम सिंह ने अपने भाषण में कहा है — "अब हम इस सरकार की चतुराइयाँ नहीं चलने देंगे । यह इनका भ्रम है कि हमारे पास डॉ. किचलू और डॉ. सतपाल के बाद बगावत को हवा देने वाले नेता नहीं हैं । अमृतसर का प्रत्येक नागरिक बागी है ।... यह नोट कर लो ।... और हां, कातिब को बुलाओ । उसे कहो, शीघ्रता से लिखे । अब्दुल मजीद ने भी बहुत जोशीला भाषण दिया है... बृज गोपीनाथ भी बोल चुका है ।... हंसराज का भाषण मैंने कातिब को लिखवा दिया है । अब कौन गया है बाग़ में ? रामचंद ? ठीक है ।... कौन बोल रहा है... गुरबख्श राय ।" अपना भाषण शुरू करते ही उसने कहा — "अब समय आ गया है कुर्बानी देने का । अब केवल नारों से काम नहीं चलेगा । अब मरने के लिए तैयार हो जाओ ।"... लोग बहुत उत्साहित हैं ? ... कातिब स्वयं ही लिखने लगता है । मशीन निरंतर चल रही है । इश्तिहार, अख़बार-सभी कुछ छपता जा रहा है । कर्मचारी इधर-उधर भाग रहे हैं । कल यह अख़बार हाथोंहाथ बिकेगा । इसमें सभी समाचार होंगे । जलियाँवाला बाग में किए गए भाषण होंगे । अन्य बहुत कुछ होगा ।

एक हथकरघा कारखाने में आग लग गई है। पुलिस की शरारत है। ये शहर निवासियों को तंग कर रहे हैं। बेचारे कारखाने के मालिक की बहुत भारी हानि हुई है।... इसने नगरपालिका के चुनाव में सरकारी पिट्ठू के विरोधी की मदद की थी। यह आग उस सरकारी पिट्ठू ने लगवाई है। बैसाखी का दिन है। जलियाँवाला बाग में सभा चल रही है। और इधर किसी ने हथकरघा कारखाने को आग लगा दी है। इस पुलिस की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

अब डायर का जुलूस एक तंग गली में से जा रहा है। अब एक ही मोड़ रह गया है। फिर कुछ कदमों की दूरी पर जलियाँवाला बाग है।

वह बुर्केवाला व्यक्ति चला गया है। अब एक हिंदू औरत हमारी कार के पास से गुज़री है। उसने अपने दुधिया गोराई पर काले कपड़े पहन रखे हैं। बहुत सुंदर लग रही है। मैं सोचता हूँ कि उसने काले रंग के कपड़े क्यों पहने हैं? वह किसका शोक मना रही है? काला रंग तो शोक का रंग है। परंतु उसके चेहरे पर तो शोक नहीं, अपितु प्रसन्नता का भाव है। उसके चेहरे पर मुस्कराहट है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपने प्रेमी से मिलने जा रही है। उसके चेहरे की लालिमा उसके चेहरे की प्रसन्नता प्रकट कर रही है। तेज़-तेज़ कदम उठाती हुई वह किसी बहुत ही आत्मीय व्यक्ति से मिलने जा रही है।

फिर मेरी दृष्टि एक नवयुवक पर पड़ती है जिसने सफेद रेशमी कमीज़ और सफेद ही जीन की पतलून पहनी हुई है। वह नवयुवक सफेद कपड़ों में भी उदास दिखाई देता है। बहुत गंभीर चेहरा है। न जाने क्या सोच रहा है। काले कपड़ों वाली स्त्री प्रसन्न है और सफेद पोशाक वाला नवयुवक उदास।

'वक्त' अखबार का ज़मीमा बिक रहा है। उसमें शहर की परिस्थितियों का वर्णन है। संपूर्ण पंजाब की दशा बताई गई है। एक पुलिसवाला अखबार बेचने वाले लड़के को बुलाता है। उससे सारा अखबार छीन लेता है। अखबार वाला लड़का शोर मचाता है। उसकी

आवाज़ कोई नहीं सुनता । कोई पास नहीं आता । पुलिसवाले को वह एक ज़ोरदार धक्का लगाता है । सिपाही गिर पड़ता है । लड़का सारा अख़बार वहीं छोड़कर भाग जाता है । सिपाही शोर मचाता है । परंतु लड़का तो गायब हो चुका है ।

एक नव विवाहित दम्पती घंटाघर के समीप खड़ा है । लड़की पोज़ बनाकर खड़ी है और लड़का उसकी तस्वीर खींचने के लिए कैमरे में से उसे देख रहा है । लड़के ने अभी क्लिक नहीं किया है । पुलिस के दो सिपाही आकर उससे कैमरा छीन लेते हैं । लड़का बहुत हल्ला करता है, परंतु वे उसे कैमरा नहीं लौटाते । नव विवाहित दम्पती कैमरा छिन जाने के बाद दरबार साहिब के अंदर चला जाता है । दोनों परस्पर बातें कर रहे हैं —

"इन्होंने कैमरा क्यों छीन लिया है ? तस्वीरें खींचना कोई जुर्म तो नहीं !.. कैमरे में तो हमारे विवाह की तस्वीरें हैं । अब वे तस्वीरें कहाँ से लेंगे ? पुलिसवाले इन तस्वीरों का क्या करेंगे ?..."

नमक मण्डी के पास एक छोटे-से मकान में रजनी मुर्गियों को दाना डाल रही है । इस समय घर में वह अकेली है । उसका पति घर में नहीं है । उसका इकलौता बच्चा अपने नाना के घर गया हुआ है । मुर्गियाँ दाना खा रही हैं और वह अपने ही विचारों में मग्न है । उसको अपने पति की सभी बातें याद आ रही हैं जो वह गई रात तक करता रहा था । वह कह रहा था — "अब नौकरी का कोई भरोसा नहीं । अंग्रेज़ की नौकरी है, न जाने कब छूट जाए । मेरा तो विचार यही है कि मैं नौकरी छोड़कर मुर्गीखाना खोल लूँ ।"

सुलतान विंड के पास एक छोटे-से मकान के पीछे वाले कमरे में बैठी सोमावती उसी तरह अपनी डायरी लिख रही है । कभी-कभी लिखना बंद करके वह कंवल की प्रतीक्षा करने लगती है । कंवल अभी तक नहीं आया । वह बड़बड़ा रही है — "कंवल, आज उन्हें अवश्य साथ लेकर आना ... वह तुम्हें अवश्य मिल जाएंगे । ... ओ ... कंवल ... कंवल..."

साधूराम फायर ब्रिगेड पर ड्यूटी निभा रहा है । हथकरघा कारखाने की आग बुझाने अन्य कर्मचारी गए हैं । उसकी ड्यूटी फायर ब्रिगेड पर है परंतु उसका मन तो घर में है । उसका बच्चा बीमार है ।

हाल गेट के बाहर लगी हुई घड़ी । इस समय 5 बजकर 11 मिनट बता रही है । अब भी कुछ लोग घड़ी की ओर देख रहे हैं ।

सीढ़ियों वाले पुल के सामने कुएँ के पास एक अधेड़ व्यक्ति राहगीरों को पानी पिलाने का पुण्य कमा रहा है ।

"आज तुझे जलियाँवाला बाग में पानी पिलाना चाहिए था ।" — किसी ने उसे कहा ।

"नहीं, मैं 15 वर्षों से यहीं पानी पिला रहा हूँ । यह स्थान मैं नहीं छोड़ सकता । इस स्थान से मुझे स्नेह हो गया है ।"

और अब डायर का जुलूस जलियाँवाला बाग पहुँच गया है । जनरल डायर कार में से उतरता है । अब उसके पास नब्बे हिंदुस्तानी फौजी हैं । इनमें से पचास के पास बंदूकें हैं और चालीस के पास अन्य हथियार । बाकी व्यक्ति कार चलाने वाले हैं ।

रीहिल डायर को बाग का तंग रास्ता दिखाता है । अब डायर को मालूम पड़ता है कि इस तंग रास्ते में से उसकी हथियारों वाली कारें अंदर नहीं जा सकतीं ।

डायर भीतर जाता है । बहुत बड़ी संख्या में लोग एकत्र हैं । ऊँचे स्थान पर होने के कारण वह लोगों को बहुत आसानी से देख सकता है । सातवाँ वक्ता दुर्गादास भाषण दे रहा है । बृज गोपीनाथ की कविता अभी-अभी समाप्त हुई है । लोगों के हौसले बुलंद हैं । वे एक-दूसरे से बातें कर रहे हैं । इशारे कर रहे हैं । पसीना पोंछ रहे हैं ।

ऊपर चीलें मंडरा रही हैं । घटा छाई हुई है । आँधी आने वाली है । मंद-मंद हवा चलने लगी है । लोगों का पसीना सूख रहा है ।

डायर ने झट से हर तरफ देख लिया है । जलियाँवाला बाग के मैदान को, बाहर जाने के रास्ते को, दीवारों को, इर्द-गिर्द के ऊँचे मैदानों को । हर तरफ दृष्टि घुमाने के बाद वह स्थिति पर विचार करने लगा है ।

फिर आँखें मलता है। सामने लोगों की भीड़ है। जोशीले लोगों की भीड़। दुर्गादास भाषण दे रहा है। लोग बहुत ध्यान से उसकी बात सुन रहे हैं। बाहर कुत्ते भौंक रहे हैं। शायद सारे मुहल्ले के कुत्ते जलियाँवाला बाग के बाहर वाली गली में एकत्र हो गए हैं।

मैं डायर की ओर देखकर समझ गया हूँ कि उसने क्या निर्णय लिया है। उसने ब्रिग्ज़ के साथ कोई बात की है। फिर... फिर फौजी सिपाहियों को दाएँ-बाएँ खास-खास स्थानों पर भेज दिया है।

इशारा मिलते ही 25-30 हजार की भीड़ पर गोलीबारी शुरू हो जाती है। लोग डर जाते हैं। भागने लगते हैं। दुर्गादास लोगों को भागने से रोक रहा है। वह उन्हें बैठ जाने के लिए कह रहा है। ये वास्तविक गोलियाँ नहीं, नकली फायर हैं। परंतु लोग गिर रहे हैं। ख़ून बह रहा है। हाहाकार मची हुई है। घबराहट में लोग एक-दूसरे को पैरों तले रौंदते हुए बाहरी रास्तों की ओर भाग रहे हैं।

फौजी घुटनों के बल बैठ गए हैं और उन्होंने अपनी बंदूकें अपने कंधों पर रख ली हैं। वे फटाफट गोली चला रहे हैं। भगदड़ मची हुई है। हाय मर गया... ! चीखें... भागो... दौड़ो... गोलियों की बौछार ... ख़ून ही ख़ून... हर तरफ मौत... लाशों के ढेर... घायल लोग लाशों के नीचे... भयानक दृश्य... !

दूसरा कोई रास्ता दिखाई न देने पर लोग दीवारों पर चढ़ने लगे हैं। बंदूकों के मुँह उस ओर मोड़ दिए गए हैं। बहुत कम लोग दीवारें लाँघने में सफल हुए हैं। किसी के बाजू पर गोली लगी है, किसी की टाँग पर और किसी की पीठ पर।

घायल व्यक्ति लाशों से जुड़े हुए हैं। लाशों पर लाशें गिर रही हैं। घबराहट और डर के कारण ही अनेक लोगों के दिल की धड़कन बंद हो गई है। लोग एक-दूसरे को आवाज़ें दे रहे हैं, एक-दूसरे को ढूंढ़ रहे हैं। कोई बात मुँह से निकलने से पहले ही कोई पैर मुँह पर आ पड़ता है। बात मुँह में ही रह जाती है और प्राण-पखेरू उड़ जाते हैं। कोई किसी की

बात सुनने वाला नहीं, कोई किसी को देखने वाला नहीं । अपना भी होश नहीं है ।

डायर एक चट्टान की भाँति ऊँचे स्थान पर खड़ा संपूर्ण दृश्य देख रहा है । 5 बजकर 15 मिनट पर उसने फायरिंग का आदेश दिया था और अब 5 बजकर 25 मिनट हुए हैं । वह फायरिंग बंद करने का आदेश देता है । इतनी ही देर में उसने 1650 व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया था ।

डायर सन्तुष्ट है और प्रसन्न भी कि वह अपने उद्देश्य में सफल रहा है । पांच मिनट तक वह लोगों को तड़पते हुए, मौत से लड़ते हुए देखता है और फिर फौजी सिपाहियों को वापस राम बाग हेडक्वार्टर पहुँचने का आदेश देता है । ब्रिग्ज़ को उसने धीरे से कहा – "ये जहरीले साँप, ये जंगली कुत्ते !"

फिर डायर ब्रिग्ज़ को लेकर बाग से बाहर निकल जाता है ।

डायर चला गया है और मैं अभी बाग में ही हूँ । एक हज़ार के लगभग लाशें मैं देख रहा हूँ । और घायलों का तो कोई अंत ही नहीं । लोग अभी भी भाग रहे हैं । घायल भी मृतकों में शामिल हो रहे हैं ।

मैं एक लाश के पास रुक जाता हूँ । 32-36 वर्ष का एक नवयुवक । बहुत सुंदर चेहरा । आँखें खुली हुई । लाश मुझसे बातें करने लगती है । लाश मुझसे कहती है –

"मैं मर चुका हूँ । मुझे मरना नहीं था, यूं ही मर गया हूँ । मैं घर से जलियाँवाला बाग आने के लिए निकला था । मैं तो वैसे ही इधर आ गया । वास्तव में मैंने अपनी नन्ही बच्ची को सुबह कहा था कि मैं उसके लिए एक सुंदर-सी गुड़िया लाऊँगा । मैं उसके लिए गुड़िया लेने आया था । सभी दुकानें बंद थीं । मैंने सोचा, शायद घंटाघर के पास कोई दुकान खुली हो । यही सोचकर मैं इधर आया था, परंतु वहाँ भी कोई दुकान खुली नहीं थी ।

"मुझे नहीं पहचानते तुम ? मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ । एक मामूली क्लर्क । डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर का क्लर्क । मेरा नाम राम लाल है । चार दिन पहले मैं एक राम लाल था और आज दूसरा । आप कहोगे कि

क्या व्यर्थ बातें कर रहा है । मगर यह बात ठीक है । पहले मैं छोटा क्लर्क था और चार दिन पहले ही बड़ा क्लर्क हुआ था । मेरी पदोन्नति हो गई है । मेरे साथी अब मेरा पहले से अधिक आदर करते हैं ।

"मेरे पाँच बच्चे हैं । एक प्यारी-सी पत्नी है । मेरे बच्चे, मेरी पत्नी मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे । मैं तो नन्ही बच्ची के लिए गुड़िया खरीदने आया था । गुड़िया भी नहीं मिली । नन्ही बच्ची बार-बार अपनी माँ से पूछ रही होगी – 'पिता जी कब आएंगे ? मेरी गुड़िया लेकर कब आएंगे ?' पत्नी उसे बहला रही होगी – 'बस, आते ही होंगे । तेरी गुड़िया लेकर ही आएंगे ।'

एक अन्य लाश बोलती है –

"मेरा नाम मुख्तार अहमद है । मैं मरा नहीं हूँ । जीवित हूँ । यदि मैं मर भी चुका हूँ तो मुझ पर एक कृपा करना । मेरी बीवी को यह मत बताना कि मैं मर चुका हूँ । यह बात सुनकर वह अपनी जान दे देगी । मेरी जुदाई वह कभी सहन नहीं कर सकेगी । जानते हो, इसी 5 अप्रैल को मेरा निकाह हुआ था । निकाह के बाद वह अपने नैहर चली गई । उसके माता-पिता जालंधर में रहते हैं । मैं स्वयं उसे छोड़ने गया था । उसके माता-पिता ने मुझसे कहा था कि मैं 14 अप्रैल की सुबह उसे लिवाने के लिए जालंधर पहुँच जाऊँ । कल उसे लेने जालंधर जाना था । वह कल मेरा इंतज़ार करेगी । दिनभर इंतज़ार करेगी । परंतु मैं... मैं उसे नहीं मिलूँगा ।

"मेरे निकाह को केवल सात दिन हुए हैं । अच्छी तरह खुलकर बातें भी नहीं की अपनी बेगम से । बात तो एक तरफ, हमने एक-दूसरे को अच्छी तरह देखा भी नहीं । और अब इतनी जल्दी हमारी जुदाई हो गई है । तुम्हें मेरी कसम, अभी किसी को मेरे बारे में मत बताना । मेरे पिता को भी न बताना ।

"भूलना मत । मेरी बीवी को कुछ नहीं बताना । आमीन !"

मुख्तार अहमद की लाश के पास एक और लाश है – 16-17 साल के लड़के की –
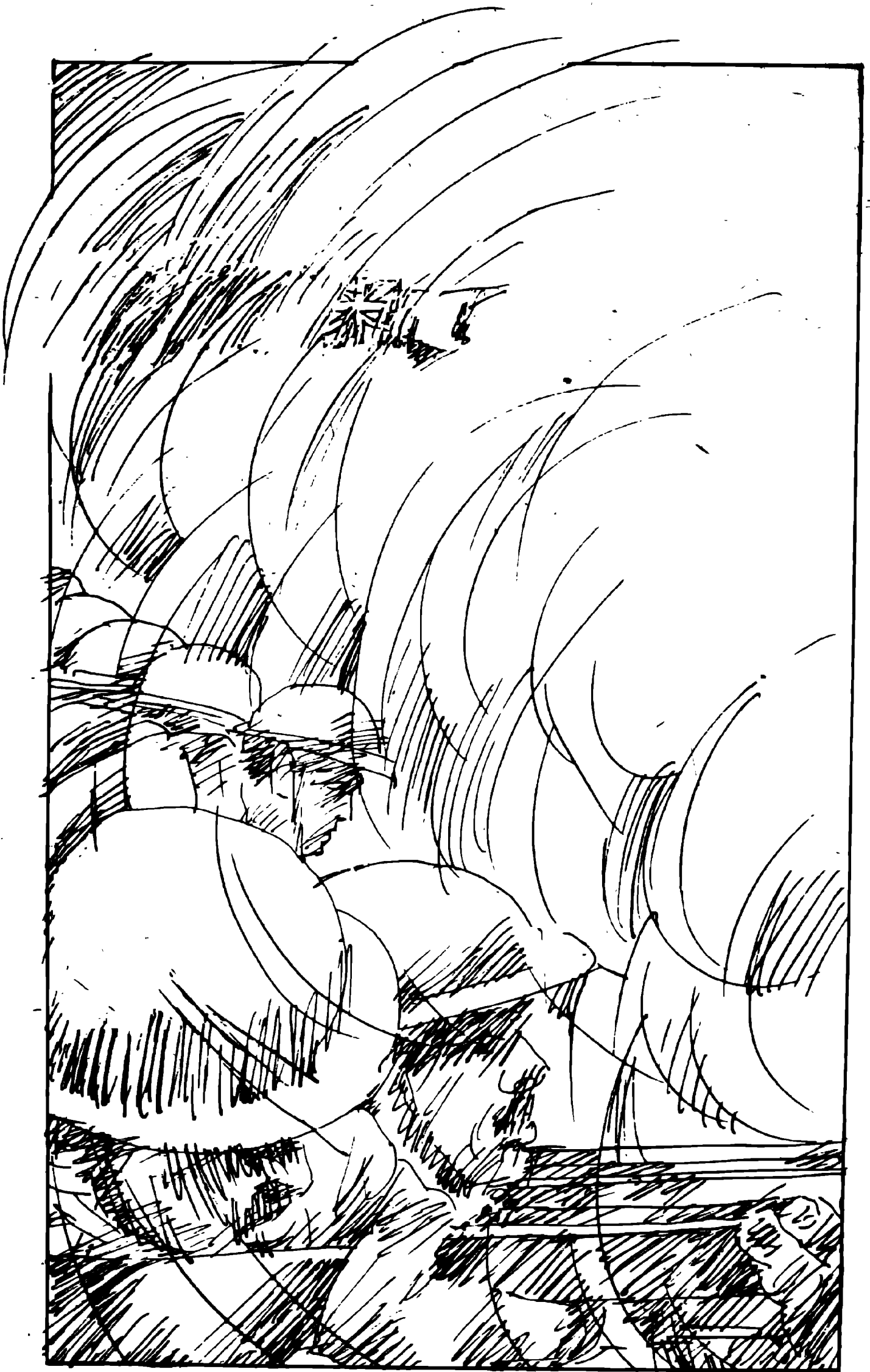
जनरल डायर की ओर से गोली चलाने का आदेश

"मेरा नाम बल्ली है। मुझे आपने अवश्य देखा होगा। यदि नहीं भी देखा हो तो मेरी तस्वीर अवश्य देखी होगी। गत वर्ष मेरी तस्वीर सभी अखबारों में छपी थी। 10वीं कक्षा की परीक्षा में मैं पंजाब भर में प्रथम रहा था। मैं एक अच्छा वक्ता हूँ। कई ईनाम जीत चुका हूँ। मेरी इच्छा थी कि मैं वकील बनूँ। परंतु इन इच्छाओं की क्या कीमत है! मैं तो अपने प्रिय नेताओं के भाषण सुनने आया था। मेरी जेब में एक छोटी नोटबुक है जिसमें मैंने भाषणों के मूल्यवान वाक्य नोट किए हुए हैं। सोचता हूँ कि ये वाक्य अपने किसी भाषण में प्रयुक्त करूँगा। परंतु अब... अब कहाँ प्रयुक्त करूँगा।

"मैं अपने माता-पिता की इकलौती संतान हूँ। मेरी मृत्यु का उन्हें बहुत दुख होगा। उन्हें कहना कि वे दुखी न हों। मेरी तरह यहाँ कई अन्यों के भी पुत्र मरे हैं। ठीक है न? मेरे विचारानुसार कोई-कोई ही बचा होगा। आप कैसे बच गए? आपको कोई गोली नहीं लगी?

"मुझे वकील बनना था। वकील बनकर अंग्रेज़ शासकों से पूछ तो सकता था कि उन्होंने मुझे क्यों मारा है। अब मैं पूछ भी नहीं सकता। ज़ालिमों ने मुझे सदा की नींद सोने पर मजबूर कर दिया है। चलो, इसी तरह ठीक है।"

अब मैं एक और लाश के पास खड़ा हूँ। लाश बोलने लगती है —

"मैं जस्सी हूँ। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है। अपनी स्टैला से बातें करनी हैं। तुम मेरी बातें स्टैला को बतला देना। स्टैला, मैं तुझसे मिलने गया था, परंतु किले के पहरेदारों ने तुमसे मिलने नहीं दिया। यदि अंतिम बार तुमसे मिल सकता तो सन्तुष्ट हो जाता।

"स्टैला, तुम्हें याद होगा, मैंने तुम्हें एक बार कहा था — प्रेम-कहानी कभी पूर्ण नहीं होती। तूने मुझसे रुष्ट होकर कहा था कि ऐसी बातें नहीं करते। मैंने तो सहजता से ही यह बात कही थी। और वह बात सच हो गई है। हमारा प्रेम पूर्ण नहीं हो सका। इसमें हमारा कोई दोष नहीं। तू कहा करती थी कि तेरा बाप कभी भी हमारा विवाह नहीं होने देगा। वह हिंदुस्तानियों से घृणा करता है। तेरा बाप जीत गया है।

"इन अंग्रेज़ों को कुछ तो सोचना चाहिए था। मुझ जैसे प्रेमियों को तो नहीं मारना चाहिए था। प्यार करने वाले तो किसी को कुछ नहीं कहते। बस, प्यार करने की आज़ादी चाहते हैं। इन अंग्रेज़ों को मुझ पर भी दया नहीं आई, तुझ पर भी दया नहीं आई।

"तुम्हारी माँ नोरा का अहसान मैं कभी नहीं भूल सकता। वही हमें मिलने का अवसर प्रदान करती रही है। हमारा प्यार तो अधूरा ही रह गया है। मैं चाहता हूँ कि उसका प्यार अवश्य सफल हो। नोरा बहुत अच्छी औरत है।

"स्टैला, मेरे मरने के बाद यदि तू कभी ज़ालिम डायर से मिली तो उससे अवश्य पूछना कि उसने मुझे क्यों मारा? मेरे जैसे अनेक निर्दोष प्राणियों को क्यों सदा की नींद सुला दिया?"

मैं जस्सी को जानता हूँ। बेचारा यूं ही मारा गया है। उसका संदेश मैं स्टैला को अवश्य दे दूँगा। परंतु नहीं, स्टैला को यह खबर मैं कैसे दे सकूँगा? यह बहुत कठिन काम है।

अब मैं एक और लाश के पास रुकता हूँ। यह कौन है?

"मैं... मैं डॉ. रोशन लाल हूँ। नमक मण्डी में प्रैक्टिस करता हूँ। सुबह 8 से 11 बजे तक और शाम को 4 से 7 बजे तक मेरे पास बीमारों की भीड़ लगी रहती है। आज मैं भाषण सुनने के लिए यहाँ सभा में आ गया था। मेरा अनुमान था कि मैं साढ़े पाँच बजे तक लौट जाऊँगा, परंतु ऐसा नहीं हो सका। मेरी डिस्पेंसरी में रोज की तरह आज भी लोग इकट्ठे हुए होंगे। परंतु... परंतु मैं वहाँ कैसे जाऊँ? एक बहुत ही कठिन केस है। आज 3 बजे मैं उस स्त्री को उसके घर पर ही देखकर आया हूँ। एक टीका तब लगाया था और दूसरा छह बजे लगाना है। अब मैं छह बजे का टीका कैसे लगा सकता हूँ? यदि उसे छह बजे टीका न लगा तो वह स्त्री मर जाएगी। उस टीके के बारे में और कोई नहीं जानता। वे बहुत गरीब हैं, इसलिए किसी दूसरे डाक्टर को भी बुला नहीं सकते। मुझे उनका इलाज मुफ्त करना था। परंतु अब क्या हो सकता है।

"मेरे बेटे ने आज मुझे इधर आने से मना किया था। वह कहता था, ऐसे समय लाठी चार्ज भी हो जाता है। मैंने उत्तर दिया कि दो-चार लाठियों से कुछ नहीं होता। परंतु इन्होंने तो लाठियों के स्थान पर गोलियाँ बरसाई हैं। गोलियों ने जान ले ली है। मुझे अपनी जान जाने का कोई दुख नहीं है। मेरे चार बच्चे हैं, पत्नी है, बूढ़ा बाप है। कोई बात नहीं। मेरा बेटा डाक्टरी के आखिरी वर्ष में पढ़ रहा है। उसे नौकरी मिल जाएगी। घर का खर्च वह उठा लेगा। परंतु आज क्या होगा?

"तुम्हें मेरी डिस्पेंसरी का पता है? तुम आज वहाँ जा नहीं सकते? मेरे मरीजों को बता दो कि आज मैं नहीं आऊँगा। उस स्त्री को भी टीका नहीं लगा सकूँगा। वह किसी और से टीका लगवा ले। नहीं तो वह मर जाएगी। मैं नहीं चाहता कि वह यूं ही मर जाए। वह बच सकती है, बहुत आसानी से बच सकती है।

"इन अंग्रेज़ों से कोई पूछे कि इस तरह गोलियाँ चलाने से भी कभी अंग्रेज़ी शासन कायम रह सकता है? यह बहुत भारी भूल करके अंग्रेज़ों ने स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार लिया है।

"यह क्या भाषण करने लगा मैं। मुझे अब क्या। मेरा तो इस संसार से नाता ही टूट चुका है। मेरे लिए अब सभी महत्त्वहीन हैं। मेरे लिए संपूर्ण संसार नष्ट हो चुका है।"

डाक्टर की लाश के नीचे 3-4 लाशें हैं, परंतु मैंने उनकी ओर नहीं देखा। मैं एक कदम आगे बढ़ाता हूँ। एक लाश के सिर में से बहुत अधिक ख़ून बह चुका है। उसकी छाती पर ख़ून से लथपथ एक कॉपी पड़ी है। मैं कॉपी उठाकर देखता हूँ। इसमें कविताएँ लिखी हुई हैं। मेरा अनुमान है कि यह किसी शायर की लाश है। यह विचार मेरे मन में आते ही लाश बोलने लगती है —

"हाँ, मैं शायर हूँ, महबूब सुल्तानपुरी। आप जो कॉपी देख रहे हैं, उसमें मेरी कविताएँ हैं। अधिकतर कविताएँ मैंने अपनी जमीला के लिए लिखी हैं, केवल उसे सुनाने के लिए। आज से 2 वर्ष पहले तक मुझे कोई भी नहीं जानता था। केवल जमीला को ही सुनाता था। जमीला के बिना

मेरे शायर रूप को कोई नहीं जानता था । फिर एक दिन जमीला भी मुझसे दूर चली गई । उसके माता-पिता ने उसका निकाह किसी अमीर सौदागर के साथ कर दिया । फिर वह अमृतसर छोड़कर कसूर चली गई । एक जमीला ही थी जिसे मैं कविताएँ सुनाता था । वह भी चली गई । फिर मैं किसे कविताएँ सुनाता ? फिर मैं किसके लिए कविताएँ लिखता ?

"मुझे मरने का कोई दुख नहीं । मेरा मरना तो बहुत साधारण बात है । मेरा तो कोई रोने वाला भी नहीं । मेरे कोई माँ-बाप नहीं, कोई भाई-बहन नहीं । मेरी एक ही जमीला थी, जो अब मेरी नहीं, अब वह एक सौदागर की पत्नी है । मैं उसे भूल चुका हूँ ।

"मेरी जमीला तो अब देश की आज़ादी है । शायद मेरी मौत से उस जमीला की दूरी कम हो जाए ।

"खैर, अब मैं तो मर चुका हूँ । मेरी मौत एक हादसा है । शायर की मौत कभी भी बड़ी दुर्घटना नहीं बनी । मेरी कॉपी तुम अवश्य अपने साथ ले जाओ । यह कापी अब मेरे किस काम की ! यदि हो सके तो आधी कॉपी फाड़कर जमीला को भेज देना । वह कसूर में रहती है । और शेष आधी 'वक्त' के संपादक को दे देना । ये कविताएँ मैंने उसी के कहने पर लिखी हैं और उसी को अर्पित है । अच्छा, आदाब अर्ज !"

महबूब की कविताओं वाली कॉपी मैं अपने पास रख लेता हूँ और अब एक लंबे-चौड़े डील-डौल वाले व्यक्ति की लाश के पास रुककर उसकी बातें सुनता हूँ —

"मैं एक सीधा-सादा ग्रामीण किसान हूँ । प्रति वर्ष बैसाखी के मेले पर शहर आता हूँ । कुछ पशु बेच लेता हूँ और कुछ खरीद कर ले जाता हूँ । इस दफा भी दो अच्छी दुधारू भैंसें खरीदने का विचार था परंतु इस बार मण्डी ही नहीं लगी । तनिक भी रौनक नहीं थी । आज मुझे लौट जाना था । बस, यूं ही दो-तीन साथी यहाँ खींच लाए । मुझे क्या मालूम था कि यह दुर्घटना घटित हो जाएगी । मेरे साथी भी मेरी जैसी दशा में ही होंगे । वो भी मेरी तरह ही मारे गए होंगे । इन गोलियों ने मेरी साँसें

समाप्त कर दी हैं, नहीं तो गत वर्ष छह व्यक्ति मुझे नहीं मार सके थे। मेरी जेब में इस समय पन्द्रह सौ रुपए हैं। यह रुपया तुम मेरी जेब में से निकाल लो। यह रुपया तुम मेरे घर पहुँचा देना। बंसो को मत देना। वह बहुत शैतान औरत है। वह सभी रुपये अपने कपड़ों पर ही खर्च कर देगी। ये रुपए तुम मेरी धन्नी को दे देना। उस बेचारी को बहुत आवश्यकता है और वह है भी बहुत शरीफ़। यह रुपए वह अपने लिए नहीं खर्च करेगी अपितु घर का सामान लाएगी या बच्चों पर खर्च करेगी।

"एक बात और पूछनी है आपसे। ये अंग्रेज़ कैसे यह सोचते हैं कि मुझ जैसे किसानों को इस तरह मारकर वे हिंदुस्तानियों को डरा लेंगे। ये सभी बातें झूठी हैं। कोई नहीं डरेगा। यह आग तो अब और भी भड़केगी। धन्नो से कहना कि मेरे बेटे को तैयार करे। ये फिरंगी भी क्या समझेंगे। मेरे बेटे मेरी मौत का बदला लेंगे। हम किसान बदला लेना कभी नहीं भूलते।

"हाँ सच, मैंने अपना नाम तो तुम्हें बताया ही नहीं। मेरा नाम दिलीपा है, दिलीप सिंह।"

अपना नाम बताकर लाश चुप हो जाती है। मैं आगे कदम बढ़ाता हूँ। पास-पास 3-4 ऐसी लाशें हैं जिनके चेहरे ख़ून से लथपथ हैं। फिर मैं एक और लाश के पास जाकर रुकता हूँ। वह लाश अपना परिचय इस तरह देती है —

"राजा राम पंसारी, चौक फरीद, अमृतसर। उमर सत्तर साल। पिता का नाम मनसा राम। मेरे सात जवान बेटे हैं। सभी बेकार हैं। मेरी एक छोटी-सी दुकान है। सभी उसी की कमाई खाते हैं। दूसरा कोई काम नहीं करते। मैं तो उन्हें बहुत समझाता हूँ कि सभी अपना-अपना काम करो परंतु कोई मेरी बात नहीं सुनता, मुझे तो वे समझते ही बेकार हैं। दुकान को भी मेरी नहीं, अपनी ही समझते हैं। वे यह बात भी नहीं समझते कि यह दुकान मैंने पचास वर्ष की मेहनत से चलाई है, ख़ून-पसीना एक किया है। और अब जब यह दुकान थोड़ी-बहुत कमाई देने लगी है, इस

पर उन्होंने अधिकार जमा लिया है । मुझे कहते हैं कि अब आप चाहें तो दुकान पर नहीं आएं । मैं दुकान पर क्यों न आऊँ ? मेरी दुकान है । साँसें शेष रहने तक मैं दुकान नहीं छोड़ूँगा ।

"सत्तर वर्ष के मुझ बूढ़े को मारकर इन अंग्रेज़ शासकों को क्या मिला ! जीवित होता हुआ भी मैं मृतकों जैसा ही हूँ । दुकान से घर, घर से बाज़ार, बाज़ार से घर और इस तरह दूसरे दिन फिर घर से दुकान । यही मेरा नित्यकर्म था । मेरे पास तो सरकार का विरोध करने का भी समय नहीं था । मैं बागी भी नहीं था । लोगों को भड़काता भी नहीं था । फिर भी मुझसे इस तरह का व्यवहार किया गया है । 70 साल के बूढ़े को मारने से क्या लाभ !

"यदि संभव हो तो मेरी मौत की खबर मेरी पत्नी और मेरे पुत्रों को दे देना । परंतु आप किस-किस की मौत की खबर पहुँचाओगे ? यहाँ तो लाशों का ढेर है । अच्छा, आप सुखी रहो ।"

मैं देखकर हैरान हो रहा हूँ । मरने वालों में अधिकतर वे लोग हैं जो यूं ही घूमते-घूमते इधर आ गए थे, जिनका राजनीति से कोई संबंध नहीं था, जिन्होंने कभी विद्रोह में भाग नहीं लिया था, जो अंग्रेज़ सरकार के शत्रु नहीं थे ।

अब एक अन्य लाश से मिलो —

"मैं मलिक सतनाम सिंह हूँ । मेरा गाँव पट्टी है । वहाँ मेरी जमीन है और मैं खेती करता हूँ । मेरा छोटा बेटा यहाँ सरकारी नौकरी करता है । मैं उसी से मिलने आया था । मैंने सोचा कि बैसाखी भी देख आऊँगा और बेटे से भी मिल लूँगा । अभी 15-20 दिन पहले मेरे घर एक पौत्र का जन्म हुआ है । मेरे बेटे ने खुशी मनाई है । मैं इन खुशियों में भी शामिल हुआ था । थोड़े दिन बहुत अच्छे बीते हैं । हमारे लिए तो आज का दिन भी बुरा नहीं था । सवेरे-सवेरे लुधियाना से तार आया कि मेरे बड़े बेटे के घर एक लड़के ने जन्म लिया है । शादी के 10 साल बाद उसके घर बच्चा पैदा हुआ है । यह उनका पहला बच्चा है ।

"बैठे-बिठाए यह क्या हो गया ? यह मौत कितनी अचानक आई है ! मैंने तो अभी मरने की कोई तैयारी नहीं की थी । इन अंग्रेज़ों ने क्या किया ? यह कौन-सा ढंग है बगावत को दबाने का ? पछताएँगे ये लोग । जितना इन अंग्रेज़ों ने हम लोगों को तंग किया है, उससे कहीं अधिक ये तंग होंगे ।

"मुझे अपने मरने का इतना दुख नहीं है परंतु अंग्रेज़ों की इस हरकत का बहुत दुख है । मेरी आंतरिक इच्छा है कि सभी हिंदुस्तानी मिलकर इस-अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाएँ और इन अंग्रेज़ों को शिक्षा दें । मुझे विश्वास है कि हिंदुस्तानी अब जागृत हो चुके हैं और अब वे आज़ादी प्राप्त करके ही दम लेंगे ।

"अच्छा जी, सभी को सत श्री अकाल !"

मैं एक अन्य लाश देख रहा हूँ । यह बूढ़े अब्दुल रहमान की लाश है । उससे लिपटी हुई लाश उसके पाँच वर्षीय पौत्र की है । वह पौत्र को बहलाने इधर आया था । पौत्र को बहलाता हुआ उसके साथ ही दूसरी दुनिया में चला गया है । अब्दुल रहमान का कन्हैया के कटरे में एक ढाबा है । बहुत चलता है वह ढाबा । इसके ढाबे की रोटी बहुत प्रसिद्ध है । लोगों का कहना है कि रशीद खान के शराबखाने में शराब पीओ और फिर अब्दुल रहमान के ढाबे पर खाना खाओ । रशीद खान यदि शराब न बेचता तो कभी का लुट चुका होता । उसका तो काम ही शराब का है । परंतु अब्दुल रहमान केवल ढाबे का ही काम ईमानदारी से करता है । ईमानदार होने का उसे क्या लाभ मिला ? अंग्रेज़ों की गोली ने उसे भी माफ नहीं किया । वह पौत्र के साथ ही मर गया है । अब्दुल रहमान के बेटे को बहुत दुख होगा । वह अपने पिता से बहुत प्यार करता है ।

और अब मेरी दृष्टि एक और लाश पर है । यह लाश भाई सुजान सिंह की है । भाई सुजान सिंह । मैं उन्हें भी पहचानता हूँ । यह शहीदों के गुरुद्वारे के ग्रंथी हैं । बहुत ही गुरमुख व्यक्ति हैं । यह मर चुके हैं परंतु फिर भी इनके चेहरे पर एक लालिमा है । कितना प्रभावशाली व्यक्तित्व

है ! लंबी सफेद दाढ़ी । नीले रंग की पगड़ी । काली अचकन । इन जैसी ही इनकी पत्नी है । दिनभर गुरुद्वारे में सेवा करती है । आने-जाने वालों से मीठा बोलती है, हर तरह से उनकी सहायता करती है ।

मुझे महसूस होता है जैसे इस समय भी भाई सुजान सिंह जी के होंठ हिल रहे हैं । जैसे वह इस समय भी रहिरास साहब का पाठ कर रहे हैं और मैं मन ही मन कह रहा हूँ – 'ऐसे महान पुरुष मर कर भी नहीं मरते ।'

अब मैं एक 9 वर्षीय बालक की लाश देख रहा हूँ । बालक का नाम मदन है । बेचारा मदन जलियाँवाला बाग में अपने पिता को ढूँढ़ने आया था । सुबह का घर से गया हुआ उसका पिता शाम तक घर नहीं लौटा था । मदन की माँ चिंतित हो गई थी । इसीलिए उसने मदन को जलियाँवाला बाग में भेजा था । उसे क्या मालूम था कि मदन भी वापस नहीं आएगा । मदन को उसका पिता भी न मिला और वह माँ को यह बताने लौट भी न सका । संभव है, उसके पिता की लाश भी कहीं लाशों के ढेर के नीचे दबी हुई हो । यहाँ क्या पता चलता है । लाश ढूँढ़ना कोई आसान काम नहीं ।

और यह एक पहलवान की लाश है । मैं इसे भी पहचानता हूँ । इसका नाम शरीफा है । शरीफा के मन में बहुत इच्छाएँ थीं । अभी वह रुस्तमे-हिंद बनने का सपना देख रहा था । परंतु उसके सपने अधूरे ही रह गए । मृत्यु ने उसे यकायक दबोच लिया । बेचारा क्या करता । उसके वश में कुछ भी नहीं था । कुश्ती मुकाबले में तो वह कभी नहीं हारा था, परंतु मौत के सामने वह खड़ा न हो सका । वह हार गया ।

और यह दूले धोबी की लाश है । लाश के पास ही उसकी कपड़ों की गठरी पड़ी है । बेचारा घर से तो लोगों से कपड़े लेने ही निकला होगा । कपड़े इकट्ठा करता-करता बाग में आ पहुँचा । दूले ने सपने में भी नहीं सोचा होगा कि इस तरह गोली चल जाएगी और वह गठरी

सहित बाग में ही रह जाएगा । धोबिन बेचारी उसकी बाट जोह रही होगी । बाग में आना बेचारे धोबी को कितना भारी पड़ा है ।

और यह तो किसी माँगने वाले फकीर की लाश लगती है । भीख में मिले हुए पैसे उसके इर्द-गिर्द बिखरे हुए हैं । बेचारे ने कितनी मेहनत से ये पैसे इकट्ठे किए होंगे । इन पैसों से आज उसके घर का चूल्हा जलना था । फ़कीर अब घर नहीं जाएगा । और आज उसके घर खाना भी नहीं बनेगा । फ़कीर के चेहरे पर कितनी शांति दिखाई दे रही है !

फिर मुझे उस टीन खड़काने वाले लड़के की लाश दिखाई देती है । वह दिनभर मीटिंग का ऐलान करने वाले लोग इकट्ठा करता रहता है । मुझे उस पर दया आ रही है । दिनभर इतना परिश्रम करता रहा और शाम को मौत की गोद में सो गया । यह टीन खड़काने वाला लड़का है इसे कोई नहीं भुला सकेगा । जब भी लोग जलियाँवाला बाग की इस ख़ूनी साके (घटना) को याद करेंगे, यह लड़का अवश्य याद आएगा ।

यह फोटोग्राफर है, कैमरा इसके गले में है और यह मर चुका है । यहाँ पर वह अखबारों में देने के लिए नेताओं की तस्वीरें लेने आया होगा । इसने घबराए हुए लोगों की तस्वीरें भी खींची होंगी । परंतु क्या लाभ ? इसे तस्वीरें खींचने का क्या लाभ हुआ । बेचारा मर ही गया है ।

और यह सूरदास ? नित्य स्वर्ण मंदिर की परिक्रमा में कीर्तन करता है ? यह तो भागने का प्रयत्न भी नहीं कर सका होगा । लोगों ने इसे पैरों तले कुचल कर ही मार दिया होगा ।

मैं लाशों के बीच में खड़ा हूँ । एक अद्‌भुत दृश्य मैं देख रहा हूँ । एक अद्‌भुत शोर सुन रहा हूँ । अभी तक लोग भाग रहे हैं । अभी तक आवाज़ें आ रही हैं । मैं सुन रहा हूँ —

चीखें... शोर... हाय-हाय... मर गया । मुझे बचाओ । मुझे डाक्टर के पास ले चलो, मैं बच सकता हूँ ।... यदि मैं अब बच गया तो इस डायर को नहीं छोड़ूँगा, इससे गिन-गिन कर बदला लूँगा । इसकी जान ले लूँगा ।... कितने मरे हैं ? कौन-कौन मरा है ? मेरे साथ मेरा बच्चा था, वह तो बच गया है न ? तुम कौन हो ? तुम कैसे बच गए ? ... मैं तो

समझा था कि मैं मर चुका हूँ । मैं बच गया हूँ । मैं जीवित हूँ । मैं घर जा सकता हूँ । मेरी पत्नी बहुत प्रसन्न होगी । मैं जीवित हूँ... हा हा हा... हू हू हू... बोलो बोलो... कोई नहीं बोलता, कोई नहीं रोता, कोई नहीं हँसता, अब तो गोलियाँ नहीं चलेंगी ? आओ, भाग चलें, न जाने फिर गोलियाँ चलने लगें । डायर को खेद होगा कि कुछ लोग बच गए हैं । वह तो सभी को मारना चाहता था । उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हुई... डायर को बुलाओ, फिर गोली चलाए, फिर गोली चलाए... नहीं नहीं, अब गोलियाँ नहीं चलनी चाहिए । उसे रोककर हम पर दया करो । हमने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा । हमसे किस बात का बदला ले रहा है ? उसे कहो, अब गोली न चलाए... पानी, पानी, मुझे पानी पिलाओ । कोई मुझे पानी पिलाओ, मैं बच सकता हूँ । कोई नहीं पानी पिलाने वाला ? ... मुझ पर इतना भार क्यों है ? उठो उठो, मेरे ऊपर से उठ जाओ । मैं मर रहा हूँ और तुम मुझ पर और अधिक भार डाल रहे हो ? हटते क्यों नहीं ? तुममें प्राण नहीं है ? हैं हैं, तुम... तुम तो मर चुके हो ! मैं लाशों के नीचे दबा हुआ हूँ । मैं कैसे बच गया ? इतनी लाशों के नीचे दबकर भी बच गया हूँ ।... मेरा ख़ून बह रहा है । कितना ख़ून बह चुका है । कोई डाक्टर बुलाओ, मेरा ख़ून रोको । केवल कुछ बूंदें ही ख़ून की बाकी बची हैं । फिर मैं मर जाऊँगा । मुझे बचाओ, मुझे बचाओ ।... हाय... हाय... हा हा... चीखें... मैं बच जाऊँगा, मेरी चिंता न करो, मैं ठीक हूँ, मैं नहीं मरूँगा । सामने उस बूढ़े को बचाओ । उसे उठाकर ले जाओ, नहीं तो वह मर जाएगा । मैं अभी नहीं मरने वाला । मैं बच गया हूँ । उस वृद्ध का जीवन अधिक मूल्यवान है । वह देशभक्त है । वह अभी भी जीवन में बहुत काम कर सकता है । उसे बचा लो... शीघ्र घायलों को सँभालो । फिर कठिनाई हो जाएगी । अँधेरा होने के बाद इनको संभालना कठिन हो जाएगा ।

मेरा बच्चा, हाय मेरा बच्चा ! मेरा बच्चा मर गया । मैं बच गया । मुझे मरना चाहिए था । मैं कायरों की भाँति छिप गया और मेरा बच्चा

गोलीबारी के बाद शवों का दिल दहलाने वाला दृश्य

गोली का निशाना बन गया । इसकी आयु मरने की नहीं थी, मेरा बच्चा, मेरा बच्चा ! अब मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? ... मेरा बाप ... मेरा भाई ... मर गए । मैं लुट गया । कितनी लाशें कुएँ में गिरी पड़ी हैं । लोग पेड़ों से नीचे उतर रहे हैं । छलाँगें लगा रहे हैं । पानी ... पानी । लोग पानी पिला रहे हैं । सेवा-संभाल कर रहे हैं । कोई-कोई तो पानी पीते ही मरता जा रहा है । ... हम उनमें से हैं जो मरते ही नहीं, जो बहुत बेशर्म हैं, जो प्रत्येक परिस्थिति में जीना चाहते हैं । यह भी कोई ज़िंदगी है । गुलामी की ज़िंदगी से मौत भली है । ... तुम्हारे कोट पर अभी भी फूल लगा हुआ है । फूल अभी भी ताजा है । यह मुरझाया ही नहीं । ऐसा अत्याचार देखकर भी फूल नहीं मुरझाया ? फूल तो नित्य अत्याचार सहता है, नित्य इसे डाली से तोड़ा जाता है । क्या यह कम अत्याचार है ? ... सरदार साहब, आपके पास तो रिवाल्वर था । इसका ही प्रयोग किया होता । परंतु नहीं, रिवाल्वर का यहाँ क्या काम था । रिवाल्वर से आप क्या कर लेते ? फिर आप रिवाल्वर घर छोड़कर आते । यहाँ किसे डराने के लिए रिवाल्वर लेकर आए थे ? इसका कोई लाभ नहीं, हानि ही हानि है । यह चल भी सकता है । स्वयं पर भी चल सकता है ।

मौत ... वाह ... मौत का क्या भरोसा ! ... वैसे भी तो रोज ही मृत्यु आती है । एक दिन अधिक गिनती में आ गई तो क्या हानि है । . . मुझे दवा पिला दो । दवा पीकर मैं ठीक हो जाऊँगा । मुझे कोई चोट नहीं आई, फिर भी मैं उठ नहीं सकता । मुझे दवा दे दो । मेरे लिए दवा ही काफी है । ... साइकिल ... मेरे पास साइकिल थी । मालूम नहीं कहाँ रखी है ? साइकिल मैं लाया अवश्य था । साइकिल नहीं तो न सही । मैं तो हूँ । ... तुम्हारे पास यह फूलों का हार कहाँ से आया ? यह तुम्हें किसने दिया ? किसके गले में डालना है ? डायर के गले में ? डाल दो । खुशी से डाल दो । वह आज का हीरो है । हीरो अपना काम दिखाकर चला गया है । ...”

मैंने संपूर्ण घटना अपने घर की छत से देखी है । बहुत भयानक दृश्य था । पलक झपकते ही यह घटना घटित हो गई । डायर तो चुपचाप

खड़ा देखता रहा। वह कुछ भी नहीं बोला। इशारे से ही उसने गोली चलाने का आदेश दिया। बेलदू बेलदू बेलदू... रजकू रजकू रजकू... अलिया चलिया मलिया रलिया... टांबू कांबू सांबू रांबू... घडिया बडिया तडिया रडिया... लाशों में से इस तरह की आवाज़ें आ रही हैं।

हमें मार दिया गया है। हमें अभी मरना नहीं था। पुलिसवाला घूम रहा है। वह देख रहा है। किसे घूर रहा है? मर चुके लोगों को? हा हा हा... हा हा हा... जनाब, हम मर चुके हैं। नहीं सुन रहा। घूर-घूर कर देख़ता ही जा रहा है। तू क्यों इस तरह घूर रहा है? तेरा हमने क्या बिगाड़ा है? और क्या चाहते हो? हम मर गए हैं तो बस मर गए हैं। मरकर फिर जीवित होंगे। समय आने पर फिर जीवित होंगे। फिर गोलियाँ खाएँगे। फिर मर जाएँगे। फिर जीवित होंगे। मरकर जीवित होना और जीवित होकर फिर मरना। यही जीवन है। यही जीवन-चक्र है। बड़ बड़ बड़ बड़ बड़। कड़ कड़ कड़ कड़। खड़ खड़ खड़ खड़। ये आवाज़ें। यह तेज हवा। क्या हो गया है? कुछ भी नहीं हुआ। मुर्दे उठ जाएंगे। मुर्दे जीवित हो जाएंगे। हम मुर्दा नहीं। हम मुर्दा कब हैं? मुर्दा कौन है? कोई भी हों, हमें क्या। रगड़ क्यों खाते हो भाइयों! थोड़ा पीछे हट जाओ। मुर्दा लोग परस्पर रगड़ खाते अच्छे नहीं लगते। हम मुर्दा हैं। परस्पर झगड़ते अच्छे नहीं लगते। झगड़ने के लिए कोई जीवित व्यक्ति ढूँढ़ो। मेरा ख़ून तुममें और तुम्हारा ख़ून मुझमें। ख़ून परस्पर मिलकर एक हो गए हैं। जीवन भर नहीं मिल सके। मरने के बाद मिल गए हैं। ख़ून एक हो गया है।

कैद थे। वहाँ हम गुलाम थे।... अब...हम सब मर चुके हैं। अब हम आज़ाद हैं। मरना कितनी अच्छी बात है! मरने का कोई सानी नहीं। मर जाओ, सभी मर जाओ। संसारवासियों, जीवित रहने का कोई लाभ नहीं। जीवित कौन हैं? लज्जाहीन, बेशर्म, अपमानित। हम जीवित नहीं हैं। हम मर चुके हैं। हमारा सिर ऊँचा है। यह मुर्दों का ढेर। तौबा-तौबा। गिनती नहीं की जा सकती। एक ढेर में बीस मुर्दे। कितना मांस है। इंसानों का मांस बिकता नहीं। यदि इंसानों का मांस बिक सकता तो

यहाँ कितने व्यापारी आ जाते। मांस-मांस-मांस-मांस। व्यापारियों को किससे पूछना था? सरकार से अधिकार ले लेना था। बोली लगाई जानी थी। मांस की कीमत आसमान पर पहुँच जानी थी। व्यापारियों की भीड़ लग जानी थी। व्यापारी और सरकार। सरकार सलामत रहे। व्यापारी जीवित रहें। मुर्दों की कोई कमी नहीं। व्यक्ति का मांस बिकता नहीं। बड़े खेद की बात है। सभी जानवरों का मांस बिकता है। आदमी का मांस नहीं बिकता। जैसे आदमी जानवर नहीं है। किसी को कोई समझ नहीं, किसी को कोई ज्ञान नहीं। आदमी का मांस बिक सकता है। इसका भी कोई मूल्य होना चाहिए। परंतु हम तो मुर्दा हैं। मुर्दा जानवरों का मांस भी नहीं बिकता है। पहले जानवर को मारा जाता है और फिर उसका मांस बिकता है। हमें भी तो मारा गया है। हम स्वयं तो नहीं मरे। हमारा मांस बिक सकता है। आओ व्यापारियों, आ जाओ, हमारा मांस बिकाऊ है। सरकारी अधिकारियों, आ जाओ, हम बिकाऊ हैं। मेरे मुर्दा भाइयों, आओ, फिर ग़म गलत करें। थोड़ी-सी पीएँ और फिर कोरस गाएँ। कोरस जानते हो? नहीं जानते। सामूहिक रूप से गाएँ — कोई मृत्यु गीत। कोई ऐसा मौत का गीत गाएँ कि फिर ज़िंदगी कभी हमारे समीप न आए। जाँचनाबू, जाँचनाबू, कड़ मड़ कड़ मड़ ठाबू ठाबू। जाँच खराई मलकण बग्गा, बण खकराटू चण मण लग्गा। 'गाओ यारों, मेरे पीछे पीछे।' यह तो समूहगान भी अस्थायी है। अब मैं तुम्हें इसकी धुन भी सुनाता हूँ: 'जाँचनाबू, जाँचनाबू, कड़ मड़ कड़ मड़ ठाबू ठाबू। जाँच खराई मलकण बग्गा, बण खकराटू चण मण लग्गा।' पसंद आई धुन? यह मौत का गीत है भाइयों, मौत का गीत। अभी-अभी मरा हूँ, परंतु मौत के गीत की धुन बनाना फिर भी जानता हूँ। सभी गाओ। हाँ हाँ, इसी तरह। बिल्कुल ठीक है। मज़ा आ गया। आरकैस्ट्रा लाओ। फिर और भी आनंद आएगा। खुलकर गाओ। जब जीवित थे तो कोई गाने ही नहीं देता था। सौ तरह की पाबंदियाँ थीं। अब रोकने वाला कोई नहीं। गाओ, मेरे बहादुरों, गाओ। डां डां डां डां...

जलियाँवाला बाग से बाहर गली में भी लोग भाग रहे हैं। भगदड़ मची हुई है। लोग एक-दूसरे से बहुत उत्सुकता से पूछ रहे हैं:

"कितनी गोलियाँ चली हैं ?"
"कितने व्यक्ति मरे हैं ?"
"कितने घायल हुए हैं ?"
"नेताओं में से भी कोई मरा है ?"
"दो हज़ार के लगभग तो मर गए होंगे ?"
"कुल कितने व्यक्ति थे ?"
"डायर भाग गया है ?"
"गोलियाँ किसने चलाई हैं ?"
"गोलियाँ हवाई जहाज़ में से चली हैं ?"
"डायर हवाई जहाज़ में चला गया है ?"
"लाशें कौन उठाएगा ?"
"बाग के अंदर जाने देते हैं ?"
"जीवित लोग भी हैं अंदर ?"
"मृतकों में हिंदू अधिक हैं या मुसलमान ?"
"मृतकों में बच्चे कितने हैं ?"
"गोली चलाने का आदेश किसने दिया ?"
"डिप्टी कमिश्नर नहीं आया ?"
"गोलियाँ कितने बजे चली थीं ?"
"गोलियाँ चलाने से पहले लोगों को बताया नहीं गया ?"
"लोग चुप होकर गोलियाँ खाते रहे ?"
"गोलियाँ चलाने वाले कैसे निकल गए ?"
"डायर कहाँ खड़ा होकर गोलियाँ चला रहा था ?"
"डायर बहुत बढ़िया निशानची है ?"
"कितने सैनिक गोलियाँ चला रहे थे ?"
"सभी अंग्रेज़ सैनिक थे ?"
"एक गोली से कितने लोग मरते हैं ?"

संपूर्ण दृश्य मैंने अपनी आँखों से देखा है, फिर भी मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं होता। मैंने भी देखा है ? मुझे कुछ विशेष याद

नहीं । झट ही तो यह सभी कुछ घटित हो गया । विश्वास ही नहीं होता और फिर मैं लोगों से इस तरह पूछ रहा हूँ जैसे गोलीबारी के समय मैं बाग में नहीं था, कहीं और था ।

एक बढ़ई प्रताप सिंह बताता है – "जब गोलीबारी शुरू हुई तो सैनिक ऊँचे फायर कर रहे थे । अफसर ने कहा – 'नीचा फायर करो ! तुम्हें यहाँ हवाई फायर करने को नहीं बुलाया, लोगों को मारने के लिए लाए हैं ।' इस आदेश के बाद नीचे फायर होने लगे । धड़ाधड़ लोग मरने लगे । लोग हर तरफ भाग रहे थे । भयानक दृश्य बन गया था । और मैं भी भागकर बाहर आ गया ।"

30 वर्षीय एक नवयुवक रामसरण सिंह अभी-अभी बाहर निकला है । वह कहता है – "मैं तो घबराकर दौड़ता हुआ बाहर का रास्ता ढूँढ़ रहा था । एक रिटायर्ड मिलिटरी के सरदार ने मुझे बताया कि मैं भागने के स्थान पर जमीन पर लेट जाऊँ । मैंने सरदार की बात मान ली और जिस तरह उसने बताया था, मैं लेट गया । और इस तरह मैं बच गया ।"

एक इत्र के व्यापारी का कर्मचारी प्रताप सिंह भी इसी तरह ही लेटा रहा और उसने अपने बेटे को भी अपने साथ लिटा लिया । गोलियाँ उनको छूकर गुजरती रहीं । वे दोनों चुपचाप लेटे रहे और अब उठकर बाहर आए हैं ।

शहर का एक व्यापारी गिरधारी लाल अपने पड़ोसी के घर से दूरबीन द्वारा जलियाँवाला बाग में देखता रहा । उसने गोरखों को बंदूकों सहित बाग के अंदर जाते देखा । फिर उसने उनको उस ऊँचे स्थान पर पोजिशन लेते हुए देखा, जिसके नीचे स्वर्ण मंदिर में पानी लेकर जाने वाली सुरंग है । गोरखों के पोजिशन लेते ही डायर ने फायर का आदेश दिया । इसके बाद क्या हुआ ? दूरबीन से उसने क्या-क्या देखा ? वह बताता तो अवश्य है परंतु वह विस्तार पूर्वक बताने में असमर्थ है । ऐसा डरावना दृश्य देखने के बाद अभी तक वह डरा हुआ है ।

कर्मचंद बताता है – "मैंने सिपाहियों को भीतर आते हुए देखा । वह एक पंक्ति बनाकर खड़े हो गए । लोगों को किसी प्रकार की चेतावनी

नहीं दी गई और फायरिंग शुरू हो गई । यह फायरिंग निरंतर 10 मिनट के लगभग होती रही । मिनटों में ही लाशों के ढेर लग गए ।"

31 वर्षीय दुकानदार अर्जुन सिंह भी मकान में से यह भयानक दृश्य देख रहा था । वह भी बताता है कि लोगों को सूचित किए बिना ही फायरिंग शुरू कर दी गई । पहले फायरिंग ऊपर की ओर की गई । फिर अफसर ने गोरखों को रिवाल्वर दिखाकर उनको गालियाँ देते हुए आदेश दिया कि वे नीची फायरिंग करें । बस, फिर क्या था, लोगों पर गोलियाँ बरसने लगीं ।

दीवारें फाँदते लोगों को पकड़कर भी मारा गया । यह लाला हरिसरन दलाल का बताया हुआ वृत्तांत है । वह जब दीवार पर चढ़ रहा था तो उसे पीछे की ओर खींचा गया । एक फौजी उसकी कमीज पकड़कर उसे पीछे खींच रहा था । उसकी कमीज फट गई और वह उसके हाथ न आया और दीवार पर चढ़ गया । एक गोली सर्-र्-र् करती हुई उसके सिर के करीब से गुजर गई । वह बच गया, खुशकिस्मती से ही बच गया ।

28 वर्षीय नौजवान राम गोपाल का कथन यह है – "शीघ्रता से कितनी ही लाशों को पैरों तले रौंदता हुआ मैं दीवार तक पहुँचा । दीवार फाँदते समय मेरी धोती खुलकर गिर गई । छलाँग लगाकर जब मैं गली में गिरा तो नंगा था । यह कपड़ा जो अब मैंने बाँधा हुआ है, मुझे एक शरीफ राहगीर ने दिया है । मेरे साथ एक अन्य सरदार ने भी छलाँग लगाई थी । वह बेचारा सिर के बल गिरा । उसका सिर फट गया । फिर भी उसने हिम्मत न हारी और शीघ्रता से भागकर घर की ओर चला गया । मालूम नहीं, वह घर तक पहुँचा या रास्ते में ही उसके प्राण पखेरू उड़ गए ।"

मुहम्मद शरीफ एक 24 वर्षीय नवयुवक छाबड़ी वाला है । जब वह दीवार पर चढ़ रहा था तो उसकी जाँघ में गोली लगी । उसके आगे एक मोटा सरदार दीवार पर चढ़ रहा था । मुहम्मद शरीफ ने उसे पकड़ लिया । सरदार ने भी पूरी शक्ति लगाकर मुहम्मद शरीफ को अपनी ओर खींचा । इस तरह वे दोनों दीवार पार कर गए । भगत राम बता रहा है कि वह

सरदार मुहम्मद शरीफ को उठाकर स्वर्ण मन्दिर की ओर ले गया है। शायद उसे बचा ले।

अरशद मियाँ ने बाग की पूर्वी दीवार के पास एक कुएँ में छलाँग लगा दी। उसके गिरने से पहले कुएँ में 15-20 लाशें पड़ी थीं। वह डर गया। बचाव का कोई अन्य रास्ता दिखाई न देने पर इन लोगों ने कुएँ में छलाँग लगाई थी। कुआँ गहरा होने के कारण सभी डूब गए थे। अरशद के देखते-देखते ही दो-तीन और व्यक्ति भी कुएँ में आ गिरे। "बचाओ बचाओ!" उनके मुँह से भी यही आवाज़ निकली। परंतु वहाँ बचाने वाला कौन था? अरशद के हाथ में एक मोटी खूँटी आ गई थी जो कुएँ की दीवार में गड़ी हुई थी। वह उसी खूँटी को पकड़े लटक रहा था। बचाओ बचाओ की आवाज़ें लगा रहे दो व्यक्ति भी डूब रहे थे। उनमें से एक तैरना जानता था परंतु इसका भी वहाँ कोई लाभ नहीं था। जब फायरिंग बंद हो गई तो अरशद और उसके साथियों की आवाज़ें किसी ने सुनी। एक सरदार ने अपनी पगड़ी कुएं में लटका दी जिससे अरशद और एक अन्य व्यक्ति कुएँ में से निकल पाए। अरशद बता रहा है कि किस प्रकार वह 15 मिनट तक खूँटी को पकड़कर कुएँ में लटका रहा। उसकी जीवित रहने की आशा समाप्त हो चुकी थी, फिर भी खूँटी से लटका हुआ बचने की कोशिश करता रहा।

अब्दुल अहद, शाल बनाने वाला, एक वृक्ष के पीछे छिप गया था। उसे देखकर अन्य लोग भी वृक्ष के पीछे छिप गए। यहाँ से अब्दुल अहद लोगों को गिरते हुए देखता रहा। थोड़ी देर बाद वृक्ष के पीछे छिपे हुए लोगों को सिपाहियों ने देख लिया। उन्होंने बंदूकों के मुँह उस तरफ मोड़ दिए। वृक्ष के पीछे छिपे हुए उन सभी व्यक्तियों को मार दिया गया। उनमें से केवल अब्दुल अहद ही बचा।

एक केमिकल फैक्टरी का स्वामी बोधराज समाधि के पीछे छिपकर सारा दृश्य देख रहा था। उसके अनुसार ऐसा ख़ूनी दृश्य न उसने पहले कभी देखा था, न सुना था। वह तब तक समाधि के पीछे छिपा रहा जब

तक डायर फायरिंग बंद करने का आदेश देकर बाग में से बाहर नहीं चला गया। एक दुकान का कर्मचारी नाथी एक सूखे वृक्ष के तने के पीछे छिपा रहा। प्रीतम सिंह भागता हुआ स्टेज के पास पहुँचा और वहाँ जाकर लेट गया। उसके सामने लाशों और घायलों का एक बहुत बड़ा ढेर था। इसी कारण गोली उस तक न पहुँच सकी और वह बच गया।

बंसी लाल कह रहा है – "मैंने एक बहुत अद्‌भुत बात देखी है। पुलिस कप्तान रीहिल और इंसपेक्टर जवाहर लाल फायरिंग का भयानक दृश्य देख नहीं सके, इसलिए वे बाग से बाहर चले गए। कोई भी नरम दिलवाला व्यक्ति यह दृश्य नहीं देख सकता था। बेचारे गोरखे अपने कर्तव्य से बंधे हुए गोलियाँ चला रहे थे, नहीं तो किस हिंदुस्तानी का हिंदुस्तानियों को मारने का मन करता है।"

लोग भागते हुए जलियाँवाला बाग की ओर आ रहे हैं। जैसे-जैसे शहर में खबर फैल रही है, अधिक से अधिक लोग इस ओर आने लगे हैं। लगभग प्रत्येक घर से एक व्यक्ति जलियाँवाला बाग में आया हुआ था। सभी लोग घबराए हुए मेरे पास से गुज़रते जा रहे हैं और मैं अपना रास्ता नाप रहा हूँ।

डायर मिलिटरी हेडक्वार्टर में पहुँच चुका है। उसके साथ रीहिल, पलोमर और ब्रिग्ज़ भी हैं। सभी को बाहर छोड़कर वह अकेला ही अपने कैंप में चला जाता है। कुर्सी पर बैठकर वह अपना सिर मेज़ पर रख लेता है। स्वयं से बातें करने लगता है–

कौन कहता है कि मैंने कोई गलत कदम उठाया है? मैंने सही काम किया है। इन जहरीले साँपों को कुचल देना ही ठीक था। इन्हें जीवित रखने का क्या लाभ? अवसर मिलते ही ये काटेंगे। काटना इनकी आदत है। ये साँप। हा हा हा। ये साँप। मैं इन्हें समाप्त कर दूँगा। ये मेरी ताकत को नहीं जानते। ये भी नहीं जानते कि मैं कौन हूँ। कैसे भाग रहे थे। कैसे अपनी जान बचाने का प्रयत्न कर रहे थे। मेरे सैनिक गोलियाँ चला

रहे थे और ये लाशों में बदलते जा रहे थे। बहुत ही लुभावना दृश्य था। क्या बढ़िया होता अगर मैं उस दृश्य को अपनी तस्वीरों में कैद कर लेता ! देखकर मन तो प्रसन्न हो जाता। अब कोई हिंदुस्तानी विद्रोह करने की हिम्मत नहीं करेगा। हिंदुस्तानी फौजियों ने हिंदुस्तानियों को मारा है। किसी अंग्रेज़ ने नहीं मारा। भाइयों ने भाइयों को मारा है। कोई जुर्म नहीं। इसमें कोई बुरी बात नहीं।

व्हिस्की का पैग। आनंद आ गया। इन विद्रोहियों को तो अनुमान ही नहीं था कि मैं इस तरह गोलियाँ चलाने का आदेश दूँगा। किसी ने यह सोचा ही नहीं था। परंतु मैंने... मैंने सोच लिया है। मेरे पास केवल यही विकल्प था। और मैं क्या करता ? इन लोगों ने मेरा आदेश नहीं माना। मैंने कोई भी आयोजन करने की मनाही की थी। ये नहीं माने। इन्हें सज़ा मिल गई। ऐसा ही होता है। आज्ञा का उल्लंघन करने वालों के साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाता है। मैंने सही काम किया है। मैं मालिक हूँ। मैं कुछ भी कर सकता हूँ। इस समय मैं शहर का मालिक हूँ। इस शहर का भाग्य इस समय मेरे हाथ में है। वह कीड़ा।... वह कानपुर वाला व्यापारी। वह कहाँ है ? वह भी यहीं कहीं होगा। इनमें ही मर-खप गया होगा। यदि नहीं मरा तो उसे मार दूँगा। मुझसे कौन बच सकता है। कहा भी था कि... नहीं, मैंने उससे कोई बात नहीं की थी। उसकी हस्ती ही क्या थी ? मैं प्रत्येक व्यक्ति के साथ थोड़े ही बात करता हूँ। वह एक साधारण व्यक्ति, एक हिंदुस्तानी व्यापारी का लड़का। वह क्या था ? वह कुछ भी नहीं था, केवल एक साँप था, साँप। उस साँप ने मुझे डसा था। मुझे जहर चढ़ गया था। मैं मरते-मरते बचा था। उसने मुझे... अपनी ओर से बेजान कर दिया था, परंतु मैं बच गया। मैं इतनी जल्दी मरने वाला नहीं था। वह साँप मर ही गया हो तो ठीक है। जीवित साँप खतरनाक हो सकता है। वह कानपुर में था। वह अमृतसर में भी हो सकता है। वह... मुझे उससे क्या ?

हैं ! अभी पौने छह ही बजे हैं ! सवा पाँच बजे मैंने गोली चलाने

का आदेश दिया था और पाँच बजकर पच्चीस मिनट पर फायरिंग बंद करने का । अभी मैं जलियाँवाला बाग में था और अभी यहाँ हूँ । मुझे तो याद ही नहीं कि मैं जलियाँवाला बाग भी गया था । मुझे तो यह अनुभव हो रहा है कि मैं बहुत देर से यहीं बैठा व्हिस्की पी रहा हूँ । केवल पौने छह बजे हैं । लोगों की भाग-दौड़ लगी होगी और मैं यहाँ पहुँच गया हूँ । अब मेरा वहाँ की किसी घटना से कोई संबंध नहीं । मुझे याद ही नहीं कि मैं वहाँ गया था । क्या मैं वहाँ गया था ? संभव है, नहीं गया था । चलो, जैसे लोग कहेंगे, मान लूँगा । लोगों ने अवश्य ही मुझे वहाँ देखा होगा । राजा को कौन नहीं देखता ? सभी देखते हैं । मैं राजा हूँ । अमृतसर शहर में इस समय मेरा राज्य है । मेरे राज्य में ही ऐसी रौनक हो सकती है । खूब चहल-पहल है । सभाएँ हो रही हैं । हर तरफ चहल-पहल है । इससे बढ़कर रौनक क्या हो सकती है ? मुझे कोई नहीं पूछ सकता कि मैंने गोली क्यों चलाई । मुझे कोई कुछ नहीं कह सकता । मैं राजा हूँ ।

मैं शीघ्रता से कार में बैठकर यहाँ पहुँच गया हूँ । यदि थोड़े समय के लिए रुक जाता तो शायद लोग मुझ पर हमला कर देते । वे लोग मेरे टुकड़े-टुकड़े कर देते । किसी ने नहीं की होती मेरी सहायता । मेरे साथ भी वही व्यवहार होना था जो थामसन या राबिंसन के साथ हुआ था । मैंने अच्छा किया जो शीघ्रता से यहाँ पहुँच गया । रास्ते में लोग मुझे घूर-घूर कर देख रहे थे । मैं ड्राइवर से कह रहा था कि वह कार तेज चलाए, और तेज चलाए । मुझे अनुभव हो रहा था जैसे सारा शहर मेरे पीछे पड़ गया हो । सभी मेरी कार का पीछा कर रहे हों । यदि कार कहीं रुक जाती तो मेरी ख़ैर नहीं थी । और इसी तरह घबराहट में मैं यहाँ पहुँच ही गया । पहुँच तो गया हूँ परंतु लोग यहाँ भी आ सकते हैं । आ सकते हैं तो आ जाएं । मैं व्हिस्की के दो-तीन पैग और पी लूँगा, फिर वो मेरा जो करना चाहें, कर लें । मैं जो करना चाहता था, कर चुका हूँ । अब वे भी कर लें ।

मैं सभी का सामना करने को तैयार हूँ। लोग यही कहेंगे कि मैंने कितने ही निर्दोष व्यक्तियों की हत्या कर दी है। क्या हुआ यदि वे मारे गए। मैंने उन्हें इसलिए मारा है ताकि शेष हिंदुस्तानियों को भी ज्ञान हो जाए। उन्हें मालूम हो जाए कि ऐसी सजा भी दी जा सकती है। बस, मेरा यही उद्देश्य था। मैं अपने उद्देश्य में सफल हो गया हूँ। मुझे कोई दुख नहीं है।

यह क्या हो रहा है? बैंड बज रहा है? मैंने तो बैंड बाजा बजाने का आदेश नहीं दिया था। मैंने तो किसी से नहीं कहा था कि बैंड बजाएं। बैंड पर यह कौन-सी धुन बज रही है? जीत की धुन? खुशी की धुन? हाँ, मैं जीत गया हूँ, बहुत बड़ी लड़ाई जीत गया हूँ। यह धुन और ऊँचे स्वर में बजाओ। बहुत जोशीली धुन है। ऐसी धुन हमने पहले भी बजाई है, सरहद पर। अफगानिस्तान में। यह मेरी प्रिय धुन है। यह जीत की धुन है। हमने विजय प्राप्त की है। कैसी विजय? किस पर विजय? विद्रोहियों को दबाया है। विद्रोहियों की मुण्डियाँ काट दी हैं। अब कभी विद्रोह नहीं होगा। सभी विद्रोही मारे गए हैं। खुशी की धुन बज रही है। इस धुन को और ऊँची कर दो। डां डां डां डां डां... हाँ, यह ठीक है। मुझे बैंड बजाना आता है। हर तरह की मार्चिंग धुन मैं स्वयं बजा सकता हूँ। ड्रम वाले, सही तरीके से बजा। हाँ, रिदम तेज़ कर दो। मैं ऐसा रिदम चाहता हूँ जिस पर नाच सकूँ। नाच, हाँ नाच। हैरान क्यों हो रहे हो? तुम्हारी हैरानी सही है। तुम यही कहना चाहते हो न? यही कि मार्चिंग धुन पर नाचा कैसे जा सकता है। हो सकता है, अवश्य हो सकता है। यदि मार्चिंग धुन पर मार्च हो सकता है, यदि इस रिदम पर एक ही समय मिलकर कदम उठाए जा सकते हैं, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस धुन पर नाचा भी जा सकता है।

तुम मुझे नहीं पहचानते। तुम तो कुछ भी नहीं, मैं तो एक मिनट में हजारों व्यक्तियों को शूट कर सकता हूँ। तुम तो केवल 25-30 हो। बंद करो यह धुन। बंद क्यों नहीं करते? तुम मेरा आदेश भी नहीं मान रहे?

बंद करो, मैं कहता हूँ, बंद करो। यह धुन बंद करो।... देखा, मेरी गर्जना सुनकर अब हँस रहे हैं। घबराहट में अपना-अपना साज भी नहीं संभाल सके। गधे कहीं के ! कुत्ते की दुम। मुझे नहीं जानते। मेरी सिगरेट। कहाँ गई ? ओ हो... शायद मैंने मेज़ पर रखा था। मेज़ पर... हाँ हाँ, अभी तक सुलग रही है। मेरी सिगरेट बहुत बढ़िया कंपनी की है। यह इतनी जल्दी समाप्त नहीं होती। कौन है ? हैं ! यह जुलूस ! किसका जुलूस है ? मुर्दों का जुलूस। कौन-से मुर्दे ? जुलूस को यहाँ क्या काम ? मुर्दे मेरे कैंप में तो नहीं जलाए जाते। इन्हें किसी श्मशान घाट में ले जाओ। किसी कब्रिस्तान में ले जाओ। मेरा कैंप। यह मेरा कैंप है। यह मिलिटरी का हेडक्वार्टर है। तुम्हें किसने कह दिया कि यह श्मशान घाट है।

ऐनी, तुम कहाँ हो ? तू ही आज मेरे पास होती ! परंतु तुम्हारा यहाँ क्या काम था ? तू वहीं ठीक है। मैं इस शहर का राजा बन गया हूँ और तुम इस शहर में नहीं हो। शहर मेरा है। यदि तुम आज यहाँ उपस्थित होती तो मेरी रानी होती। सबसे अधिक प्रसन्नता तुम्हें ही होनी थी। ये लोग कोई उत्सव नहीं मना रहे। कौन ? ऐनी तुम, तुम आ गई ? तुम्हें किसने बताया कि मैं... अनुमान लगाकर ही आ गई हो ? तुम्हें तो मालूम ही है कि मैंने किसी मैदान में भी हार का मुँह नहीं देखा। तुम्हारे लिए तो मेरी जीत अवश्यम्भावी थी। अच्छा हुआ जो तुम आ गई। परंतु तुम्हारे चेहरे पर उदासी क्यों है ? उस पर खुशी क्यों नहीं ?

ये आवाज़ें ? यह शोर ? यह क्या हो रहा है ? यह 'डायर मुर्दाबाद' के नारे कौन लगा रहा है ? डायर मुर्दाबाद ! क्यों ? कौन लगा रहा है नारे ? हिंदुस्तानी ही होंगे ? और कौन हो सकता है। ये क्या कह रहे हैं ? 'हम डायर का कत्ल कर देंगे, उसे कच्चा चबा जाएंगे।' कौन मारेगा डायर को ? कौन कच्चा चबाएगा डायर को ? डायर पिटना नहीं जानता, केवल पीटना ही जानता है। डायर का मुकाबला। हा हा। ये नारे। ये आवाज़ें। कौन है ? शोर मचा रहा है ? मुझे शोर सुनने की आदत नहीं। कोई है,

तो जाकर इनको चुप करवाओ। यदि ये चुप नहीं होते तो इनको गोली से उड़ा दो।

ये काले झंडे ! शेम ! शेम ! यह मैं क्या देख रहा हूँ ? ये झंडे वाले, ये शेम शेम कहने वाले। ये कौन हैं ? सभी हिंदुस्तानी तो प्रतीत नहीं होते। इनमें अंग्रेज़ भी हैं। इनमें अन्य देशों के लोग भी हैं। ये सभी क्यों शेम शेम कह रहे हैं ? इनका मैंने क्या बिगाड़ा है ? इसका अर्थ है कि हिंदुस्तानियों की तरह अंग्रेज़ भी मूर्ख हैं। अन्य देशों के वासी भी मूर्ख हैं। इनको डायर की दूरदर्शिता पर आशंका है। जनरल डायर को ये अच्छी तरह पहचान नहीं सके। मैं... मैं इन मूर्खों को कभी माफ नहीं कर सकता। बेवकूफ, गधे, मूर्ख। काले झंडे। काले झंडे। शेम शेम। भागो यहाँ से। ऐसे जुलूस मैंने बहुत देखे हैं। ऐसे प्रदर्शन मैंने बहुत देखे हैं। भाग जाओ यहाँ से।

अपने कैंप में डायर स्वयं से बातें कर रहा है और बाहर पलोमर, रीहिल और ब्रिग्ज़ उसकी आवाज़ सुन रहे हैं। वे परस्पर इस तरह की बातें कर रहे हैं —

डायर को क्या हो गया है ? जबसे हेडक्वार्टर पहुँचा है, कुछ न कुछ बोलता ही जा रहा है।... कोई विशेष बात नहीं, जलियाँवाला बाग जाने से पहले भी उसकी यही दशा थी। रास्ते में भी यही दशा थी। ऐसे कामों में दिमाग पर काफी बोझ पड़ता है।... अंदर तो व्हिस्की की बोतल खुली हुई है। मेरे विचार में, जनरल साहब अपना मूड ठीक कर रहे हैं।... संभव है, मूड ही ठीक कर रहे हों। परंतु मेरा विचार है कि वह व्हिस्की पीकर अपने मन का डर दूर कर रहे हैं।... छोड़ो जी, डायर डरने वाला नहीं। यह उसके लिए कोई पहला अवसर तो नहीं। ऐसे अनेक काम वह कर चुका है। वह आत्मविश्वास से भरा पड़ा है। वैसे भी वह इतनी जल्दी घबराता नहीं।

पलोमर, रीहिल और ब्रिग्ज़ बातें कर रहे हैं। डायर अंदर बड़बड़ा

रहा है। साथ-साथ व्हिस्की भी पी रहा है। माइल्ज़ इरविंग आता है। वह भी इनमें ही खड़ा होता है। पीछे-पीछे कर्नल स्मिथ और लैविस भी आ जाते हैं। डायर के कैंप में जाने की किसी की भी हिम्मत नहीं। इरविंग पूछ रहा है — "डायर को क्या हुआ है ? यह आवाज़ डायर की ही है ?" कोई उत्तर नहीं देता। डायर की आवाज़ आ रही है — मैं सभी को बर्बाद कर दूँगा, सारे शहर को आग लगा दूँगा। भीतर से व्हिस्की की सुगंध आ रही है।

डायर कर्नल स्मिथ को देखकर हँसता है। व्हिस्की का पैग एक ही घूँट में पी जाता है। फिर अपनी बात शुरू करता है —

"तुम अब आए हो ? मैंने तुम्हें कई बार आवाज़ दी। यह कोई ढंग है। मैं आवाज़ लगाऊँ और कोई उत्तर न दे। तुम कौन हो ? उत्तर देने की आवश्यकता नहीं, मैंने पहचान लिया है। मैं सभी को पहचानता हूँ। तुम कर्नल स्मिथ हो, सिविल सर्जन। ठीक है न ? मैंने तुम्हें पहचान लिया है। परंतु उस समय तुम कहाँ थे जिस समय वो कमीने बैंड वाले उदासी भरी धुन बजाने लगे थे ? और वे मुर्दे ? वे काले झंडे वाले ? उन्हें भीतर किसने आने दिया ? मैं यह व्हिस्की पी रहा हूँ और लोग मुझे तंग कर रहे हैं। अब तुम आ गए हो। फिर भी, तुम तो मेरे अपने हो। अपने सिविल सर्जन। तुम अंग्रेज़ ही हो न ? ठीक है।"

कर्नल स्मिथ कोई बात करने की कोशिश करता है परंतु डायर अपनी ही हाँकता जा रहा है। दोनों में इस तरह बातें हो रही हैं —

मुझे एक गुप्त बात करनी थी। वैसे तो मैं ठीक हूँ। शायद व्हिस्की मुझे कुछ नहीं करती। इसे मैं रोज पीता हूँ। परंतु आज मुझे यह बहुत अच्छी नहीं लग रही। डाक्टर, तुम भी पीकर देखो। तुम्हें भी शायद अच्छी न लगे।...

जनरल साहब, मैं... पी लो, पी लो। यह व्हिस्की बहुत बढ़िया है। लंडन से मँगवाई है। लंडन की व्हिस्की। कर्नल, तुम पहले कहाँ थे ? अब से थोड़ी देर पहले मैं कहाँ था ? मैं तो कहीं भी नहीं गया। मैं यहीं

था । तुम जलियाँवाला बाग गए थे ? ... नहीं, मैं वहाँ नहीं गया । आश्चर्य की बात है । वहाँ मैं भी नहीं गया । मैं तो यहीं था । मैं तो किले में भी नहीं गया । पिछले दो घंटे से मैं यहाँ व्हिस्की पी रहा हूँ । सभी झूठ बोलते हैं कि मैं जलियाँवाला बाग गया था । जलियाँवाला बाग कहाँ है ? वहाँ कौन है ? वहाँ तो लाशें हैं ? मुझे कुछ मालूम नहीं । मैंने तो केवल नक्शे में ही जलियाँवाला बाग देखा है । वहाँ जाकर नहीं देखा । कैसा है वह बाग ? बहुत बड़ा ? छोटा-सा ? फूलों से भरा हुआ ? आओ, हम दोनों वहाँ चलें । चलोगे मेरे साथ ?... हाँ, मैं जाने को तैयार हूँ, परंतु वहाँ तो अब लाशों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं । लाशें कहाँ से आईं ? वहाँ क्या हुआ है ? तुम डाक्टर हो । तुम तो जानते हो कि लाशें आसमान से नहीं गिरतीं । फिर वहाँ पर लाशें कहाँ से आईं ? तुमने देखी है लाशें ? मुझे विश्वास है, नहीं देखी होगी । तुम्हें किसी ने झूठ कह दिया है । वहाँ कोई लाश नहीं है । वहाँ तो कुछ भी नहीं हुआ । यदि कुछ हुआ भी है तो मैंने नहीं किया ।... मैं जलियाँवाला बाग गया था परंतु तुम किसी से कहना मत । मैं वहाँ गया था और मैंने वहाँ गोलियाँ भी चलाई थीं । गोलियाँ लगने से लोग मरे भी हैं । कोई चिंता की बात नहीं है । लोग मरे हैं । उन्हें तो मरना ही था । यह बात किसी से कहना मत । किसी को खबर ही नहीं हुई कि मैं जलियाँवाला बाग में गया था । तुम्हें मालूम था ? शायद नहीं मालूम होगा । एक और अच्छी बात हुई है । सभी लोग हिंदुस्तानी सैनिकों के हाथों मरे हैं, मैंने तो किसी को नहीं मारा । मैं... माइल्ज़ इरविंग भी भीतर आ जाता है । डायर अपनी बात कहता जा रहा है — "मैंने इसे भी पहचान लिया है । इसे भी व्हिस्की दो । कोई और बाहर है ? जो भी है, भीतर आ जाओ । मेरा मित्र ब्रिग्ज़ कहाँ है ? उसे भी भीतर बुलाओ । और रीहिल और पलोमर को भी । ये सभी कहाँ हैं ? इनको शीघ्र बुलाओ । एक पार्टी ही हो जाए । व्हिस्की की पार्टी । और व्हिस्की मँगाओ ।"

ब्रिग्ज़, पलोमर और रीहिल भी भीतर आ जाते हैं । उनके पीछे-पीछे

लैविस भी आ जाता है । डायर सभी की ओर देखकर अपनी बात फिर शुरू कर देता है — "व्हिस्की पीओ, फिर तुम्हारे साथ बात करूँगा । उत्सव मनाओ, नाचो, गाओ । पर धीरे-धीरे । किसी को खबर न हो । तुम सभी कहाँ से आ रहे हो ? अपने-अपने घर से । है न ? ठीक है ? चलो, व्हिस्की पीओ, फिर तुम बताना कि तुम कहाँ से आ रहे हो । तुम नाचना-गाना आरंभ क्यों नहीं करते ? तुममें से किसी को भी गाना नहीं आता ? मैं गाना जानता हूँ । मुझे नाचना भी आता है ।"

डायर अपनी कुर्सी से उठ जाता है । गाना गाता हुआ नाचने लगता है । अन्य सभी उसके साथ नाचने लगते हैं ।

"बस करो, अब नाच बंद कर दो । अब मैं एक भाषण दूँगा ।" डायर मेज पर खड़ा हो जाता है । "अब मैं भाषण दूँगा, जोशीला भाषण । इस भाषण में बहुत गहरी बातें होंगी । मेरे बाद तुम भी छोटे-छोटे भाषण देना । व्हिस्की भी पीओ और भाषण भी करो । पहले मैं भाषण दूँगा ।"

तीन अन्य मिलिटरी अफसर भी महफिल में आ रहे हैं । लैविस उनके हाथ में भी गिलास पकड़ा देता है । महफिल और भी रंगीन हो जाती है ।

डायर बोल रहा है — "हाँ, मैं भाषण करने लगा हूँ । यह एक ऐसा भाषण होगा जो झट ही समाप्त हो जाएगा । हम अभी नाच-गा रहे थे । यह सभी कुछ अपनी प्रसन्नता के लिए कर रहे हैं । आज बहुत खुशी का दिन है । खुशी मनाने का समय है । यह दिन, यह समय हमें हमेशा याद रहेगा । मेरे मित्रो, मैंने कुछ भी नहीं किया, आपकी ही कृपा है । यदि आप लोग मेरी मदद न करते तो क्या हो सकता था । मुझे पहचानते हो ? मैं डायर हूँ । डायर सदा विजेता रहा है । डायर कभी नहीं हारा । व्हिस्की और जीत की कमी कभी नहीं रही डायर को । वह कैलेंडर देखते हो ? उसमें 13 अप्रैल की तारीख देखो । उस पर लाल रंग का चिह्न । यह तारीख सदा याद रहेगी । इस कैलेंडर को आज मैंने बहुत ध्यान से देखा है । 13 अप्रैल का दिन । बहुत बढ़िया दिन है । लाल रंग का दिन ।

रक्तरंजित दिन । बहुत अच्छा लगा । क्या सुंदर दृश्य था ! परंतु मित्रो, मेरी मशीनगनें बाग के भीतर नहीं जा सकतीं । इस बात का मुझे दुख है । तुम्हें भी अवश्य दुख होगा । यह व्हिस्की और भी नशा देती यदि मशीनगनें बाग के भीतर पहुँच गई होतीं । चलो, कोई बात नहीं । इतना ही बहुत है। गिलासों को टकराओ और कहो — डाँ-डाँ-डाँ, डम-डम-डम-डम । डाँ-डाँ-डाँ-डम-डम-डम... ।

"अब तुम सभी भाषण करो । यदि भाषण नहीं देने तो जीत की बातें करो ।" डायर सभी को संबोधित करता है — "मैंने अपना भाषण समाप्त कर लिया है ।"

सभी की बातों की मिली-जुली आवाज़ आने लगती है ।

डायर जिंदाबाद । व्हिस्की जिंदाबाद । बातें हो गईं । अब फिर नाच करें । नाचने लगते हैं । गाने की धुन । किसे याद है ? मुझे याद है । डाँ-डाँ-डाँ, डम-डम-डम-डम, डाँ-डाँ-डाँ-डाँ, डम-डम-डम-डम ।

फिर नाचने लगते हैं । हो-हल्ला करते हैं । जाम छलकाते हैं । कभी डायर कूदकर मेज पर चढ़ जाता है, फिर कभी नीचे छलाँग लगा देता है । कभी सभी मिलकर उसे उठा लेते हैं । बार-बार नारे लगाते हैं — "जनरल डायर — जिंदाबाद !"

व्हिस्की का दौर चलता रहता है । गाने की आवाज आ रही है । अभी तक नाच रहे हैं — डाँ-डाँ-डाँ-डाँ, डम-डम-डम-डम, डाँ-डाँ-डाँ-डाँ, डम-डम-डम-डम ।

जाम छलक रहे हैं । डायर के हाथ से गिलास छूट जाता है । वह मेज़ पर लेट जाता है । सभी परस्पर गले मिल रहे हैं । उन्होंने अपने-अपने गिलास फर्श पर लुढ़का दिए हैं । छह बज चुके हैं । सभी लोग नीचे दरी पर ही लेट गए हैं । सभी के होश गुम हैं । कोई नहीं जानता कि शहर में क्या हो रहा है । किसी को कुछ याद नहीं कि शहर में क्या हो चुका है । सभी नशे में चूर हैं ।

और मैं ... मैं अभी तक हाल बाज़ार तक ही पहुँचा हूँ । अभी भी

लोग जलियाँवाला बाग की ओर भागे जा रहे हैं । छह बज चुके हैं । मेरा अनुमान है कि डायर अपने कैंप में पहुँच चुका होगा । वह अपनी जीत पर बहुत प्रसन्न होगा । उसकी यह बहुत भारी विजय है । परंतु वास्तव में अंग्रेज़ों की यह हार है, बहुत बड़ी हार ।

मैं अपने मार्ग पर चलता जा रहा हूँ । कुछ ही पलों में मैं डायर तक पहुँच जाऊँगा । मैं डायर से अलग कैसे रह सकता हूँ ।

अभी केवल छह बजे हैं और मैं हाल बाज़ार में से जा रहा हूँ । डायर अपने हेडक्वार्टर पहुँच चुका है और कुत्ते अभी भी भौंक रहे हैं ।

सूरज डूब चुका है । ऐसा प्रतीत होता है कि कल भी सूरज नहीं चढ़ेगा । कभी भी सूरज नहीं चढ़ेगा ।